श्रीपार्श्वपुराणभाषाछंदबद्ध

कविवर भूधरदासजी आगरा नगर
निवासी रचित.

जिसको

धर्मस्नेही मुन्शी अमनसिंह जैनी सुनपतनगर निवासी
अपील नवीस दिल्ली ने धर्म अभिलाषी पुरुषों के
हितार्थ टिप्पन औ शब्दार्थ कोषसे संशोभित
कर अति शुद्धता से
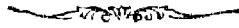
लखनऊ

जैनप्रेस में श्रीमान् लाला कन्हैयालाल
भगवानदास जैन के प्रबंध से मुद्रित
कराके प्रकाशित किया

संवत् १९५४—सन् १८९८

प्रथमवार १०००   मूल्य १।)

॥ ॐ ॥

* श्रीपार्श्वपुराणभाषाछंदबद्ध *

कविवर भूधरदासजी आगरा नगर
निवासी रचित.

जिसको

धर्मस्नेही मुन्शी अमनसिंह जैनी सुनपतनगर निवासी
अहिल नवीस दिल्ली ने धर्म अभिलाषी पुरुषों के
हितार्थ ब्याकरण औ शब्दार्थ कोषसे संशोधित कर
अति शुद्धता से

लखनऊ

जैनप्रेस में श्रीमान् लाला कन्हैयालाल
भगवानदास जैन के प्रबंध से मुद्रित
कराके प्रकाशित किया

संवत् १९५४—सन १८९८

प्रथमवार १०००   मूल्य १।)

अनुक्रम भूमिका आदि खरीज ग्रंथ आदि लिखतकी अनुक्रमः॥

श्रीपार्श्वपुराणभाषाछंदवद्धअनुक्रमः

भजन राग सोरठ

अंतरउज्जल करनारे 'भइ' अंतर उज्जलकरनारे । आचली कपट कृपाणतजै नहीं तबलों, करनी काज न सरनारे ॥१॥ अंतर उज्जल करनारे । जपतप तीरथ यज्ञ व्रतादिक, आगम अरथ उचरनारे । विषय कषाय कीच नहिं धोई, योंही पचपच मरनारे ॥ २ ॥ अंतर उज्जल करनारे । बाहर भेष क्रियाउर शुचिसों, कीये पार उतरनारे । नाहीं है सबलोक रंजना, ऐसे बेदन बरनारे ॥ ३ ॥ अंतर उज्जल करनारे । कामादिक मलसोंमन मैला, भजनकिये क्या तरनारे । भूधर नील बसनपर कैसे केसररंग उछरनारे ॥ ४ ॥ अंतर उज्जल करनारे ॥

* भूमिका *

॥ २८ मात्रा हरिगीत छंद ॥

शुभ देशकाशी नगर वाना, रस त्रिपे जिनरवि उगे ।
पितु अश्वसेनरु मात वामा, देवि उर पंकज जगे ॥
धरयोग लघु वयमांहि सह, उपसर्ग शम्बर मदहरो ।
पुनिवरी शिवमो पार्श्वप्रभु मम, बुद्धि को निर्मल करो ॥ १ ॥

विद्वज्जन चरणाम्बुज रज अमनसिंह विष्णुसिंह आत्मज अग्रवाल गोयल गोत्र जिनमत दिगम्बर आम्नाय धारक सोनपत नगर निवासी हाल अग्नि नवीन दिल्ली इंद्रप्रस्थ काश्मीरी दरवाजा धर्म अनुरागी पुरुषों की सभा में सविनय निवेदन करता है कि जब मेरी अवस्था अनुमान चालीस वर्ष की हुई तब मुझको सकल गुण निधान पण्डित मेहरचन्ददासजी लघुभ्राता पंडित मथुरादासजी

१—यह एक छोटासा नगर अनुमान तेरह हजार मनुष्यों की बसासत का दिल्ली नगर से अढ़ाईस मील वायव्य कोन में बसता है जो अढ़ाईसौ घर अग्रवाल जैनियों और तीन जिनमंदिर शिखर बंद एक चैत्यालयमें शोभायमानहै।

२—पंडित मेहरचन्द दासजी लाला गंगादास जी अग्रवाल के लघुपुत्र संस्कृत हिंदी भाषा के सिवाय फारसी भाषा के भी भलीभांति ज्ञाताहैं श्री सज्जन चित्त-वल्लभ काव्य मुनि मल्लिसेन जैन आचार्य रचित की अन्वय पदच्छेद सहित संस्कृत और हिंदी भाषा टीका लिखकर प्रति संस्कृत श्लोक हिंदी मत्तगयन्द नाम अति ललित छंद बनाये-गुलिस्तां-पंदनामा फारसी पुस्तक विद्वान नीतिज्ञ शेख सादी शीराजी रचित जो नीतमार्ग में बड़ी प्रशंसनीय प्रसिद्ध पुस्तक हैं हिंदी भाषा में पुष्पावन-शिक्षापत्री नामकर बड़ा उत्तम अनुवाद (तर्जमा) किया जो देखने योग्य है पंडित मथुरादासजी आपके बड़े भ्राता जैन पंडितों में खंडन मंडन विषय बड़े विख्यात वाद विजई पंडित थे कार्तिक मास सम्वत उन्नीस सौ चवालीस विक्रमि में स्वर्ग वासी हुये ॥

❀ भजन राग सोरठ ❀

अंतरउज्जल करनारे 'भइ' अंतर उज्जलकरनारे । आचली कपट कृपाणतजै नहीं तबलों, करनी काज न सरनारे ॥१॥ अंतर उज्जल करनारे । जपतप तीरथ यज्ञ व्रतादिक, आगम अरथ उचरनारे । विषय कषाय कीच नहिं धोई, योंहीं पचपच मरनारे ॥ २ ॥ अंतर उज्जल करनारे । बाहर भेष क्रियाउर शुचिसों, कीये पार उतरनारे । नाहीं है सबलोक रंजना, ऐसे बेदन बरनारे ॥ ३ ॥ अंतर उज्जल करनारे । कामादिक मलसोंमन मैला, भजनकिये क्या तरनारे । भूधर नील बसनपर कैसे केसररंग उघरनारे ॥ ४ ॥ अंतर उज्जल करनारे ॥

* भूमिका *

॥ २८ मात्रा हरिगीत छंद ॥

शुभ देशकाशी नगर बाना, रस विषै जिनरवि उगे ।
पितु अश्वसेनरु मात बामा, देवि उर पंकज जगे ॥
धरयोग लघु बयमांहि सह, उपसर्ग शम्बर मदहरो ।
पुनिबरी शिवसों पार्श्वप्रभु मम, बुद्धि को निर्मल करो ॥ १ ॥

विद्वज्जन चरणाम्बुज रज अमनसिंह बिष्णुसिंह आतमज अग्रवाल गोयल गोत्र जिनमत दिगम्बर आम्नाय धारक सुनपत नगर निवाशी हाल अपील नवीस दिल्ली इंद्रप्रस्थ कश्मीरी दरवाजा धर्म अनुरागी पुरुषों की सेवा में सविनय निवेदन करता है कि जब मेरी अवस्था अनुमान चौंतीस वर्ष की हुई तब मुझको सकल गुण निवास पंडित मेहरचन्ददासजी लघुभ्राता पंडित मथुरादासजी

१—यह एक छोटासा नगर अनुमान तेरहहजार मनुष्यों की बसासत का दिल्ली नगर से अढ़ाईस मील बायव्य कोन में बसता है जो अढ़ाईसौ घर अग्रवाल जैनियों और तीन जैनमंदिर शिखर बंद ऐक चैत्यालयसे शोभायमानहै॥

२—पंडित मेहरचन्द दासजी लाला गंगादास जी अग्रवाल के लघुपुत्र संस्कृत हिंदी भाषा के सिवाय फारसी भाषा के भी भलीभांति ज्ञाताहैं श्री सज्जन चित्तवल्लभ काव्य मुनि मल्लिसेन जैन आचार्य रचित की अन्वय पदच्छेद सहित संस्कृत और हिंदी भाषा टीका लिखकर प्रति संस्कृत श्लोक हिंदी मत्तगयन्द नाम अति ललित छंद बनाये-गुलिस्तां-पंदनामा फारसी पुस्तक विद्वान नीतिज्ञ शेख सादी शीराजी रचित जो नीतमार्ग में बड़ी प्रशंसनीय प्रसिद्ध पुस्तक हैं हिंदी भाषा में पुष्पोवन-शिक्षापत्री नामकर बड़ा उत्तम अनुवाद (तर्जमा) किया जो देखने योग्य हैं पंडित मथुरादासजी आपके बड़े भ्राता जैन पंडितों में खंडन मंडन विषय बड़े विख्यात वाद विजई पंडित थे कार्तिक मास सम्बत उन्नीस सौ चवालीस विक्रमि में स्वर्ग वाशी हुये ॥

सुनपत नगर शोभित की प्रेरणा से भाषा जैन शास्त्रौं के अवलोकन का मन में उत्साह बढ़ा सो मैंने भाषा छंद बंध भूधर जैन शतक कविवर भूधरदासजी रचितको जो अति निर्ग्रन्थ ललित पद्यौं के समुदाय औ बहु निर्मल उपदेशक अभिप्राय से नाना प्रकार के मन हरण छन्दों में रचा हुआ एक अनूठा विचित्र कुसुमाकर है विचार कर शब्दार्थ सरलार्थ अर्थ प्रकाशनी नामा टीका से संशोभित कर प्रकाशित किया और तत्काल अति दृढ़ता के साथ यह विचार निश्चल करा कि श्री पार्श्वपुराण भाषा छंदबंध कविवर भूधरदास जी रचित को जो प्रायः मूर्ख लेखकौं की अज्ञानता कारण शब्दौं और छंद मात्राओं से बहुत कुछ अशुद्ध होरहा था शुद्ध करूं सो अपने विचार पूर्वक बड़े परिश्रम से कई एक प्रति प्राचीन पुस्तक भाषा पार्श्वपुराण और अनेक संस्कृत हिंदी भाषा शब्दार्थ कोष पिंगल शास्त्र संचय कर बुद्धिवानों की सहायता ले धीर्यता सहित अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार सम्वत उन्नीस सौ चव्वन विक्रमी में ग्रन्थ संशोधन कर एक ऐसा विचित्र यंत्र बनाकर लगाया जिससे सर्व छंद ग्रन्थ प्रति अधिकार की नामौं सहित गणिता प्रघट हो पुनि अनुक्रम से छंद प्रति पिंगल शास्त्र अनुसार लक्षण लिख दिया जिससे पाठकगण छंद लक्षण जानकर छंद चाल भलीभांति उच्चारण करने लगैं और एक शब्दार्थ कोष (१४०८) शब्द संस्कृत हिंदी भाषा ग्रन्थ सम्बंधिका ग्रन्थ के अन्त में लिखागया जिसका लाभ भी पाठक गणों को जैसा कुछ है प्रत्यक्ष है और एक ऐसी अनुक्रमणिका ग्रन्थ के आदि में लिखकर लगाई गई है जिससे जो विषय ग्रन्थका देखना चाहो छंद संख्या सहित तुरत मिलजावे पुनि एक यंत्र ऐसा बनाया गया है कि जो शब्द वाक्य इस पुस्तक विषय मैंने लिखा है और किसी पुस्तक में उसी शब्द वाक्य के स्थानपर दूसरी प्रकार दृष्टिगोचर हुवाहै उसको भी पाठक पुरुष देखकर भले बुरेका विचारकरलें अब समयपाकर यह कहनाभी अवश्यहै कि कविवर भूधरदासजी

१—कविवर भूधर दासजी खंडेलवाल मुहम्मदशाह बादशाह के बारे संवत् सत्रैहसौ (१७८०) अस्सी विक्रमी में आगरे नगर संशोभित थे जैनकविमंडली में आप बड़े विख्यात थे निम्न लिखे हिंदी भाषा पुस्तक आपके रचे हुए प्रसिद्ध हैं। श्रीपार्श्वनाथ पुराणछंदबंध१ चरचासमाधान बचनका२ पुरुषार्थसिद्ध्युपाय बचनका३ भूधर-

ने यह हिंदी भाषा पार्श्वपुराण किसी विशेष पार्श्व पुराण प्राकृत संस्कृत भाषा का अनुवाद नहीं करा है वरन किसी ग्रन्थ से कथाका मूल आशय लेकर अपनी बुद्धि अनुसार ग्रन्थ के हरएक स्थलको ऐसा विस्तार पूर्वक वर्णन करा जिस की प्रशंसा में द्विजिव्हा लेखनी असमर्थ है इस विद्वान पुरुषके सघन योग्य सुन्दर ललित पदो में शिक्षित वचन ऐसे मनमोहन हैं जिनको श्रवण करने से ऐसा कौन कठोर चित्त मनुष्य होगा जिसके हृदय पर उसका विचित्र चित्राम चित्रित न होगा नरक दुःख कथा जोगीरासा बारह भावना बाईस परीषह सप्त

विलास छंदबध ४ इस विलास में भूधर जैनशतक १ प्रस्तावीक शतक २ भूपाल चतुर्विंशतिकास्तोत्र ३ एकीभाव स्तोत्र ४ भजन विनती स्तुति कई प्रकार की छोटी कथा आदि खरीज ५ ॥

२—हिंदी भाषा में पुस्तकों की रचना अनुमान बारहसै वर्ष से पाई जाती है अवंतीपुरके प्राचीन इतिहास राजिस्तान पुस्तक लिखत में ऐसा लिखा मिला है कि संवत् सातसौ सत्तर में पुष्य नाम कवि ने संस्कृत अलंकार को हिंदी भाषा दोहों में वर्णन करा मानो उसी समयसे इस प्रफुल्लित वृक्ष की जड़ जमी शनैः शनैः संवत् सोलहसै में यह वृक्ष भली प्रकार फूला फला हिंदी भाषा ने यथावत बहुत कुछ उन्नति करी काव्य साहित नायका भेद पिंगल वैदक गणित गायन आदि विद्या की बड़ी बड़ी पुस्तकें रची गईं जैनियों में भी इस भाषा के प्रचार का विशेष कर येही समय संवत् सोलहसै पाया जाता है जैनियों में पंडित बनारसीदास जी शाहजहां बादशाह के वारे में आगरा नगर विषै हिंदी भाषा के महान कवि हुये आपका रचाहुआ समयसार नाटक द्रव्यांग कथनी में बड़ा अनूपम ग्रंथ है इस समय यह हिंदी भाषा बड़ी प्रचलित है परन्तु व्याकरण का प्रबंध कोई नहीं हुआ लिखने पढ़ने में अपनी २ बोली अनुसार निम्न लिखे वर्णों वा शब्दों में कुछ भी विवेक और अन्तर नहीं करते (ख, ष,) (श, स, ष,) (ब, व,) (ज, य,) (र, ल,) (क्ष, ष, छ,) (ण, न,) (वनता, वनिता,) (भरम, भिरम, भ्रम,) (पाय, पांय पाव,) (भान, भानु,) (मार्ग, मारग,) (कृपा, किरपा,) कोई किसी शब्द पर अनुस्वार कोई अर्द्ध अनुस्वार कोई नहीं लिखता है ॥

विपन निंदा आदि कैसी कुछ उत्तम योग्य कथनी हैं आपने हर एक अंग कवि धर्म का पूरा २ निर्वाह करा है साधूजन कभी पाप कर्म के उदय औ क्रोधादिक कषायन के प्रबल होने से क्लेशित हो अपने निज धर्म से डिगने लगते है तौ ऐसी ही यह्र पुरुषों की पुनीत कथा उत्तम कवियों की रची हुईका श्रवण उनको उस निज धर्म पर स्थिर कर देता है ॥ उक्तंच दोहा छंद ॥ साधूजन के चित्तको, जब कर्मन अनुसार । घेरैं पाप प्रकृतिन के, काम क्रोध बटमार । बिन इक तिर्थंकर कथा, दूजो को बर बीर । जो इन दुष्टन मंडली, करै नाश धर धीर ॥ सो यह हिंदी भाषा पार्श्वपुराण कविवर भूधरदास जी ने पांच वर्ष कुछ सरस काल विषै रच कर संवत् सत्रैंहैसौ नवासी आषाढ़ सुदी ५ को संपूरण करा जो मान्य होकर सूर्यवत प्रकाशित है, खोजने से विदित हुआ कि श्रीपार्श्वनाथ स्वामी सनबंधि पुराण वा चरित्र इस समय तक देखे वा सुने जाते हैं सो यह हैं ॥

ग्रन्थ नाम	भाषा	आचार्य नाम	आचार्य इतिहास
१ पार्श्वपुराण	प्राकृत	नागदेव	इस आचार्य ने शीतलनाथ पुराण प्राकृत भाषा और मदनराज ग्रंथ संस्कृत में रचा ।
२ ,,	करनाटकी	पारश्वनाथ	यह आचार्य गृहस्थाचारी आचार्य थे ।
३ ,,	संस्कृत	सकल कीर्त्तिभट्टारक	यह आचार्य संवत् १४९५ विक्रमी में हुए आप के रचे ग्रंथ संस्कृत में महापुराण १ शांतिनाथपुराण २ धर्मनाथपुराण ३ मल्लिनाथ पुराण ४ वर्द्धमानपुराण ५ आदिपुराण ६ शांतिचरित्र ७ सुभाषितसार ८ ।
४ ,,	,,	वादीचंद्र	यह कवि संवत् १६८३ मेंहुए आप के रचे हुए संस्कृत मे ज्ञान सूर्यउदय नाटक १ पांडव पुराण २ ।
५ ,,	हिंदीभाषा	भूधरदास	खँडेलवाल आगरे निवासी थे इनके रचेहुए भाषा ग्रंथोंकी सूचना पहले भूमिका में दिखा चुके हैं ।
६ पार्श्वाभ्युदय:	संस्कृत	जिनसेनाचार्य	आदि पुराण विवाह पद्धति आदि संस्कृत में आपके रचे हुए हैं ।

* ग्रंथ शुद्धकाल *

॥ दोहा छन्द ॥

वेद्बाँण १९५४ गृह उदधि सुत, विक्रम वर्ष महान ।
उत्तमता से शुद्ध भया श्रीजिन पास पुराण ॥

सज्जन जन प्रति प्रार्थना है यदि ग्रंथके शुद्ध करने में प्रमाद वश वा तुच्छ बुद्धि कारण कुछ भूल चूक होगई हो तो मुझको अज्ञात ज्ञात कर क्षमादान दे कृतार्थ कर मेरा उत्साह बढ़ावेंगे और अपनी ओर निहार मेरे अपराधन पर कभी ध्यान न देंगे ॥

॥ सोरठा छन्द ॥

सज्जन जन की रीति करैं प्रीत विपरीत तज ।
यह विध परम पुनीत बड़े बड़ाई ना तजैं ॥

॥ शुभम् ॥

कृपाभिलाषी

अमनसिंह जैनी

अग्रवाल
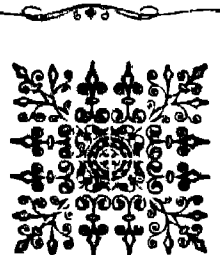
श्रीपाण्डवपुराणग्रंथकाप्रतिअधिकारसंख्यासहितछंदनामावलीयंत्र

* छंद नामावली संख्या *

ग्रंथके प्रति अधिकार छंदों का जोड़	१२५	८९	२३३	२४३	१७७	१२८	१३८	१६४	३३७	१६३४
२ प्रकारकी ढाल के छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	१३	१३
१ प्रकारकी ढाल के छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	९	९
३१ मात्रा सवैया छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	३	३
१६ मात्रा अर्द्ध चौपाई छंद	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
शार्दूल विक्रीड़ित छंद	०	०	०	०	०	०	०	१	०	१
हरिगीत छंद	०	०	०	०	०	२	४	९	०	१५
आर्या छंद	०	०	०	०	१	०	०	१	०	२
कुसुमलता छंद	०	०	०	१३	७	०	०	०	०	२०
पौमावती छंद	०	०	०	२२	०	०	०	०	२	२४
चामर छंद	०	०	१	०	०	०	०	०	०	१
सोरठा छंद	०	०	४	४	०	१	१	६	११	२७
नरिंद्र छंद	०	०	३०	०	०	०	०	०	०	३०
२३ मात्रा छंद	०	१५	०	०	०	०	०	०	०	१५
पद्धड़ी छंद	०	८	०	०	८	३८	०	१०	१०	७४
चाल छंद	१०	८	०	०	०	०	१४	०	०	३२
अड़िल छंद	१	०	१	१	०	०	०	०	६	९
द्रुति विलंब छंद	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१
बाला छंद	१	०	०	०	०	०	०	०	१	२
घनाक्षरी छंद	२	०	०	१	०	०	०	०	१	४
१६मत्राचौपाईछंद	६८	४२	१०७	१४१	११७	६८	९९	११९	१८६	९४७
छप्पै छंद	५	०	०	१	०	०	०	१	६	१३
दोहा छंद	३७	१६	९०	६०	४४	१९	२०	१७	८८	३९१
अधिकारगणती	१	२	३	४	५	६	७	८	९	[illegible]

पार्श्वपुराण छंदनामावली लिखित छंदों के संक्षेप लक्षण

१ (दोहा छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-३-चर्ण में १३ मात्रा अंत में १ वर्ण गुरू या २ वर्ण लघु से पहला वर्ण लघु देखो-२ ४ चर्ण में ११ मात्रा अन्तका वर्ण लघु देखो २ (छप्पै छंद) इस छंद में ६ चर्ण होते हैं यह छंद २ छंद रसावलि १ उल्लाला २ से मिलकर बनता है रसावलि छंद लक्षण इस छंद मे ४ चर्ण होते हैं ११ मात्रा पर विश्राम देकर १३ मात्रा आगे देने से चर्ण पूरा होता है प्रति चर्ण २४ मात्रा जानो और लघू दीर्घका कुछ नेम नहींहै उल्लाला छंद लक्षण इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-३-चर्ण में १५ मात्रा २-४-चर्ण में १३ मात्रा देखो और कुछ नेम नहीं ३ (१५ मात्रा चौपाई छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १५ मात्रा अंतका वर्ण लघु देखो ४ (घनाक्षरी छंद (इस छंदमें ४ चर्ण होतेहैं १६ वर्ण पर विश्राम होकर १५ वर्ण आगे लिखने से चर्ण पूरा होता है चर्ण के अन्त में गुरू वर्ण का नेम है और कुछ नेम नहीं प्रति चर्ण ३१ वर्ण देखलो ५ (बालाछंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-२-३-चर्ण इंद्रवज्रा छंद ४ चर्ण उपेन्द्रवज्रा छंद का होता है इन्द्रवज्रा छंद लक्षण इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण ११ वर्ण १८ मात्रा इस भांति गिनो १-२-वर्णगुरू ३ लघु ४-५-गुरू६ ७-लघु ८ गुरू ६ लघु १०-११गुरू उपेन्द्रवज्रा छंद लक्षण इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण ११ वर्ण १७ मात्रा जानो १ वर्ण लघु शेष वर्ण इंद्रवज्रावत ६ (द्रुतिविलंब छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १२ वर्ण १६ मात्रा इस भांति जानो १-२-३ वर्ण लघु ४ गुरू ५ ६ लघु ७ गुरू ८-९ लघु १० गुरू ११ लघु १२ गुरू ७ (अडिल छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं ११ मात्रा पर विश्राम देकर १५ मात्रा आगे देने से चर्ण पूरा होता है चर्ण के अन्त का वर्ण गुरू गुरू वर्ण से पहला वर्ण लघु जानो (८ चाल छंद जिसका असली नाम सखी छंदहै) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १४ मात्रा गिनो प्रायः अन्त के २ वर्णगुरू होते हैं ६ (पद्धड़ीछंद)

इस छंद में ४ चर्ण होते हैं प्रतिचर्ण १६ मात्रा चर्ण के अन्त का वर्ण लघु लघु से पहला वर्ण गुरू गुरू से पहला वर्ण लघु होताहै १० (२३मात्रा छंद) इस छंद के नाम का पता नहीं लगा परन्तु बिचार से ऐसा जाना गया कि इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १ ३चर्णमें ११ मात्रा अन्त का वर्ण लघू लघूपे पहला वर्ण गुरू होता है २-४ चर्ण में १२ मात्रा अन्त के २ वर्ण गुरू होंगे ११ (नरिंद्र छंद) इस छंदमें ४ चर्ण होते हैं १-३ चर्ण में १६ मात्रा २-४ चर्ण में १२ मात्रा गिनो २ ४ चर्ण में अंत के दो वर्ण गुरू होंगे १२ (सोरठा छंद) इस छंदमें ४ चर्ण होते हैं १-३ चर्ण में ११ मात्रा अंतका वर्ण लघू २-४ चर्ण में १३ मात्रा अंतका वर्ण गुरू वा दो वर्ण लघू से पहला वर्णलघू–दोहा उलटा जान और बात दूजी नहीं १३ (चामर छंद) इस छंदमें ४ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १५ वर्ण २३ मात्रा इस भांति देखो १ वर्णगुरू २ वर्णलघू ३ गुरू ४ लघू इसक्रम से ७ वर्णगुरू ७ वर्णलघू अंतका वर्णगुरू देखो १४ (पोमावती छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १६ मात्रापर बिश्राम देकर १६ मात्रा आगे मिलाने से ३२ मात्रापर चर्ण पूरा होता है चर्ण के अंतके २ वर्ण गुरू देखो १५ (कुसुमलता छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १-३ चर्ण में १६ मात्रा २ ४ चर्ण में १४ मात्रा और अंतका वर्ण गुरू गुरू से पहला वर्ण लघू होगा १६ (आर्या छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १ ३ चर्णमें १२ मात्रा२ चर्णमें १८मात्रा ४ चर्णमें १५ मात्रा गिनो अंतका वर्ण सर्व चर्णों का गुरू होगा १७ (हरिगीत छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १६ मात्रापर बिश्राम देकर १२ मात्रा आगे मिलाने से चर्ण पूरा होता है प्रति चर्ण २८ मात्रा गिनो चर्ण के अंतका वर्ण प्रायः गुरू देखो १८ (शार्दूल विक्रीड़ित छंद) इस छंद में ४ चर्ण होतेहैं प्रतिचर्ण १९वर्ण ३० मात्रा इस भांतिजानो १-२ ३ वर्ण गुरू ४-५ लघू ६ गुरू ७ लघू ८-९ गुरू १० ११ लघू १२ गुरू १३-१४ गुरू १५ लघू १६-१७ गुरू १८ लघू १९ गुरू बारा वर्ण १८ मात्रापर बिश्राम देकर ७ वर्ण १२ मात्रा आगे मिलाने से चर्ण पूरा होता है १९ (१५ मात्रा अर्द्ध चौपाई छंद) इस छंद में २ चर्ण होते हैं प्रति चर्ण १५ मात्रा अंतका वर्ण लघू देखलो यह छंद १५ मात्रा चौपाई छंद के २ चर्ण हैं॥ २० (३१ मात्रा सवैया छंद) इस छंद में ४ चर्ण होते हैं १६ मात्रापर बिश्राम देकर १५ मात्रा आगे मिलाने से चर्ण पूरा होता है चर्ण के अंतका वर्ण लघू लघू से पहला वर्ण गुरू होगा।

२१ (ढालछंद) विचार से प्रगट होता है कि पिंगल शास्त्र अनुसार ढाल नाम कोई विशेष छंद नहीं है सामान छंदो में १-२ वर्ण और १-२ शब्द टेक के बढ़ा लेते हैं उसी को ढाल कहते हैं दक्षिण देश में गुजराती भाषा विषे ऐसी ढालोंका बहुत कुछ प्रचार है यहां दोनों ढालों में असल म दोहे छंद हैं २-४ चर्ण में लघू वर्ण के स्थान में गुरू वर्ण रखकर एक गुरू वर्ण और आगे बढ़ादिया दो चरणों के बीच में एक ढाल में (ज्ञानी) शब्द की दूसरी ढाल में ४ चर्ण के अन्त में (बारह विधतप बरनउँ) की टेक लगादी है—इति ॥

कई यक पुस्तकों में जो शब्द इस पुस्तकसे विमुख देखे गये उन का प्रगट करनेवाला यन्त्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	इसपुस्तकविषे	कई यक पुस्तकों में	पृष्ट	पंक्ति	इसपुस्तकविषै	कई यक पुस्तकों में
३	६	और	जगत	२३	७	बैल	गैल
३	७	सरण	परम	३०	१४	हिमागिर	हरिगिर
६	१७	बल	बश	३४	१३	विभूति	भूपति
८	१६	सूर्य चंद्र	सुरनर संग	३४	१७	कोटकोट	कोटओट
९	३	धार	पार	३६	२	देहबल	होउबल
१०	१६	मूल	भूल	३६	६	लक्षकोट	एककोट
१५	८	गजमातो	मदमातो	३७	५	बनी	भनी
१५	१५	दोष	गुनह	३८	१३	महादेह	महादेव
१६	२	दंड	सज़ा	४०	१५	बई	छई
१६	१५	सब	सठ	४३	१	सन्तति	सम्पति
१६	१७	सबै	सदा	४४	७	संकट	संकल
१७	४	योंअज्ञानतप	योंतपसीतप	४५	४	श्रुति	शुभ
१८	३	अवश	अधिक	४६	६	देखत	दीपत
२१	२	तरुपत्र	तिनपत्र	५५	१७	जिन	अति
२१	१४	छिरकै	डाहै	५६	६	बसा	नसा
२२	८	तन धन	तवधन	५६	८	कंटकतलतक	कंटितकलित
२३	७	गैल	बैल			सूर	करूर

पृष्ठ	पंक्ति	इसपुस्तकविषै	कई यक पुस्तकों में	पृष्ठ	पंक्ति	इसपुस्तकविषै	कई यक पुस्तकों में
६५	३	बिहसाय	शुभभाय	१९७	४	शाष	भाष
६९	१८	मनंकंप्पो	तवबैठो	१६३	८	अट्ठावन	उनसठ
७४	५	सव	षट	१६९	८	छई	मई
८२	५	जैनयतीनिज नेमनिवाहै	तमुनितारण तरणकहावै	१६९	९	चारोंदिश	दसोंदिशा
				१६६	११	चहूं	दुहूं
८६	६	त्रुसि	प्रति	१८०	३	बिरद	तुमी
८८	६	आतम	आपत	१८२	४	प्रमान	परधान
९०	१६	सोमर	समम	१८२	१६	भेद	बेद
१०८	१७	दीपक	जोतिष	१८९	११	समान	प्रमान
१२९	१२	रची	मची	१६१	४	सों	बश
१३२	११	नाथ	तिलक	२२२	८	लवधि	अवधि
१३६	८	पानन	आनन	२३५	८	भगवान	अर्हंत
१३६	१६	सोभंत	शोभंत				
१४१	१	निर्मलछाय कदर्शनवंत	गुणअनंतली येबहुभंत				

* १ समालोचना *

मुन्शी श्रीराम (अज़ीज़) क़ानूगोय गुहाना नगर निवासी टीचर नौरमलस्कूल देहली ॥

* दोहा छन्द *

गुरु ग्रंथ औ देव की, अहनिश मन बच काय ॥
करो सर्व सच्ची विनय, भाव सहित शिरनाय ॥ १ ॥
पढ़ो गुनो नित शास्त्रजी, सत्त धर्म अधिकार ॥
केवल बुगला भक्त बन, करो न मायाचार ॥ २ ॥

* हरिगीत छन्द *

कविराय भूधरदास जी जिन, आगरा शुभथान है । तिनका रचित भाषा ललित, तिर्थेश पास पुराण है ॥ शिक्षित बचन भंडार है अति, भक्ति है थुति में भरी । पुन पाप की विस्तार से विधि, पूर्वक कथनी करी ॥ १ ॥ नरकों के दुख स्वर्गों के सुख दर, सादिये समझाय के । सत तत्त्व औ षट द्रव्यका की, ना कथन हर्षायके ॥ यह ग्रंथ मानो कोष है नव, निद्धि आठौ रिद्धि का । नव रत्न नव अधिकार इक इक, शब्द जिनका नौलखा ॥ ४ ॥ तिस कोष को अहनिश सदा अहि, तुल्ल हम लख २ जिये । पर नेत्र या परना पड़े बहु, यत्न इस कारन किये ॥ निरधन नहीं हम सूमहैं निर्धन भये होकर धनी । खावें न खाने दें यही बस, स्वाभ्मत मनमें ठनी ॥ ५ ॥ संचय करें ढूंढे सदा निर्धन धनी हो जायगा । पर रेत पत्थर तुल्ल है कन, सूम का धन संपदा ॥ क्या सूम आदर धन का करता, है नहीं बेआदरी । निज को न पर को लाभ मानो, बंध में सम्पति करी ॥ ६ ॥ इस भांति करते हैं विनय हम, जैन ग्रंथों की सदा । करजोड़ माथा टेकते बे, ठन लपेटें जगमगा ॥ पर सूचना हम को नहीं जब, लौंकि क्या खटराग

है । क्या अर्थ क्या आशय है इसका, पुण्य अथवा आग है ॥ ७ ॥ तब लौं कहो क्या वह विनय पू, री विनय कहलायेगी । क्या शास्त्र औ गुरुदेवकी स, ची विनय होजायगी ॥ योंही जो होजावे विनय पू, रीतु अच्छा काम है । करना पड़े कुछ भी नहीं बस, स्वर्ग अपना धाम है ॥ ८ ॥ आता नहीं है यह विनय के, बल विनय अविनय हये । सच्ची विनय अब हम बताते, हैं सुनो तुम ध्यानदे ॥ पढ़ना पढ़ाना शुद्ध कर पर, चार करना भाव सूं । आशै को उसके जानकर बर, ताव करना चावसूं ॥ ९ ॥ केवल उन्हीं का है सुफल जी, वन मरन संसारमें कटिबद्ध रहते हैं सदा जो, धर्म के परचार में ॥ मुनशी अमनसिंह जिनमती स्रो, नी पती धरमात्मा । करते हैं सेवन धर्म का इस, काल तन मन धन लगा ॥ ॥ १० ॥ दिन रैन अभिलाषा यही निज, धर्मका परचार हो । जिन देववाणी नाव तिष्ठें, सर्वबेड़ा पारहो ॥ बहुग्रंथ बहुपरयत्न से अति, शुद्धकर मुद्रित किये । रचना सहित जिन वाक्य अमृत, घूंटतृष्कोंने पिये ॥ ११ ॥ इसग्रन्थ की बहुप्रतें लेखक, की लिखी संचयकरी । जो शब्द थे उन में विमुख सब, लिख दिये सं शयहरी ॥ बहु बुद्धजन सम्मतिलई फिर, शुद्ध करने के लिये । टीका लिखी विस्तार से जो, वाक्य टीका योग थे ॥ १२ ॥ पुनिछंद संख्या यंत्रसूची पत्र लिक्खे मनलगा । पाठकजनों हितकार फिरइक, कोष शब्दों का दिया । चउवन अधिक उन्नीस सौ भी, राम संवत् विक्रमी । मुद्रित कराया ग्रन्थ परउप कार ताकी जहजमी ॥ १३ ॥

॥ २ समालोचना ॥

ज्योतिषरत्न पण्डित जियालालजी चौधरी रईस
॥ फर्रुख नगर ॥

मुंशी अमन सिंह साहिब की सच्ची जाति हितैषिता का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण होसकता है कि आप तन मन धन तीनों द्वाराजैन जाति में फैले हुये अ- ज्ञान अंधकार का नाश कररहे हैं और शुद्ध जैन धर्म ग्रन्थाभिलाषियों के लिये

जो उत्तम पदार्थ है उसको और भी परमोतम बनाकर चाहनें वालों की भेंट करते हैं, आजतक आपने भूधरजैन शतक, सज्जन चितवल्लभ काव्य, भाषा सन्तूर प्रकरण, भक्तामर, कल्याण मंदिर, छहढाला, आलोचना पाठ, इत्यादिक अनेक रत्न निज बुद्धिरूपी चर्खपर चढ़ा सरलार्थ टीका और कोषादिक को लगाके ऐसे उत्तम कर दिखाये जो अकथनीय हैं, आजकल जब सम्पूर्ण भारत में छपे जैन शास्त्रों के प्रचारकी अधिक धूम है तो आपनेभी जगत विख्यात जैन धर्म के प्रसिद्ध तीर्थंकर श्रीस्वामी पार्श्वनाथ भगवान का भाषा छंद बद्ध पुराण मुद्रित कराया है, यद्यपि यह पुराण जैन के एक प्रसिद्ध कवि भूधरदास जी का रचा होने से स्वतःही अनुपम है, किंतु मुनशी अमन सिंह जीने इसके छपाने में अनेक प्रतियों से शुद्ध करने गूढ़ शब्दों का कोष बनाने आदि का जो श्रम उठाया है उससे यह ग्रन्थ ऐसा बहु मूल्य रत्न बनगया है जो विद्या रसिक जैनियों के देखनेही योग्य है और यद्यपि जैन धर्म्म के लाखों ग्रन्थ विद्यमान हैं परन्तु इस एकही ग्रन्थ के मन लगाकर देखलेने से जैन धर्म्मका पूरा भेद जाना जाता है इस जातिहितैषिता का मैं मुनशी जी को सच्चे मन से धन्यवाद देताहूं—

जियालाल.

श्रीजिनायनमः ॥

कबिवर भूधरदासजी रचित छंद बंद भाषा पार्श्वपुराण ॥

श्री पार्श्वनाथजी स्तुति ।

दोहाछंद ।

मोह महातम दलन दिन, तप लक्ष्मी भर्तार ॥
सो पारस परमेश मुझ, होउ सुमति दातार ॥ १ ॥
बामा नंदन कल्प तरु, जयो जगत हितकार ॥
मुनि जन जाकी आसकर, याचैं शिव फल सार ॥ २ ॥

छप्पै छंद

भुवन तिलक भगवंत, संत जन कमल दिवायर ।
जगत जंतु बंधव अ,नंत अनुपम गुण सायर ॥
राग नाग मय मंत, दंत उच्छेपण बलि अति ।
रमाकंत अर्हंत, अतुल यशवंत जगत पति ॥

---

१ मोक्षरूप लक्ष्मी के पति ।

महिमामहंत मुनिजन जपत, आदि अंतसबकोसरण।
सो परमदेव मुझ मनबसो, पार्स नाह मंगल करण॥३॥
बिमल बोध दातार, विश्व विद्या परमेश्वर।
लक्ष्मी कमल कुमार, मार मातंग मृगेश्वर॥
मुख मयंक अवि लोक, रंक रजनी पतिलाजै।
नाम मंत्र परताप, पाप पन्नग डर भागै॥
जय अश्वसेन कुल चंद्र जिन, शक्र चक्र पूजत चरण।
तारो अपार भव जलधि तैं, तुम तरंड तारण तरण॥४॥
बाघ सिंह वश होहिं, विषम विषधर नहिं डंकै।
भूत प्रेत बेताल, व्याल बैरी मन शंकै॥
शाकिनि डाकिनि अग्नि, चोर नहिं भय उपजावैं।
रोग सोग सब जाहिं, बिपत नेरे नहिं आवैं॥
श्री पार्श्वदेव के पद कमल, हिये धरत निज एकमन।
छूटैं अनादि बंधन बंधे, कौन कथा बिनशै विघन॥५॥
चहुं गति भ्रमत अनादि, बाद बहु काल गमायो।
रही सदा सुख आस, प्यास जल कहीं न पायो॥
सुख करता जिन राज, आजलों हिये न आयो।
अब मुझ माथे भाग, चरण चिंतामणि पायो॥
राखूँ संभाल उर कोष मैं, नहिं बिसरूं पल रंक[1] धन।

१ यहां यथा बाचक शब्द लुप्त है।

परमाद चोर टालन निमत करूं पासजिन गुण कथन॥ ६॥

पंच परमेष्टी स्तुति॥

१५ मात्रा चौपाई छन्द॥

बंदूं तिर्थंकर चौबीस। बंदूं सिद्ध बसैं जगसीस॥
बंदूं आचारय उज्झाय। बंदूं परम साधु केपाय। ७।
येही पद पांचों परमेठ। येही सार और सब हेठ॥
येही मंगल पूजअतीव। येहीउत्तम सरण सदीव। ८।

जिनबाणी स्तुति॥

१५ मात्रा चौपाई छंद॥

बंदूं जिनबाणी मन सोध। आदि अंत जो बिगत बिरोध॥
सकल बस्तु दर्शावनहार। भ्रम बिषहरण औषधीसार। ९।

॥ दोहा छंद॥

बरतो जग जयवंत नित, जिन प्रबचन अमलान॥
लोक महल में जग मगै, माणक दीप समान। १०।
हरो भिरम दालिद्र दुख, भरो हमारी आस॥
करो सारदा लक्ष्मी, मुझ उर अंबुज बास। ११।

गणधर वा आचार्यों की स्तुति ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बंदूं वृषभ सेन गण राज । गुरु गौतम भव जलधि जहाज ॥
कुंद कुंद मुनि प्रमुख सुपंथ । ते सब आचारय निर्ग्रंथ । १२ ।
जैन तत्व के जानन हार । भये यथारथ कथिक उदार ॥
तिनकेचरणकमलकरजोर । करूंप्रणाममानमदछोर । १३ ।

॥ कवि नम्रता वा ग्रंथ करणकारण ॥

॥ दोहा छंद ॥

सकल पूज्य पद पूजकै, अल्प बुद्धि अनुसार ॥
भाषा पार्स पुराण की, करूं स्व पर हितकार । १४ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जिन गुणकथन अगमाविस्तार।बुधिबल कौनलहै कविपार॥
जिन सेनादिक सूरि महंत । बर्णन कर पायो नहिं अंत। १५
तौ अबअल्प मती जनओर । कौनगणति मैं तिनकी दौर ।
जो बहुभार गयंदन बहै । सो क्यों दीन ससक निर्बहै। १६।

॥ दोहा छंद ॥

कह जानैं ते यों कहैं, हम कुछ बरणों नाहिं ॥

जे कहु जानैंही नहीं, ते अब कहा कहाहिं। १७।
बिलस्त नभ नापै नहीं, चलू न सागर तोय॥
श्री जिन गुण संख्या सुयश, त्यों कवि करै न कोय। १८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद॥

पै यह उत्तम नर अवतार। जिन चरचा बिन अफल असार॥
सुन पुराण जो धूमन सीस। सो थोथे नारियल सरीस। १९।
जिन चरित्र न सुनैं ते कान। देह गेह के छिद्र समान॥
जामुख जैन कथा नहिं होय। जीभ भुजंगनि का बिल सोय। २०।
या प्रकार यह उद्यम जोग। कहत पुराणन पण्डित लोग॥
जिनगुणगान सुधारस न्याय। सेवत अल्प जन्म जुर जाय। २१।

॥ घनाक्षरी छंद॥

जो लों कवि काव्य हेत आगम के अक्षर को,
अरथ बिचारैं तो लों सिद्ध शुभ ध्यान की।
और बहु पाठ जब भूपर प्रघट होय,
पढ़ैं सुनैं जीव तिनै प्रापति है ज्ञान की॥
ऐसैं निज परको बिचार हित हेतु हम,
उद्यम कियो है नहीं बान अभिमान की।

१ श्री जिनके गुण वा सुयश की संख्या कोई नहीं करसक्ता—यह देहली दीपक न्याय अलंकार है।

ज्ञान अंश चाखा भई ऐसी अभिलाषा अब,
करूं जोड़ भाषा जिन पारस पुराण की। २२।
आगे जिन ग्रंथन के करता कवींद्र भये,
करी देव भाषा महा बुद्धि फल लीनो है।
अक्षर मिताई तथा, अर्थ की गंभीर ताई,
पद ललताई जहां आई रीति तीनों हैं ॥
काल के प्रभाव तिन, ग्रंथन को पाठी अब,
दीषत अलप ऐसो, आयो दिन हीनो हैं।
तातैं इस समै योग, पढ़ैं बालवृद्धि लोग,
पारस पुराण पाठ भाषा बंद कीनो है। २३।

॥ दोहा छंद ॥

शक्ति भक्ति बल कविनपै, जिन गुण वरणे जाहिं ॥
मैं अब वरणूं भक्ति बल, शक्ति मूल मुझ नाहिं। २४।
वरणूं पूरब कथित क्रम, ग्रंथ अर्थ अवधार ॥
सुगमरूप संक्षेप सों, सुनौ सबै नरनार। २५।

॥ कथा विख्यात कारण ॥

॥ १५ मात्रा चौपाइ छंद॥

मग्धदेश देशन परधान। राजग्रही नगरी शुभथान ॥

राज करै श्रेणक भूपाल । नीतवंत नृप पुण्य विशाल । २६ ।
क्षायक सम्यक दरशन धार । रूपशील सबगुण आधार ॥
तिनके घर अंतेवर घना । पटरानी रानी चेलना । २७ ।
जाके गुर्ण वरणत बहुभाय । बरयाँलगै कथा बढ़जाय ॥
एकदिना निज सभा नरेश । निवसैं जैसें स्वर्ग सुरेश । २८॥
रोमाँचित बनपालक ताम । आय रायप्रति कियो प्रणाम ।
छह ऋतुकेफलफूल अनूप । आगेधरे अनूपम रूप । २९ ।
हाथजोर विनवै बनपाल । विपुलाचल पर्वत की भाल ॥
वर्द्धमान तिर्थंकर आप । आये राजन पुण्य प्रताप । ३० ।
महिमा कछुवरणी नहिं जाय । इन्द्रादिक सेवेंसब पाँय ॥
समोसरण संपति की कथा । मोपै कहीजाय किमतथा । ३१ ।
माली बचन सुनें सुखदाय । हर्ष्योराजा अंगन माय ॥
दीने भूषण बसन उतार । बनमाली लीने सिरधार । ३२ ।
सातपैंड़ गिर सन्मुख जाय । कियो परोक्ष बिनै नरराय ।
आनँद भेरि नगर मैं दई । सबहीं को दर्शनरुचिभई । ३३ ॥
चलोसंग परियन समुदाय । बंदे वर्द्धमान जिनराय ॥
लोकोन्तर लछमी अवलोक । गयेसकल भूपति केशोक ३४
थुति आरंभ कियो बहुभाय । बार बार भुमिसीसनिवाय ॥
गौतम गुरु पूजेकर जोर । निज कोठे बैठ्यो मदछोर । ३५ ।

१ अर्थात् समाय ।

करीप्रश्न श्रेणक बड़ भूप । प्रभु पारस जिन कथा अनूप ॥
जाके सुनत पाप छै होय। कहिये देव कृपाकर सोय । ३६ ।
तब गणधर बोले हितकाज । जोगप्रश्न कीनो नरराज ॥
सुन पुनीत पारस जिनकथा। सफल होय मानुष भवयथा ३७

दोहाछंद

इहिं विधि जो मघदेश प्रति, कह्यो चरित गणराज ॥
ताहीक्रम आये कहत, आचारज परकाज । ३८ ।
तिनही के अनुसार अब, कहूँ किमप विस्तार ।
जैनकथा कल्पित नहीं, यह जानो निर्धार । ३९
जैन वचन वारिधि अगम, पानी अर्थ अनूप
मति भाजन भर २ लिये यह जिन आगम रूप । ४०

कथाप्रारंभ प्रथम अधिकार

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जंबूद्वीप दिपै यह सार । सूर्य मण्डल की उनहार ॥
मध्यसुमेरु कर्णिका भास । बने क्षेत्र दल दीरघजास ।४१।
तारागण मकरंद मनोग । सूर्य चन्द्र भ्रमर कुल योग ।
लवणसमुद्रसरोबरथान । दीप किधौंयहकमलमहान । ४२

१ आचार्यों ने अपनी अपनी मति के अनुसार यह जिन आगम रूप अर्थात् शास्त्र के भाजन भर लिये भावार्थ शास्त्र रचे ।

लक्षमहा योजन विस्तार। वसै विविध रचना आधार॥
दक्षणभरतधनुषसंठान। पर्वत पणच नदीजुगवान।४३।
मानो सागर प्रति अनुमान। तानत तीर धार जलजान॥
ऐसीभांतबिराजत खेत। छहों खण्डमंडितछबि देत।४४।
पांच मलेच्छ वसैं तामाहिं। धर्म कर्म कछु जानैं नाहिं॥
उत्तम आर्यखण्डमझार।देशसुरम्य वसै मन हार।४५।
जन कुल जहां रहैं वहु भांत। पास पास सोहैं पुरपांत॥
सरवर नदी शैल उदयान।बन उपबन सों शोभामान। ४६।
तहां नगर पोदन पुरनाम। मानो भूमि तिलक अभिराम॥
[illegible] लोक की उपमा धरै। सबही विध देखत मन हरै। ४७।

॥ दोहा छंद ॥

तुंग कोट खाई सजल, सघन बाग ग्रह पांत॥
चोपथ चौंक बजारं सों, सोहै पुर बहु भांत॥ ४८॥
ठाम ठाम गोपुर लसैं, वापी सरवर कूप।
किधों स्वर्ग ने भूमि को, भेजी भेट अनूप॥ ४९॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जैनी प्रजा जहां परवीन। वसै दानं पूजा व्रतलीन॥
जैन भवनऊंचेअति बने। शिखरधुजासोंशोभित घने।५०।

इहिं विध पुर शोभा अधिकार । बरणन करत लगै बहुवार ।
राज करै राजा अर विंद । सोहै मानों स्वर्ग सुरिंद्र । ५०
पालै प्रजा कुमति जिन दली । नीत बेल मण्डित भुजवली ।
दया धाम सज्जन गंभीर । गुणरागी त्यागी रणधीर । ५१
तिस भूपति के विप्र सुजान । विश्व भूत मंत्री बुधिमान
ताकै त्रिया अनुँधर सती । रूपशील गुण लक्षणवती । ५
दोय पुत्र तिनकै अवतरे । पाप पुन्य की पट तर ध
जेठो नंदन कमठ कपूत । दूजो पुत्र सुधी मरु भूत । ५

॥ दोहा छंद ॥

जेठो मत हेठो कुटिल, लघु सुत सरल सुभाव
विष अमृत उपजे युगल, विप्र जलधि के जाव । ५५
बड़े पुत्र नै भार्या, ब्याही वरुणा नाम ।
लघुनै बरी विसुन्दरी, रूपवंत अभिराम । ५६

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यों सुख निबसैं बंधव दोय । निज निज टेव न टारै कोय
वक्रचालविषधर नहिं तजै । हंसवक्रता मूल न भजै । ५७

॥ दोहा छंद ॥

उपजे एकहि गर्भ सों, सज्जन दुर्जन येह ॥

लोह कवच रक्षा करै, षाँडा षंडे देह । ५८ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

ऐसाति सज्जन मरुभूतकुमार । नीत शास्त्र को जाननहार ॥
पांनको इष्ट सकलगुणगेह । राजाप्रजाकरैं सब नेह । ५९ ।

॥ उत्कंच संस्कृत बाला छंद ॥

धासदभ्यास बशादुपैति।सौजन्यमभ्यासवशादगम्यं॥
ौसपत्न्यःप्रविशालमीयुः॥विशालमीयुर्नतुनेत्रयुग्मं।६०

॥ भाषा टीका ॥

विद्या अर्थात् ज्ञान सच्चे विचार के आधीन प्राप्त होजाता है परन्तु सज्जनता अ-
् नलापन जो स्वाभाविक धर्म है विचार आधीन प्राप्त नहीं होता—
ृांत—यथा शौकीन स्त्री अपने कानों को इस अभिप्राय से कि कर्ण भूषण पहरकर
अपने पति को मोहित करूंगी मोर के पर वा तुली के गूदे आदि डालकर चौड़ा
र लेती है परन्तु अपने नेत्रों को बड़ा नहीं करसक्ती किसलिये कि नेत्र का
विशाल होना उसका स्वभाविक धर्म नहीं है ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिना भूपति मंत्रीश । स्वेत बाल देखो निज शीश ॥
उपजो विप्र हिये वैराग ॥ जानोंसब जग अथिर सुहाग । ६१

॥ दोहा छंद ॥

जरा मौतकी लघु बहन । या मैं संशय नाहिं ॥

तो भी सुहित न चिंतवै । बड़ी भूल जगमाहिं । ६२ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यह बिचार मंत्री मनमाहिं। निज सुत सोंप राय की बांहि
सुगुरुसाषजिनचारितलियो।बनोबासआत्महितकियो। ६
अबमरुभूत विप्र सुख करै । अहनिशनीत पंथ पगधरै
राजाप्रीतकरैबहुभाय । सोम प्रकृति सबकोंसुखदाय ।६
एक समय आपनअरिविंद । मंत्री सेना सहित नरिंद
राय बज्र वीरज पर चढ़े । क्रोधभाव उरमैंअतिवढ़े । ६
पीछे कमठनिरंकुशा होय। लगो अनीत करण शठ सो
जो मनआवैसो हठ गहै । मैं राजासब सों इमकहै । ६
एक दिना निज भ्राता नार । भूषण भूषित रूप निहार
रागअंधअतिविहवलभयो । तिच्रणकामतापउरतयो ।६
महा मलिन उर बसैंकुभाव । दुर्गति गामी जीव सुभाव
पुत्री सम लघुभ्रातानार। तहां कुदिष्टधरी अविचार ।६८

॥ दोहाछंद ॥

पाप कर्म को डर नहीं, नहीं लोक की लाज ॥
कामी जनकी रीतयह, धिकतिसजन्म अकाज।६९ ।
कामी काज अकाज मैं, हो हैं अंध अवेव ॥
मदनमत्तमद मत्तसम, जरो जरोयह टेव । ७० ।

पिता नीर परसै नहीं, दूर रहै रवि यार ॥
ता अंबुज मैं मूढ़ अलि, अरभ्रमरै अविचार । ७१ ।
त्योंही कुविसनरति पुरुष, होयअवश अविवेक ॥
हितअनहितसोंचे नहीं, हिये विसनकी टेक । ७२ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मैं सघन लता ग्रह जहां । गयो कमठ कामातुरतहां ॥
वेदनाकल नाहिं परै । छिनछिन काम विथादुखकरै ।७३ ।

॥ उक्तंचसंस्कृत द्रुतविलंबछंद ॥

मधर्म नदाज्जनमीनकान शशि मुखी बडि शेनसमुद्धृतान
तेसमुल्लसितेरतिर्मुर्मुरेपचाति हाहतकस्मरधीवरः ।७४ ।

॥ भाषा टीका ॥

हाय कामदेव रूप हिंसक धीवर परम धर्म रूप समुद्र जन मच्छों (अर्थात् धर्मात्मा पुरुषों) को जो चंद्रमुखी स्त्री रूप बाडिश कहिये लोहे के कांटे कर उस धर्म रूप समुद्र से बाहर निकाले गये हैं अति तेज विषय रूप भूभल अग्नि में पकाता है ...वार्थ कामदेव धर्मात्मा पुरुषों को स्त्रियों के हाव भावपर मोहितकर व्याकुल कर जाता है—सो बड़े शोक का स्थान है ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

कमठ सखा कलहंस विशेष । पूछत भयो दुखी तिस देष ॥
कौनव्याधि उपजीतुमअंग । अतिव्याकुलदीषेसर्वंग ।७५ ।

तबतिनलाज श्रोर सब सही । मन कीबात मित्रसों कही॥
सुनकलहंस कथा विपरीत। शिक्षा वचनकेहकर प्रीत। ७६॥
अतिअयोगकारजयह बीर । सो तुम चिंत्यो साहसिधीर॥
परनारीसमपापनआन । परभवदुखइहिंभवयशहान। ७७
इसही बंछा सों अघभरे । रावण आदि नरक में परे ।
जगमेंजेठपितासम तूल । बात कहतलाजैनहिंमूल । ७८
तातैं यह हठ मूल न करो । सुहित सीख मेरी मन धरो
लोक निंद कारज यहजान । धर्मनिंदनिश्चैउरआन ।७९

॥ दोहा छंद ॥

यों कल हंस अनेक विध, दई सीख सुख दैन ।
ते सबकमठकुशीलप्रति, भराबिफलहित वैन । ८० ।
आयुहीन नर को यथा, औषधि लगै न लेश ॥
त्योंहीं रागी पुरुष प्रति, वृथा धर्म उपदेश । ८१ ।
बोलो तब कामी कमठ, सुनो मित्र निर्धार ॥
जो नहिं मिलै विसुंदरी, तो मुझमरण विचार। ८२
देख कमठ की अधिक हठ, कुमति करीकल हंस ।
जाय कहे ता नार सों झूठ बचन अपशंस । ८३

॥ अडिल छंद ॥ ॥

सुन विसुंदरी आज कमठ बन में दुखी ।

तू ताकी सुध लेहु होय जिहिं विधसुखी ॥
सुनतेही सतभाव गई बन मैं तहां ।
निवसै कर परपंच कमठ कपटी जहां । ८४ ।

॥ दोहा छंद ॥

छलबल कर भीतर लई, बनता गई अजान ॥
राग बचन भाषे बिविध, दुरा चार की खान । ८५ ।

॥ १४ मात्रा चाल छंद ॥

ज मातो कमठ कलंकी । अघसों मन्सा नाहिं शंकी ॥
वज वन करनी रंजो । जिन शील तरोवर भंजो ॥ ८६ ॥
जीत विजय यश पायो । अरविंद नृपति घर आयो ॥
कर्म कमठ ने कीने । राजा सबते सुन लीने ॥ ८७ ॥
त्री मरुभूत बुलायो । ताको सब भेद सुनायो ॥
कहु बिप्र सुधी क्या कीजे । क्या दण्ड इसे अब दीजे ॥८८॥
दुज कहे सरल परिणामी । अपराध छमा कर स्वामी ॥
जो एक दोष सुनलीजै । ताको प्रभु दण्ड न दीजे ॥ ८९ ॥
तब भूप कहे सुन भाई । जो निग्रह योग अन्याई ॥
करुणा किम होहे । यह न्याय नृपति नहिं सोहै ॥ ९० ॥
कमठ यह गच्छ सयाने । मत खेद हिये कुछ आने ॥
यसै कह बिप्र पठायो । तिस पीछे कमठ बुलायो ॥ ९१ ॥

अति निंदो नीच कुकर्मी। जानो निर्धार अधर्मी॥
राजा [illegible] रिस कीनी। सिर मुण्ड दंड बहु दीनी॥ ९२॥
[illegible] लगाई। खर रोप्यो पीर न आ[illegible]॥
फिरसारे [illegible] [illegible]। अति बीथी ढोल बजायो॥ ९[illegible]॥
इस भांत कमठ [illegible] [illegible]वारी। देषैं सबही नर नारी॥
पुरवासी लोक धिकारैं। बालक मिल कांकर मारैं॥ ९४॥
यों दण्ड दियो अति भारी। फिर दीनी देश निकारी॥
जो दीरघ पाप कमाये। ततकाल उदै बहु आये॥ ९५॥

॥ दोहा छन्द ॥

इहि विधि फूल्यो पाप तरु, देष्यो सब संसार॥
आगे फलहै नरक फल, धिक दुर्विसन असार॥ ९[illegible]॥

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

महादण्ड भूपति जबदियो। कमठकुशील दुखीअतिभयो॥
बिलषत बदन गयोचल तहां। भूताचलपर्वत हैजहां॥ ९७॥
रहे तहां तपसी समुदाय। ज्ञान बिना सब सोखैं का[illegible]॥
केईरहे-अधोमुख भूल। धूँवां पान करैं अघ मूल॥ [illegible]॥
केई ऊर्ध मुखी आघोर। देखैं सबै गगन की ओ[illegible]॥
केई निवसैं ऊरध वाहिं। दुविध[1] दयासौं परचैं नाहिं॥ [illegible]॥

---

१ दुविध दया—त्रस जीवकी १ थावर जीवकी २।

केई पंच अग्नि झल सहैं। केई सदा मौन मुख रहैं॥
केई बैठे भस्म चढ़ाय। केई मृग छाला तन लाय।१००।
नख बढ़ाय केई दुख भरैं। केई जटा भार सिर धरैं॥
यों अज्ञान तप लीन मलीन। करैं खेद परमारथहीन॥१०१॥
तिनमें एक तापसी नाथ। प्रणाम्यो ताहि धरे सिरहाथ॥
तिन अशीस दे आदर कियो। दिक्षादान कमठ तहँ लियो॥१०२।
करन लगो तब काय कलेश। उर वैराग विवेक न लेश॥
ठाडो भयो शिला कर लिये। किधों फणी फण ऊंचो किये॥१०३॥
मंत्री बंधव की शुध पाय। राजा सों विनयो इम आय॥
भूताचल पर्वत की ओर। भ्राता कमठ करै तप घोर।१०४।
जो नरनायक आज्ञा होय। देखूँ जाय सहोदर सोय॥
पूछै नृपति कौन तप करै। भो प्रभु तापस के व्रत धरै।१०५।
एक बार मिल आऊं ताहि। राय कहै मंत्री मत जाय॥
खल सों मिले कहा सुख होय॥ विषधर भेंटे लाभ न कोय।१०६।
बरज्यो रह्यो न बारम्बार। महा सरल चित्त विप्रकुमार॥
भ्रातमोहबस उद्यम कियो॥ कोमल होत सुजन को हियो।१०७।

॥ दोहा छंद ॥

दुर्जन दूखित संत को, सरल सुभाव न जाय॥

१ इस प्रकार जैसे ऊपर कह आये वे सर्व तपसी जो मलीन थे अज्ञान तपमें लीन हो रहे थे॥

दर्पण के छवि छारसों, अधिकहिं उज्जल थाय। १०८।
सज्जन टरै न टेव सों, जो दुर्जन दुख देय॥
चंदन कटत कुठार मुख, अवश सुवास करेय। १०९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

गयो विप्र एकाकी तहां। कमठ कठोर करै तप जहां॥
विनयवंतहोविनयोतास। महासरलबायकमुखभास।११०।
भो बंधव तौ उर गंभीर। यह अपराध छिमाकर बीर॥
मैंतोरायबहुत वीनयो। मानी नाहिं तुमैं दुख दियो। १११।
होन हार सों कहा बसाय। तुम बिन मोहि कछू न सुहाय॥
यों कहपांवनलागोजाम। कोपोअधिक कमठदुठताम।११२।

॥ दोहा छंद ॥

दुर्जन और शलेषमा, ये समान जग माहिं॥
ज्यों ज्यों मधुरो दीजिये, त्योंत्यों कोपकराहिं।११३।
शिला सहोदर शीश पै, डारी बज्र समान॥
पीरनआई पिशुनको, धिकदुर्जन की बान।११४।
दुर्जन को विश्वास जे, कर हैं नर अविचार॥
ते मंत्री मरुभूत सम, दुख पावैं निर्धार। ११५।
दुर्जन जन की प्रीत सों, कह-कैसे सुख होय॥

विषधरपोष पियूष की, प्राप्ति सुनीनहि लोय। ११६।
मंत्री तन तैं रुधिर की, उछली छींट कराल ॥
दुर्जन हिततरुतैंकिधों, निकसी कोंपललाल।११७।
इहिं विध पापी कमठ नै, हत्या करी महान ॥
तब तपसीमिल नीचनर, काढ़ दियो दुठजान।११८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

फेर दुष्ट भीलन तैं मिलो। भयो चोर घर मूसन हिलो ॥
पाप करतकर आयो जबै। बांध बुरी बिध मारो तबै। ११९।

॥ दोहा छंद ॥

जैसी करनी आचरैं, तैसो ही फल होय ॥
इन्द्रायन की बेलकै, आंब न लागै कोय। १२० ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

दिना अरविंद नरिंद्र। पूँछे कर जुग जोर मुनिंद्र।
भुमुभ मंत्रीमरु भूत। क्यों नाहिं आयोबाह्मनपूत।१२१॥
सन अवधिवंतमुनिराय। सबबिरतंतकह्योसमभाय॥
मन अतिभयोमलीन। हा मंत्री सज्जनता लीन। १२२।
जान गयो दुष्ट के पास। कुमरण लह्यो सह्यो बहु त्रास॥

होनहार सोई विध होय । ताहि मिटाय सकै नाहिं कोय। १२३।
यों बिचार मन शोक मिटाय। साधु पूज घर आये राय ॥
यहसुनदुष्टसंग परिहरो। सुखदायक सत संगतिकरो। १२४।

॥ छप्पै छंद ॥

तपे तवापर आय स्वात जल बूंद विनट्ठी ।
कमल पत्र पर संग वही मोती सम दिट्ठी ॥
सागर सीप समीप भयो मुक्ताफल सोई ।
संगत को परिभाव प्रघट देखो सब कोई ॥
योंनीच संगतैं नीचफल, मध्यमतैं मध्यम सही ॥
उत्तम संजोगतैं जीवकों, उत्तमफल प्राप्तिकही । १२५ ।

इतिश्री पार्श्वपुराण भाषामरुभूतभववर्णननाम प्रथमअधिकार संपूर्णम् ॥

॥ द्वतिय अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

अश्वसेन कुल चंद्रमा, बामा उर अवतार ॥
बंदूँ पारस पद कमल, भविजन अलिआधार ।

॥ पद्धड़ी छंद ॥

इसभाँततजे मरुभूत प्रान । अबसुनो कथाआगे सु ॥

अतिसघनसल्लकीबनबिशाल।जहँतरुवरतुंगतमालताल २।
बहु बेलजाल छाये निकुंज । कहिं सूकपरे तरुपत्र पुंज ॥
कहिंसिकताथलकहिंशुद्धभूम।कहिंकपितरुडारनरहेभूम।३।
कहिंसजलथानकहिंगिरउतंग । कहिंरीछरोभ्भविचरैंकुरंग ॥
तिसथानकआरतिध्यानदोष । उपजावनहस्तीवज्रघोष ।४।
अतिउन्नतमस्तकशिखरजास । मदजीवनझरनाझरैंतास॥
दीषैतमबरण विशाल देह । मानो गिरजंगम दुरस येह।५।
जाको तन नख चोभवंत । मुसलोपम दीरघ धवलदंत ॥
मदभीजेझलकैंयुगलगंड । छिनछिनसोंफेरैसुंडदण्ड । ६ ।
जो बरुना नामें कमठ नार । पोदनपुर निवसै निराधार ॥
सोमरतिहिंहथनीहुईआन । तिससंगरमें नितरंजमान ।७।
कबही घनज्योंगरजे विशेष । कबही ढुकआवैपथिक देष ॥
कबही बहुखंडे बिरछवेल । कबही रजरंजित करहिकेल ।८।
कबही सरवरमें तिरहि जाय । कबही जलछिरकैमत्तकाय ॥
कबही मुखपंकज तोर देय । कबही दहकादोअंगलेय॥९॥

॥ दोहा छंद ॥

योंसुछंद क्रीड़ा करै, बरुना हथनीं सत्थ ॥
बन निवसै बारण बली, मारण शील समत्थ ।१०।

रणशील कहिये मारण का स्वभाव जिसमें समत्थ कहिये सामर्थ अर्थात
। ॥

१
ज्ञान

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिवस अरविंद नरेश । ज्यों विंमानमें स्वर्ग सुरेश ॥
योंनिज महलन निवसैभूप । देखो बादल एक अनूप । ११।
तुंग शिखर अति उज्जलमहा । मानो मंदिरही बनरहा ॥
नरवै निरख चिंतवै ताम । ऐसोही करये जिन धाम ।१२।
लिखन हेतकागद कर लियो । इतने सोंसरूप मिटगयो ॥
तवभूपतिउरकरैंविचार । जगतरीतसबअथिरअसार ।१३।
तन धन राज संपदा सबै । योंही विनश जांयगी अबै ॥
मोहमत्त प्राणी हठगहै । अथिर बस्तुको थिरसरदहै ।१४।
जो पररूप पदारथ जात । ते अपने मानै दिनरात ॥
भोगभाव सब दुखके हेत । तिनहीको जानै सुखखेत ।१५।
जों माचन को दों परभाव । जाय यथारथ दिष्टि स्वभाव ॥
समझै पुरुष और की और । त्योंही जगजीवन की दौर ।१६।
पुत्र कलत्र मित्रजन जेह । स्वारथ लगे सगे सबयेह ॥
सुपन सरूप सकल संजोग । निज हितहेत विलंबनयोग
योंभूपति वैराग विचार । डारी पोट परिग्रह भा
राज समाज पुत्रको दियो । सुगुरु साखनृप चारित लि
धरी दिगंबर मुद्रासार । करै उचित आहार विह
बारह विध दुद्धर तपलीन । छहों कायपीहरपरबीन ।
एक समैं अराविंद मुनीश । सारथ बाहीके संग ॥

शिखर सुमेर वंदना हेत । चलेईर्या पथपग देत । २१ ।
गये सल्लकी बनमें लंघ । तहां जाय उतरो सब संघ ॥
निजसिज्झायसमैंमनलाय । प्रत्मायोगदियोमुनिराय।२२।
तावत बज्र घोष गजराज । आयो कोपकाल समगाज ॥
सकल संगमें खलबल परी । भाजे लोक कोकधुनि करी२३
गजके धकैपरो जोकोय । सो प्राणी पहुचौं परलोय ॥
मारे तुरग तिसाये गैल । मारे मारग हारे बैल । २४ ।
मारे भूखे करहा खरे । मारे जन भाजेभय भरे ॥
इहिंविधहाथीकरतसँघार।मुनिसन्मुखआयोकिलकार।२५।
अति बिकराल रोषबिषभरो।मुनि मारणको उद्यमकरो ॥
साधसुदर्शन मेरु समान । श्रीवत्स लच्छन उर थान। २६ ।
सोसुचिन्ह गज देषो जाम।जाती सुमरण उपजो ताम ॥
ततखिनशाँतभयोगजईश। मुनिकेचरणधरीनिजशीश२७
तब मुनिचवे मधुर धुनिमहा। रेगयंद यह कीनो कहा ॥
हिंसा कर्म परम अघहेत । हिंसा दुर्गत्ति के दुखदेत।२८।
हिंसासों भ्रमये संसार । हिंसा निजपर को दुखकार ॥
तें येजीव विध्वंसे आय । पातक तैंनडरो गजराय ।२८।
देख देख अघके फलकौन । लई विप्रतैं कुंजर जौन ।

१ सारे संगमै हलचल पड़गई और मनुष कोक कहिये मैंडक कैसी धुनि अर्थात रूका पुकार करते हुये भागे ॥

तूमंत्री मरुभूत सुजान। मैं अरविंद क्यों न पहिचान।२९।
धर्म विमुख आरत के दोष । पशु परयाय लईदुखपोष ॥
अब गजपति यह भाव निवार।धर्म भावना हिरदैधार।३०।
सम्यक दरशन पूरब जान । पाल अणू व्रतजबलों प्रान ॥
सुन करिंद्रउरकोमल थयो।किये[1]पापनिज निंदकभयो।३१।

॥ दोहा छंद ॥

फिर गुरु पायन सिर धरो, धर्म गहन उर हेत ॥
तब सत्यारथ धर्म बिध, कही साधु समचेत ॥ ३२ ।

॥ चौपाई छंद ॥

सुन हस्ती शासन अनुकूल । सकल धर्म को दर्शनमूल॥
सब गुण रत्न कोषयहजान मुक्ति[2]धवलहरिधुरसोपान।३२।
सबैनेम व्रतविंदी कही । सम्यक अंकएक सो सही ।३४।
तातैं यह सबही कों सार । याबिन सब आचर्ण असार॥
जहां यथारथ दिष्टि प्रकास । दर्शननाम कहावैतास ॥
जोसरदहै और की और । सोमिथ्यातभाव कीदौर।३५।

१—पाप जो किये इस कारण अपने को निंदक भयो ॥
२—सम्यक दर्शन मुक्ति रूप उजले पहाड़ की हदतक चढ़ने के लिये सीढ़ी है ॥

दोषअठारहैं बरजित देव। दुविध संगत्यागी गुरुएव ॥
हिंसाबरजितधर्मअनूप। यहसरधासमकितकोरूप। ३६।

॥ दोहा छंद ॥

शंकादिक दूषन बिना, आठो अंग समेत ॥
मोखवृत्त अंकूर यह उपजै भविउर खेत। ३७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अंगहीन दर्शन जगमाहिं। भवदुख मेटन समरथनाहिं ॥
अक्षर ऊनमंत्र जोहोय। विष बाधामेटै नहिं सोय। ३८।
तातैं यह निरगौ उरआन। धराहिरदै सम्यक सरधान ॥

१—भूख १ प्यास २ भय ३ द्वेष ४ राग ५ मोह ६ चिंता ७ बुढ़ापा ८ मृत्यु ९ खेद १० स्वेद अर्थात् पसीना ११ मद १२ रति १३ विस्मय १४ जन्म १५ निद्रा १६ रोग १७ शोक १८ ॥

२ बाहर के परिग्रह १ जो १० हैं, अंतर के परिग्रह २ जो १४ हैं ॥

३ सम्यक्त के आठदोष—शांकित अर्थात् जिन वचन मैं शंका करना १ कांक्षित अर्थात संसार के सुखकी इच्छा करना २ विचिकित्सा मुनीजन वा धर्मी पुरुष से ग्लानी करना ३ मूढ़ता अर्थात तत्व कुतत्व की पहिचान न करना ४ अनुपगुहणता अर्थात पराये औगुण अपने गुण न ढकना ५ अप्रभावना अर्थात अपने धर्मकी उन्नति की उमंग न करना ६ असुस्थीकरण अर्थात आप वा परको धर्म से छिगती अवस्था में धर्मपर स्थिर न करना ७ अवात्सल्य अर्थात धर्मी पुरुषों से अऊँवच्छ सम प्रीत न करना ८ इनके विपीत आठ अंग सम्यक्त के जानना यथा निशंकित १ निकांक्षित २ निर्विचिकित्सा ३ अमूढ़ता ४ उपगुहणता ५ प्रभावना ६ सुस्थीकरण ७ वात्सल्य ८

पंचे[1] उदंबर तीनें[2] मकार । इनकों तज बारैह[3] व्रतधार ।३९।
इहिविध गुरु दीनो उपदेश । वारण हरषित भयो विशेष ॥
सुगुरु बचन सब हिरदै धरै । सम्यक पूरब व्रत आदरै ।४०।
बार बार भुमिसों सिरलाय । मुनिवर चरण नमै गजराय ॥
चलेसाध तिहिंहितउपजाय । तबहाथीआयोपहुँचाय ।४१।

॥ दोहा छंद ॥

कर उपगार मुनीश तहां, कीनो सुबिध बिहार ॥
वन निवसै गजपति व्रती, सुगुरु सीख उरधार ।४२।

॥ १४ मात्रा चाल छंद ॥

अबहस्ती संजम साधै । त्रसजीव न मूल विराधै ॥
समभाव क्षिमा उरआनै । अरि मित्र बराबर जानै ।४३।
काया कस इंद्री दंडै । साहस धर प्रोषद मंडै ॥
सूके तृण पल्लव भच्छै । पर मर्दित मारग गच्छै ।४४।
हाथीगण डोहो पानी । सोपीवै गजपति ज्ञानी ॥
देखेबिन पाँव नराखै । तन पानी पंक न नाखै ।४५।
निजशील कभी नाहिं खोवै । हथनी दिश मूलन जोवै ॥

१–ऊँवरफल १ कठूँवर फल २ पीपल फल ३ बड़फल ४ गूलर फल ५ ॥
२–मांस, मधु, मदिरा ॥
३–देखो चतुर्थ अधिकार मध्ये ६८ चौपाई आदि १०७ पर्यंत ॥

उपसर्ग सहे अतिभारी। दुर्ध्यान तजे दुखकारी। ४६।
अघके भय अंग न हाले। दिढ़धीर प्रतिज्ञा पाले॥
चिरलों दुद्धर तप कीनो। बलहीन भयो तनछीनो।४७।
परमेष्ठि परम पद ध्यावे। ऐसे गज काल गमावे॥
एकै दिन अधिक तिसायो। तब बेगवती तट आयो।४८।
जल पीवन उद्यम कीधो। कांदोद्रह कुंजर बीधो॥
निश्चै जब मरण बिचारो। संन्यास सुधीतब धारो।४९।
सो कमठ कलंकी मूयो। तावन कुरकट अहि हूयो॥
तिनआय डसो गजज्ञाता। यह बैर महादुख दाता।५०।

॥ दोहा छंद ॥

मरण करो गजराज तब, राखे निर्मल भाव॥
स्वर्ग बांरवें सुरभयो, देखोधर्म प्रभाव। ५१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तहां स्वयंप्रभनामबिमान। शशिप्रभदेवभयोतिहिंथान॥
अवधिजोड़सबजानोदेव। व्रतकोफलपूरबभवभेव। ५२।
जिनशासन शंसो बहुभाय। धर्म विषै दिढ़ता मनलाय॥
सदा सास्ते श्रीजिन धाम। पूजाकरी तहाँ अभिराम।५३।
महामेरु नंदीसुर आदि। पूजे तहँ जिन बिंब अनादि॥

कल्याणक पूजा विस्तरै । पुन्न भँडार देव यों भरै । ५४ ।
सोलह सागर आयु प्रमान । सांढ़े तीन हाथ तनजान ॥
सोलहसहसवर्षजबजाहिं । अशनचाहउपजैउरमाहिं।५५।
अनुपम अमृत मय आहार । मनसों भुंजै देव कुमार ॥
आठदुगन पषबीतैंजास । तबसोलेयसुगंधउसाँस । ५६ ।
अवधि चतुर्थ अवनी परयंत । यही विक्रयाबलविरतंत॥
अवधिक्षेत्रजावतपरमान । होयविक्रयातावतमान । ५७ ।

॥ दोहा छंद ॥

बदन चंद्र उपमाधरै, बिकसत बारिज नैन ॥
अंग अंग भूषण लसैं, सब बानक सुखदैन । ५८ ।
सुंदर तन सुंदर बचन, सुंदर स्वर्ग निवास ॥
सुंदर बनता मंडली, सुंदर सुरगण दास । ५९ ।
अणिमा महिमा आदि दे, आठ ऋद्ध फलपाय ॥
सुर सुरेंद्र क्रीड़ा करै, जो मन बरतै आय । ६० ।
सुनत गीत संगीत धुनि, निर्षत निरत रसाल ॥
सुख सागरमें मगन सुर, जात नजानैकाल ।६१।
लोकोत्तम सब संपदा, अनुपम इंद्री भोग ॥
सुफलफलोतपकलपतरु, मिलोसकलसुखजोग । ६२ ।

१–अर्थात सोलह पखवारे ॥

जैवंतो बरतो सदा, जैन धर्म जग माहिं ॥
जाके सेवत दुख समुद, पशुपंछी तिरजाहिं। ६३।

२३ मात्रा छंद चाल–यह परमादी जीव, जग जंजाल परोजी,

इसही जंबूदीप, पुर्व विदेह मझारे।
पहुप कलावती देश, विकसत नैन निहारे।६४।
तहां विजयारध नाम, सोहै शैल रवानो।
उज्जल वरण विशाल, रूप मई गिररानो।६५।
योजन परम पचांस, भूमि विषै चोड़ाई।
तुंग पँचांस प्रमाण, शोभा कहियनजाई।६६।
चौथाई भूमांझ, नौसिर कूट विराजैं।
सिद्ध शिखराजिन धाम, मणिप्रत्मातहां छाजैं।६७।
उत्तर दक्षण ओर, श्रेणी दोय जहां हैं।
दोय गुफा गिरहेठ, अति अंधियारतहां हैं।६८।
तापर स्वर्ग समान, लोकोत्तम पुरसो है।
बापी कूप तलाव, मण्डित सुरमन मोहै।६९।
विद्युत गतिभूपाल, न्यायप्रजाप्रत पालै।
नीत निपुण धर्मज्ञ, संत सुमारग चालै।७०।
विद्युत मालानांव,ताघर नार सयानी।

मानो मन मथ जोग, आय मिली रतिरानी ।७१।
तिनकैसो सुरआय, पुत्र भयो बड़भागी ।
अग्नि बेग तसुनाम, अति सुंदर सौ भागी ।७२।
सोमप्रकृतिपरवीन, सकलसुलक्षण धारी ।
जिन पद भक्ति पुनीत, सबहीं को सुखकारी ।७३।
राज संपदा भोग, भुंजित पुन्न नियोगे ।
एक दिना इनसाध, भेटे भाग संजोगे ।७४।
श्रवन सुनो उपदेश, भर योवन बैराग्यो ।
आसन भव्य कुमार, संजम सों अनुराग्यो ।७५।
तज परिग्रह गुरसाष, पंचमहा व्रतलीने ।
दुद्धर तप आराध, रागादिक कृषकीने ।७६।
छीन किये परमाद, बिचरैं एक बिहारी ।
बारेह[1] अंग समुद्र, पार भयो श्रुत धारी ।७७।
एक दिवसधर योग, हिमगिर कंदरमाहीं ।
निवसै आतम लीन, बाहर की शुधनाहीं ।७८।

॥ दोहा छंद ॥

कुर्कट नामा कमठचर, दुष्टनाग दुखदाय ।
सोमर पंचम नरकमें, परो पाप बशजाय ।७९।

१-शास्त्र अंग ११ पूर्व १४ अंग १ सर्व १२ हुये ।

छेदन भेदन आदि बहु, तहां बेदना घोर।
सहस[1] जीभसों वरणये, तउब न आवै ओर।८०।
ऐसे दुख में कमठजी, कीनी पूरण आव।
सत्रह सागर भुगतकै, निकसो कूरसुभाव।८१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

वैर भाव उरतैं नहिं टरो। फेर आय अजगर अवतरो ॥
संसकारबशआयोतहां। हिमगिरगुफामुनीश्वरजहां।८२।
गिले[2] साध संजम धरधीर। सम भावन तैं तजो शरीर ॥
लीनोस्वर्गसोलिवेंबास। जोनितनिरुपमभोगनिवास।८३।
जन्म सेज तैं योवन पाय। उठो अमर संपूरण काय ॥
देखसंपदाविस्मय भयो। अवधि होत संशयसबगयो।८४।
पूजाकरी जिनालय जाय। भाव भक्ति रोमांचित काय ॥
पूरवसंचितपुन्नसंजोग। करै तहां सुर वंछित भोग।८५।
गए वर्ष बाईसहजार। भोजन भुंजै मनसाहार ॥
तावतमानपक्ष जब जाय। तब ऊसाँसो दिशमहकाय।८६।
देषै पंचम भूपरयंत। अवधि ज्ञान बलै मूरति[3] वंत।
तितने मानविक्रिया करै। गमनागमन हिये जबधरै।८७।

१-ऐसे स्थान में सागर बड़ा समझना चाहिये।
२-अर्थात् निगले ॥
३-भावार्थ मूर्तिवंत पदार्थ कोदेखैं ॥

तीन हाथ अति सुंदर काय । लेश्या शुकलमहा सुखदाय ॥
थितसागरबाईसबिशाल । इहि बिधबीतेसुखमेंकाल ।८८।

॥ दोहा छंद ॥

आदि अंत जिस धर्मको, सुखी होंय सबजीव ।
ताको तनमन बचनकर, हेनर सेव सदीव । ८९ ।

श्री पार्श्वपुराण भाषा वज्र घोष गजका बारवैं स्वर्ग पैं देव होकर फिर बिद्युतगति नाम भूपालघर जन्मलेसोलवें स्वर्ग में देव होना वर्णननाम द्वितिय अधिकार संपूर्णम्

॥ तृतिय अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

अश्व सेन कुल कमल रवि, बामा कुमर कृपाल ॥
बंदू पारस चरण युग, सरनागति प्रतिपाल । १ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जंबू दीप बसै बहु फेर । जाके मध्य सुदर्शन मेर ॥
कंचन मणिमयअतुल सुहाग । ता पर्वत केपश्चिमभाग ।२।
अपर विदेह बिराजे खेत । सो नित चौथे काल समेत ।

पद्पद जहांदिपैं जिन धाम। नहींकुदेवन कोविश्राम। ३।
जैनयती जन दीखैं सोय। नहीं कुलिंगी दीखै कोय॥
उत्तम धर्म सदाथिर रहै। हिंसा धर्म प्रकाशनलहै। ४।
तीनों बरणबसैं जहां लोय। बाह्मनबरण कभी नहिंहोय॥
तामें पद्म देश अभिराम। सोहै नगर अश्वपुरनाम।५।
तहां बज्रवीरज भूपाल। न्यायै प्रजा करै प्रतिपाल॥
गुणनिवास सूरजसमदिपै। आनभूपउड़गणछबिछिपै।६।
विजया नामैं नरपति नार। रूपवंत रतिकी उनहार॥
पटरानी सब मैं परधान। पूरब पुन्न उदय गुणखान। ७।
एकसमैं निश पश्चिम जाम। पंच सुपन देषे अभिराम॥
मेरु दिवाकर चंद्र बिमान। सजल सरोवर सिंधुसमान।८।
प्रातभये आई पियपास। बिकसत लोचन हिये हुलास॥
रात सुपन अवलोके जेह। नृप आगे परकाशे तेह। ९।
तब नरेन्द्र बोले बिकसाय। सुंदर बचन श्रवन सुखदाय॥
सुनरानी इनको फल जोय। पुत्र प्रधान तुम्हारे होय।१०।
ऐस बचन पियके अवधार। अति आनंद भयो नृपनार।
अचुत स्वर्गतें सोसुरचयो। बजूनाभि नामा सुतभयो।११॥
चौसंठ लच्छण लच्छितकाय। पुन्नयोग जिम उतरोआय॥
जन्ममहोच्छवराजाकियो। जिनपूजेयाचकधनदियो।१२।

१—जोजन दीखैं सो जैन यती दीखैं॥
२—पुन्नके समय की तरह आ उतरा॥

बढ़ै बालजिमबालक चंद। सुजन लोक लोचन सुखकंद।
क्रमक्रमसोंशिशुभयोकुमार। पढ़लीनीबिद्यासबसार।१
जोबनवंत कुमर जबभयो। निर्मल नीतपंथ पगठयो।
रूपतेजबलबुद्धिविज्ञान। सकल सारगुणरत्ननिधान।१
कीनी पिता ब्याह बिधयोग। राजसुता बहुवरी मनोग।
क्रमकरकुमरपितापदपाय। राजकरैथुतिकरियनजाय।१५।
पुन्नजोग आयुध ग्रह जहाँ। चक्ररत्न बरउपजो तहाँ॥
छहों खण्ड बरती भूपाल। बशकीने नाये निजभाल।१६।
देवदैत्य बिद्याधर नये। नृप मलेच्छ सब सेवक भये॥
बढ़ी संपदा पुन्न संयोग। इन्द्रसमानकरैसुखभोग।१७।

॥ दोहा छंद ॥

संपूरण सुख भोगवै, बज्रनाभि चक्रेश॥
तिस बिभूति बल बरनऊँ, यथाशक्ति लवलेश।१८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सहँसबतीस सास्ते देश। धनकन कंचन भरे विशेष॥
विपुलबाड़ बेढ़े चहुंओर। तेसब गांवैं छांनवें कोर। १९।
कोटे कोट दरवाजे चोर। ऐसे पुर छब्बीसैंहँजार॥

१— प्रति पुरके कोट में चार दरवाजे॥

जिनकेलगैं पांचसौ गांव। तेअटंबचउसहससुठांव। २०।
र्बत और नदी के पेट। सोलैहंसहसकहे वेखेट॥
र्वट नाम सहंसचौबीस। केवल गिरवरबेढ़े दीष। २१।
त्तन अड़तालीसहंजार। रत्न जहां उपजैं अतिसार॥
कलाख द्रोणामुख बीर। सहंसघाट सागर के तीर।२२।
गेर ऊपर संबाहन जान। चौदेहंसहस मनोहर थान॥
अट्ठाईस हज़ार अशेश। दुर्गजहां रिपुको न प्रवेश। २३।
उपसमुद्रके मध्यमहान। अंतर दीप छपैन परिमान॥
रत्नाकर छबीसहंजार। बहु बिधसार बस्तु भंडार। २४।
रत्नकुच्छ सुंदर सातसै। रत्नधरा थानक जहँ लसै॥
इनपुर सूबस गजें खरे। जैनधाम धरमी जनभरे। २५।
बरगयंद चौरासीलाष। इतनेही रथ आगम साष॥
तेजतुरंग अठारह कोर। जेबढ़चलैं पवनतैंजोर। २६।
निचौरासीकोट प्रमाण। पायक संघ बड़े बलवान॥
छानवे वनता गेह। तिनको अबविवर्ण सुनलेह।२७।
आरजखण्ड बसैं नरईश। तिनकीकन्या सहसंबतीस॥
तिरूप रसाल। विद्याधर पुत्री गुणमाल।२८।
भूपन कीजान। राजकुमारी तावत मान॥
बत्तीसहंजार। चक्री नृपको सुख दातार।२९।
आदि संठान। पूर्व कथित तन लचणजान॥

बहुविधविंजनसहितमनोग । हेमवर्णतनसहजनिरोग ।३०।
छैहोंखण्ड भूपति बलरास । तिनसोंअधिकदेहबलजास ॥
सहंसबतीसचरण तलरमैं । मुकटबंधराजानितनमैं ।३१
भूपमलेच्छ छोड़ अभिमान । सहंसअठारह मानैआन ।
पुनिगण बद्धबखानै देव । सोलहंसहस करैं नृपसेव ।३२
कोटथाल कंचननिर्मान । लक्षकोट हलसहित किषान ॥
नाना वरण गऊकुल भरे । तीनकोटव्रजआगमधरे ।३३ ।

॥ दोहा छंद ॥

अब नवनिधि के नामगुण, सुनोयथारथ रूप ॥
जैनीबिन जानै नहीं, जिनको सहज स्वरूप ।३४।

॥ नवनिधनाम ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथम कालनिधि शुभ आकार । सो अनेक पुस्तक दात
महाकालनिधिदूजी कही । याकी महिमासुनयो सही ।२
असिमसि आदिक साधन जोग । सामग्री सबदे य मनोग॥
तीजी निधि नैसर्पमहान।नाना विधि भाजनकी [illegible]

१-छहोखण्ड के राजाओं की देह के बल के समूहसे चक्रवर्ती [illegible] बल अधिक है ॥

पांडुकनाम चतुरथी होय । सबरसधान समर्प्पै सोय ॥
पदम पंचमी सुकृतखेत । बंछितवसन निरंतर देत । ३७ ।
मानव नाम छठी निधिजेह । आयुधजाति जन्मभुमि तेह ॥
सप्तम सुभग पिंगलानाम । बहुभूषण अर्पैअभिराम । ३८ ।
शंखनिधान आठमी गनी । सब बाजित्र भूमिका बनी ॥
सर्बरत्ननौमी निधिसार । सोनितसर्व रत्न भंडार । ३९ ।

॥ दोहा छंद ॥

ये नौनिधि चक्रेश कै, सकटाकृत संठान ॥
आठचक्र संयुक्त शुभ, चौखूंटी सभजान । ४० ।
जोजन आठ उतंग अति, नवजोजन विस्तार ॥
बारहमित दीरघसकल, बसैंगगन निर्धार ।४१।
एकएक के सहंसमित, रखवाले यषदेव ॥
येनिधि नरपति पुन्नसों, सुखदायक स्वयमेव।४२।

॥ चौदह रत्न नाम ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथमसुदरशन चक्रपसत्थ । छंहो खण्डसाधन समरत्थ ॥
चंडवेग दिढ़ दंडदुतीय । जिसवल खुलेगुफा गिरकीय ।४३।

१-यक्षदेव ॥

चर्मरत्न सोत्रतिय निवेद । महा बज्रमई नीर अभेद ॥
चतुरथ चूड़ामणि मणि रैन । अंधकारनाशक सुखदैन ।४४ ।
पंचमरत्न काँकणी जान । चिंतामणि जाको अभिधान ॥
इनदोनों तें गुफामंभार । शशिसूरज लखयैनिर्धार । ४५ ।
सूरजप्रभ शुभ छत्र महान । सो अति जगमगाय ज्योंभान॥
सोनंदक असिअधिक प्रचंड । डरैंदेख बैरी बलवंड । ४६ ।
पुनिअजोध सेनापति सूर । जोदिग विजै करैबल पूर ॥
बुधसागर प्रोहित परबीन । बुधिनिधान विद्यागुणलीन ।४७।
थपितभद्र सुखनाम महंत । शिल्प कला कोविद गुणवंत ॥
कामवृद्धि ग्रहपति विख्यात । सभग्रह काजकरैंदेनरात ।४८।
व्याल बिजैगिरअति अभिराम । तुरगतेज पनंजै नाम ॥
बनतानाम सुभद्राकही । चूरै बज्र पानसों सही ।४९
महादेह बलधारै सोय । जापटतर तिय और न कोय ।
मुख्यरत्नयह चौदहजान । औररत्नको कौनप्रमान । ५० ।

॥ दोहा छंद ॥

राजअँग चौदह रतन , बिविधिभांत सुखकार ॥
जिनकीसुर सेवाकरैं , पुन्न तरोवर डार । ५१ ।
चक्रछत्र असिदंड मणि , चर्म कांकणी नाम ॥
सातँरत्न निर्जीवयह , चक्रवर्त्त के धाम । ५२ ।

सेनापति ग्रहपतिथपितै, प्रोहितै नाग तुरंग ॥
बनतांमिल सांतों रतन, ये सजीवसरबंग ।५३।
चक्रछत्र असिदंडये, उपजैं आयुध थान ॥
चर्म कांकणी मणिरतन, श्रीग्रहउतपति जान।५४।
गजतुरंग तियें तीनये, रूपाचलपर [illegible] ॥
चौंररतनबाकी बिमल, निजपुरलहैंउद्योत।५५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

[illegible]स्य संपदा को बिरतंत। आगे और सुनो मतिवंत ॥
सिंहबाहनी सेज मनोग। सिंहारूढ़ चक्रवै जोग। ५६।
आसनतुंग अनुत्तर नाम। मणिकजाल जटितअभिराम॥
[illegible] नामा चमर अनूप। गंगातरल तरंग सरूप।५७।
[illegible]ति दुतिमणिकुंडल जोट। छिपैऔर दुतिजाकीओट॥
कवचअभेद अभेदमहान। जामेंविधै न बैरीबान। ५८।
विषमोचनी पादुका दोय। परपदसों विषमुंचै सोय ॥
अजितंजे रथ महारवन्न। जलपैथलवत करैगवन्न। ५९।
[illegible]कांड, चक्रीधर चाप। जाहिचढ़ावै नरपति आप॥
[illegible] [illegible]थ जबैकरलेत। रणमेंसदा बिजैबरदेत। ६०।
[illegible] वज्रतुंडा अभिधान। शत्रुखंडनी शकती जान॥
[illegible]टकबरछी विकराल। रत्नदंडलागी रिपुकाल। ६१।

लोहबाहनी तिक्षणछुरी । जिसचमके चपला दुतिदुरी ॥
येसबवस्तु जाति भूंमाहिं । चक्रीछूटऔर घरनाहिं । ६२ ।

॥ दोहा छंद ॥

मनोवेग नामाकणाय , ग्रंथन कहो विख्यात ॥
खेटभूत मुखनाम है , दोनोंआयुध जात । ६३ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आनंदन भेरी दशदोय । बारह जोजनलों धुनिहोय ॥
बज्रघोष पुनि जिनकोनाम।बारहपटह नृपतिकेधाम । ६४ ।
बरगंभीरावर्त गरीश । शोभनरूप शंख चौबीस ॥
नानाबरणधुजारमणीय । अड़तालीसकोटमितकीय ।६५ ।
इत्यादिक बहुबस्तुअपार । वरणन करत न लहिये पार ॥
महलतणीरचनाअसमान । जिनमतकहीसोलीजोजान६६

॥ दोहा छंद ॥

चक्री नृपकी संपदा, कहै कहांलों कोय ॥
पुन्नबेल पूरबबई, फली सांघणी सोय । ६७ ।

१-बोई गई ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहि विधि बज्र नाभि नरराय । करै भोग चक्रीपदपाय ॥
धर्मध्यान अहनिश आचरै । निर्मल नीत पंथपग धरै ।६८।
पूजा कर चैत्यालय जाय । पूजै सदा सो गुरु के पाय ॥
सामायक साधै अघनास । करै परव प्रोषद उपवास ।६९।
चार प्रकार[1] दान नित देय । औगुण त्यागे गुणगह लेय ॥
सन्तशील पालै वड़भाग । मनबच काय धर्मसों राग । ७० ।
सिंहासन पर बैठ नरेश । करै पुनीत धर्म उपदेश ॥
सुजनसभाजनकिंकरलोग । देयसुहितशिक्षासबजोग।७१।

॥ दोहा छंद ॥

बीजराख फल भोगवें, ज्यों किसान जग माहिं ॥
त्योंचक्री नृपसुख करै, धर्मबिसारै नाहिं । ७२ ।

नरेन्द्र छंद जिसकी चाल जोगीरासा ॥ की ढाल है ॥

इहि बिधि राजकरै नरनायक । भोगे पुन्न विशालो ।
सुखसागर में रमत निरंतर । जात न जानै कालो । ७३ ॥

१—औषधि १ शास्त्र २ अभय ३ अहार ४ ॥

एक दिना शुभकर्म सँजोगे । छेमाकर मुनि बन्दे ॥
देखे श्री गुरु के पद पँकज । लोचन अलि आनन्दे । ७४ ।
तीन प्रदक्षना दे सिर न्यायो । कर पूजा थुति कीनी ॥
साधु समीप विनै कर बैठो । पायन में दिठ[1] दीनी । ७५ ।
गुरु उपदेशो धर्म शिरोमणि । सुन राजा वैरागे ॥
राज रमा बनतादिक जेरस । ते रस बेरस लागे । ७६ ।
मुनिसूरज कथनी किरणावलि । लगत भिरम बुधभागी ॥
भवतन भोग सरूप बिचारें । परम धरम अनुरागी । ७७ ।
इस संसार महावन भीतर । भ्रमते ओर न आवै ॥
जामण मरण जरादौं दाभो । जीव महादुख पावै । ७८ ।
कबही जाय नरक थिति भुंजे । छेदन भेदन भारी ॥
कबही पशु पर्याय धरे तहां । वध बन्धन भेकारी । ७६ ।
सुरगति में पर संपति देखै । राग उदय दुख होई ॥
मानुष जौनि अनेक विपत मय । सर्वसुखी नहिं कोई । ८० ।
कोई इष्ट वियोगी विलके । कोई अशुभ संजोगी ॥
कोई दीन दालिद्र विगूचे । कोई तन के रोगी । ८१ ।
किसही घर कलहारी नारी । कै बैरी सम भाई ॥
किसही के दुख बाहर दीखे । किसही उर दुठताई । ८२ ।
कोई पुत्र बिना नित भूरे । होय मरै तब रोवै ॥

१—दृष्टि अर्थात् नजर ॥

खोटी सन्तति सों दुख उपजत। क्यों प्रानीसुखसोवै। ८३।
पुन्नउदै जिनके तिनको भी। नाहिं सदा सुख साता॥
यों जग वास यथारथ देषत। सब दीषै दुखदाता। ८४।
जो संसार विषे सुख होता। तिर्थंकर क्यों त्यागैं॥
काहे को शिव साधन करते। संजम सों अनुरागैं। ८५।
देह अपावन अथिर घिनावन। यामैं सार न कोई॥
सागर के जलसों शुचि कीजे। तौभी शुचि नहिं होई। ८६।
सात कुधात मई मल मूर्ति। चाम लपेटी सोहै॥
अन्तर देखत यासम जगमें। और अपावन कोहै। ८७।
नवमल द्वारश्रवें निशबासर। नाँव लिये घिनआवे॥
व्याधि उपाधि अनेक जहां तहां। कौन सुधीसुख पावे। ८८।
पोषत तो दुख दोष करैसब। सोखत सुख उपजावे॥
दुर्जन देह स्वभाव बराबर। मूरख प्रीति बढ़ावे। ८९।
राचन जोग स्वरूप न याको। विरचन जोग सही है॥
यहतन पाय महा तपकीजे। यामें सारयही है। ९०।
भोग बुरे भवरोग बढ़ावें। बैरी हैं जग जीके॥
बेरस होहिं विपाक समै अति। सेवत लागें नीके। ९१।
बज्र अग्नि विषसों विषधर सों। ये अधिके दुखदाई॥
धर्म रतन के चोर चपल हैं। दुर्गति पंथ सहाई। ९२।
ज्यों ज्यों भोग सँजोग मनोहर। मन वंछित जन पावे॥
तृष्णा नागन त्यों त्यों डंकै। लहर जहर की आवे। ९३।

मोह उदै यह जीव अज्ञानी। भोग भले कर जानै॥
ज्यों ज्यों कोइजन खाय धतूरा। सोसब कंचन मानै। ९४।
मैं चक्री पद पाय निरन्तर। भोगे भोग घनेरे॥
तोभी तनक भएनहीं पूरन। भोग मनोरथ मेरे। ९५।
राज समाज महा अघ कारन। बैर बढ़ावन हारा॥
वेश्वासम लच्मी अति चंचल। इसका कौन पत्यारा। ९६।
मोह महा रिपु बैर बिचारा। जगजीय संकट डाले॥
घर काराग्रह बनिता बेड़ी। परियन जन रखवाले। ९७।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरनतप। ये जियके हितकारी॥
येही सार असार और सब। यह चक्री चितधारी। ९८।
छोड़े चौदह[१४] रत्न नवों निधि। अरु छोड़े संग साथी॥
कोड अठारह[१८००००००००] घोड़े छोड़े। चौरासी[८४०००००] लख हाथी। ९९।
इत्यादिक सम्पति बहुतेरी। जीरण तृण ज्यों त्यागी॥
नीत बिचार नियोगी सुतको। राजदियो बड़भागी। १००।
होय निशल्य अनेक नृपति संग। भूषण बसन उतारे॥
श्री गुरुचरन धरी जिन मुद्रा। पंच महा व्रतधारे। १०१।
धन यह समझ सुबुधि जग उत्तम। धन यह धीरजधारी॥
ऐसी संपति छोड़ बसे बन। तिनपद ढोक हमारी। १०२।

॥ दोहा छंद ॥

परिग्रह पोट उतार सब, लीनो चारित पंथ॥

निज स्वभाव में थिर भये, बज्रनाभि निर्ग्रंथ । १०३ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बारह विधि दुद्धर तप करै । दस लाछनी धर्म आचरै ॥
पढ़ै अंगपूरव श्रुतिसार । एकाकी विचरै अनगार । १०४।
ग्रीषम काल बसै गिर शीश । बर्षा में तरुतल मुनिईश ॥
शीत मास तटनी तट रहैं।ध्यान अगिनि में कर्मनिदहैं[1]। १०५।
एक दिना बनमें थिरकाय । जोग दिये ठाढ़े मुनिराय ॥
कमठजीवअजगरतनछोर।उपजोछठेनरकअतिघोर।१०६।
थित सागर बाईस प्रमाण । देखे दुख जानै भगवान ॥
पूरनआव भोगकरमरो। विहनकुरंग भीलअवतरो।१०७।
काल सरूप बदन विकराल । बनचर जीवनको छैकाल ॥
धनुषबान लीयेनिजपान। भ्रमैंमांस लोभीबनथान।१०८।
सो पापी चलआयो तहां । जोगारूढ़ खड़े मुनि जहां ॥
शत्रुमित्रसों समकरभाव । लगेआपमें शुद्धस्वभाव।१०९।
कुंकुम कादो महल मसान । कोमल सेज कठिन पाषान ॥
कंचनकाच दुष्ट अरुदास । जीवनमरन बराबरजास।११०।
निर्ममत्त तनकी सुधि नाहिं।सातोंभय वरजित उरमाहिं॥
देषदिगम्बरकोपोनीच। कंपतअधर दशनतलभींच।१११।

[1]—निदहै अर्थात् जलावै ॥

तान कमान कानलों लई । तिच्छण शर मारो निर्दई ॥
मुनिवरधर्म ध्यानआराध।दुखमें धीरजतजो नसाध।११२।
दर्शन ज्ञान चरन तपसार । चारो आराधन चितधार ॥
देहत्यागतव भयेमुनिंद्र । मध्यम ग्रैवेयक अहमिंद्र। ११३।
तहां[1] उत्पाद शिला निकलंक । हंसतूल युत रत्न पलंक ॥
उठोसेजतज देखतकाय । अलपकाल मैं योवनपाय।११४।
देखै दिशिअति विस्मयरूप । महा मनोग विमानअनूप॥
अतुलतेजअहमिंद्रनिहार ।अवधिज्ञानउपजोतिहिंवार ११५
जानोसम पूरब भव भेव । चारित वृक्षफलो सुखदेव ॥
अनुपम आठों दरब संजोय।रत्नाविंव पूजेथिरहोय। ११६ ।
आयोसुर हर्षितु निजथान । महारिद्ध महिमा असमान ॥
तीनभवनवरतीजिनधाम।भावभक्तिनितकरैंप्रणाम ।११७।
तिर्थंकर केवलि समुदाय । निज थानक थित पूजेपाय ॥
पंचकळयानक कालविचार ।प्रणमेंहस्त कमलसिरधार११८।

॥ दोहा छंद ॥

अनाहूत अहमिंद्र गण, आवैं सहज स्वभाव ॥
धर्मकथा जिनगुण कथन, करैं सनेह बढ़ाव । ११९ ।

१—तिस स्थान में उत्पन्न होने की शिल्प निकलंक है और रतन युत पलंग हंस कहिये सूर्य्य जिसकी तुल्य प्रकाशित है ॥

कबहीं रत्न बिमान मैं, कबहीं महल मझार ॥
कबहीं बनक्रीड़ा करैं, मिल अहमिंद्र कुमार। १२०।
और बास निज बासतैं, उत्तम देखै नाहिं ॥
ताहीतै तैं अमर गण, और काहिंनहिं जाहिं। १२१।
प्रीत भरे गुण आगरे, शुभग सोम श्रीवन्त ॥
सातधात मलसोंरहित, लेश्या शुकल धरन्त। १२२।
सब समान संपति धनी, सब मानैं हम इन्द्र ॥
कलाज्ञान विज्ञानसम, ऐसेसुर अहमिंद्र। १२३।
शुकल बरन तन मन हरन, दोयहाथ परिमान ॥
मानोप्रतमा फटक की, महातेज दुतिवान। १२४।
काम दाह उरमें नहीं, नहिं बनिता को राग ॥
कल्पलोक के सुरसुखी, असंख्यात वें भाग। १२५।
सत्ताईस हजार मित, वर्षबीत जब जाहिं ॥
मानसीक आहारकी, रुचि उपजै मनमाहिं। १२६।
साढ़े तेरह पक्षपर, लेत सुगंध उसास ॥
छठीअवनिलोंजिनकही, अवधिबिक्रियाजास। १२७।
सागर सत्ताईस मित, परम आवर्तिहिं थान ॥
शुभग सुभद्र बिमान मैं, यों सुखकरैं महान। १२८।

१- नरक में सर्व जन्म अस्थान अन्ध अधोमुख योनी और टाल के आकार हैं घिनावनी कठिन बास दुख स्थान हैं

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अभसो भील महादुख दाय । रुद्रध्यान सों छोड़ीकाय ॥
मुनिहत्या पातक तैं मरो । चरम शुभ्र सागर में परो । १२९ ।

॥ दोहा छंद ॥

कथा तहां के कष्टकी; कोकर सकै बखान ॥
भुगतै सो जानै सही, की जानै भगवान । १३० ।

॥ नरक कथन ॥

॥ दोहा छंद ॥

जन्म थान सब नरक में, अन्धअधो मुखजौन ॥
घंटाकार घिनावनी, दुसह बास दुख भौन । १३१ ।
तिनमें उपजें नारकी, तलासिर ऊपर पाय ॥
विषम बज्र कंटक मई, परें भूमिपर आय । १३२ ।
जोविषले बीछू सहँस, लगै देह दुखहोय ॥
नरक धराके परस तैं, सरस वेदना सोय । १३३ ।
तहां परत परवान अति, हाहा करते राम ॥

१—अंतिम नरक अर्थात् सातवां नरक

ऊँचे उछलैं नारकी, तये तवा तिल जेम ।१३४।

॥ सोरठा छंद ॥

नरक सातवें माहिं, उछलन जोजन पांचसै ॥
और जिनागम माहिं, यथायोग सब जानियो ।१३५।

॥ दोहा छंद ॥

फेर आन भू पर परैं, और कहां उठजाहिं ॥
छिन्नभिन्नतनअतिदुखित,लोटलोटबिलकाहिं।१३६।
सबदिश देख अपूर्व थल, चकित चितभयवान ॥
मन सोचे मैं कौनहूं, परो कहां मैं आन ।१३७।
कौन भयानक भूमि यह, सब दुख थानकानिंद ॥
रुद्र रूप ये कौन हैं निठुर नारकी वृन्द ।१३८।
काले बरन कराल मुख, गुञ्जा लोचन धार ॥
हुँडक डील डरावने, करें मारही मार ।१३९।
सुजन न कोई दिठ परे, शरन न सेवक कोय ॥
ह्यां सो कुछ सूझै नहीं, जासों छिन सुखहोय ।१४०।
होत विभंगा[1] अवधि तब, निजपर को दुखकार ॥
नरक कूप में आपको, परो जान निरधार ।१४१।

१—पहले जन्मों के खोटे काम किये हुये याद आना ॥

पूरब पाप कलाप सब, आप जाप कर लेय ॥
तब विलापकी ताप तप, पश्चाताप करेय। १४२।
मैं मानुष परयाय धर, धन योवन मद लीन॥
अधम काज ऐसे किये, नरक बास जिन दीन। १४३।
सरसों समसुख हेततब, भयो लंपटी जान ॥
ताही को अबफल लगो, यह दुखमेरुसमान। १४४।
कंदमूल मद मांस मधु, और अभक्ष अनेक॥
अक्षण वस भक्षण किये, अटक न मानी एक।१४५।
जलथल नभचारी विविध, बिलबासी बहुजीव ॥
मैं पापी अपराध विन, मारे दीन अतीव। १४६।
नगर दाह कीनो निठुर, गाम जलाये जान ॥
अटवी में दीनी अगिन, हिंसाकर सुखमान।१४७।
अपने इन्द्री लोभको बोलो मृषा अलीन ॥
कलपित ग्रंथ बनायके, बहकाये बहुदीन। १४८।
दाव घात परपंच सों, पर लक्ष्मीहर लीय॥
छलबल हठबलदिरबबल, परबनितावशकीय।१४९।
बढ़ी परिग्रह पोटसिर, घटी न घटकी चाह ॥
जो ईंधनके योग सों, अगिन करै अतिदाह।१५०।
बिन छानो पानी पियो, निश भुंजो अविचार ॥
देव दरब खायो सही रुद्रध्यान उर धार।१५१।

कीनी सेव कुदेव की, कुगुरुन को गुरु मान ॥
तिनहीं के उपदेश सों, पशु होमे हितजान।१५२।
दियो न उत्तम दानमैं, लियो न संयम भार ॥
पियोमूढ़ मिथ्यात मद, कियो न तप जग सार।१५३।
जो धर्मीजन दयाकर, दीनी शीष निहोर ॥
मैं तिनसों रिस कर अधम, भाषे वचन कठोर।१५४।
करी कमाई परजनम, सोआई मुझ तीर ॥
हाहा अब कैसेधरूं, नरक धरामें धीर।१५५।
दुर्लभ नर भव पायकै, केई पुरुष प्रधान ॥
तपकर साधैं स्वर्ग शिव, मैं अभाग यह थान।१५६।
पूरव संतन यों कही, करनी चालेलार ॥
सोअब आँपन सों दिषै, तव न करी निर्धार।१५७।
जिस कुटंब के हेत मैं, कीने बहुविधि पाप॥
ते सब साथी बीछड़े, परो नरक मैं आप।१५८।
मेरी लछमी खानकों, सीरी हुये अनेक ॥
अबइस विपत विलाप मैं, कोई न दीषै एक।१५६।
सारस सरवर तजगये, सूखो नीर निराट॥
फलबिन बिरष विलोक कै, पच्छी लागे बाट।१६०।
पंचकरण पोषण अरथ, अनरथ किये अपार ॥
ते रिपु ज्यों न्यारे भये, मोह नरक मैं डार।१६१।
तब तिलभर दुख सहन को, हुतो अधीरज भाव ॥

अबये कैसे दुसह दुख भरहूँ दीरघ आव । १६२ ।
अघ वैरी के वश परो, कहाकरूं कितजाउं ॥
सुनैकौन पूछे किसैं शरन कोन इसठाउं । १६३ ।
यहां कछू दुख हतन को, उक्त उपाव न मूर ॥
थिति बिन विपत समुद्र यह, कब तिरहूं तट दूर।१६४।
ऐसी चिंता करतहूं, बढ़े वेदना एम ॥
घीव तेल के योग तें, पावक प्रज्वले जेम । १६५ ।

॥ सोरठा छंद ॥

इहिं बिधि पूरब पाप, तहां नारकी शुधकरें ॥
दुखउपजावन जाप, होय विभंगा अवधितै । १६६ ।

॥ दोहा छंद ॥

तबही नारकि निर्दई, नयो नारकी देष ॥
धायधाय मारन उठै महादुष्ट दुर्भेष । १६७ ।
सबक्रोधी कलही सकल सबके नेत्र फुलिंग ॥
दुःख देनको अति निपुन, निठुर नपुंसक लिंग ।१६८।
कुंत कृपान कमान शर शकती मुगदर दंड ॥
इत्यादिक आयुध विविधि, लियेहाथ परचंड । १६९।
कहकठोर दुर्वचन बहु, तिलतिल खंडें काय ॥

सो तबही वहि कालतन, पारे वत मिलजाय। १७०।
कांटोंकर छेदैं चरन, भेदैं मरम बिचार॥
अस्थिजाल चूरण करैं, कुचलैं खाल उपार।१७१।
चीरैंकरवत काठ ज्यों, फारैं पकर कुठार॥
तोड़ैं अंतरमालका अंतर उदर बिदार। १७२।
पेलैं कोल्हू मेलके, पीसैं घरटी घाल॥
तावैं ताते तेल में, दहैं दहन परज्वाल। १७३।
पकरपांय पटकैं पहुमि, झटक परसपर लेहिं॥
कंटक सेज सुवावहीं, शूली पर धरदेहिं। १७४।
घसैं सकंटक रूखसों, बैतरनी ले जाहिं॥
घायल घर घसीटयें, किंचित करुणा नाहिं। १७५।
केईरक्त चुवाव तन, बिहवल भाजैं ताम॥
पर्वत अंतर जायके, करैं बैठ बिश्राम। १७६।
तहां भयानक नारकी धार विक्रया भेष॥
बाघ सिंह अहि रूप सों दारैं देह विशेष। १७७।
केई करसों पायँ गहि, गिरसोंदेहिं गिराय॥
परैंआन दुर्भूमि पर, खंड खंड होजाय। १७८।
दुखसों कायर चित्तकर, ढूँढैं शरन सहाय॥
वे अति नर्दय घातकी, यहअति दीन घिघाय। १७९।
व्रण वेदन नीकी करैं ऐसेकर विश्वास॥
सींचें खारे नीर सों, जोअति उपजै त्रास। १८०।

केई जकर जँजीर सों, खेंचथंभ अतिबांध ॥
शुध कराय अघ मारवैं, नाना आयुध साध । १८१ ।
जिनउद्धत अभिमान सों कीने परभव पाप ॥
तपत लोह आसन विषै, त्रास दिषावें थाप । १८२ ।
ताती पुतली लोहकी, लाय लगावें अंग ॥
प्रीतकरी जिन पुर्वभव, परकामिनि के संग । १८३ ।
लोचन दोषी जानिकै, लोचन लेहिं निकाल ॥
मदिरा पानी पुरुष कों, प्यावैंताँबो गाल । १८४ ।
जिन अंगनसों अघकिये, तेई छेदे जाहिं ॥
पल भक्षण के पापतें, तोड़ तोड़ तन खाहिं । १८५ ।
केई पूरव वैरके, याद दिवावें नाम ॥
कह दुर्बचन अनेक बिधि, करैं कोप संग्राम । १८६ ।
भये विक्रिया देह सों वहुविधि आयुध जात ॥
तिनही सों अति रिसभरे, करैं परस्पर घात । १८७ ।
शिथिल होंय चिर युद्धतें, दीन नारकी जाम ॥
हिंसानंदी असुर दुठ, आन भिरावें ताम । १८८ ।

॥ सोरठा छंद ॥

तृतिय नरक परयंत, असुरादिक दुखदेत हैं ॥
भाषोजैन सिधन्त, असुर गमन आगे नहीं । १८९ ।

॥ दोहा छंद ॥

इहिविधि नरक निवासमैं, चैनएकपलनाहिं ॥
तपैं निरंतर नारकी, दुख दावानल माहिं ।१९०।
मार मार सुनिये सदा, छेत्र महा दुर्गंध ॥
वहैबाल असुहावनी, अशुध छेत्र सम्बंध।१९१॥
तीनलोक को नाज सब, जो भक्षन कर लेय॥
तोभी भूख न उपशमैं, कोन एक कण देय।१९२॥
सागरके जलसों जहां, पीवतप्यास न जाय॥
लहै न पानी बूंदभर, दहै निरंतर काय। १९३।
बाय पित्त कफ जनितजे, रोगजात जावंत॥
तिनसबरहा को नरक में, उदै कह्यो भगवंत।१९४।
कटुतुँबी सो कटुक रस, करवत कीसी फाँस॥
जिनकी मृतक मंझार सों, अधिक देह दुर्बास।१९५।
योजन लाख प्रमाण जहां, लोह पिंडगलजाय॥
ऐसीही अति उश्नता, ऐसीशीत सुभाय।१९६।

॥ अडिल छंद ॥

पंकप्रभा परयंत उशनता जिन कही।

१—चौथा नरक ॥

धूमप्रभामैं शीतउश्न दोनो सही॥
छँटी सातमी भूमि न केवल शीत है।
ताही उपमा नाहिं महा बिपरीत है।१९७।

॥ दोहा छंद ॥

स्वान स्याल मंजारकी, पड़ी कलेवर रास॥
मासवसा अरु रुधिर को, कादा जहां कुवास।१९८।
ठाम ठाम असुहावने सेंभल तरु वर भूर॥
पैंने दुखदेंने विकट, कंटक तलतक सूर।१९९।
और जहां असिपत्र बन, भीम तरोवर खेत॥
जिनके दल तरवारसे, लगत घाव करदेत।२००।
वैतरनी सरिता समल, लोहित लहर भयान॥
वहैषाद शोणित भरी, मासकींच घिन घान।२०१।
पक्षी बायस गीधगण, लोहतुंड सों जेह॥
मरम बिदारैं दुख करैं चूंटैं चहुँदिश देह।२०२।
पंचेंद्री मनको महा, जे दुखदायक जोग॥
तेसव नरक निकेत मैं, एक पिंड अमनोग।२०३।
कथा अपार कलेश की, कहै कहांलो कोय॥
कोड़ जीभसों बरनिये, तवव न पूरीहोय।२०४।

१—पांचवा नरक॥

सागरबंध प्रमाणथिति, छिनछिन तिक्षणत्रास ॥
येदुख देषें नारकी, परवश परे निरास ॥
जैसी परवश बेदना, सहै जीव बहु भाय।
स्ववश सहै जो अंशभी, तौ भवजल तिरजाय।२०६।
ऐसे नरकहि नारकी, भयो भील दुठ भाव ॥
सागर सत्ताईसँ की, धारी मध्यम आव । २०७।
सागर काल प्रमाण अब, बरनूँ औसर पाय॥
जिनसोंनरकनिवास की, थितिसबजानीजाय।२०८।

॥ सागर प्रमाण कथन ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पहले तीन पल्ल के भेव। एक चित्त कर सो सुनलेव।
जिनसोंसागर उपजैसही।यथारीतजिनशासनकही॥२०९॥

॥ सोरठा छंद ॥

प्रथम पल्ल व्योहार, दुतिय नाम उद्धार भण।
अर्धात्रितियबिचार, अबइनको बिस्तारसुन ॥२१०॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पहले[1] गोल कूप कल्पये । जोजन बड़े मान धरपये ॥
इतनोही करये गंभीर । धी बल ताहि भरो नरधीर ॥२११॥
सात दिवस के भीतर जेह । जने भेड़ के बालक लेह ॥
उत्तम भोगभूमिके जान। तिनके रोमअग्र मन आन॥२१२॥
ऐसे सूक्षम करये सोय । फेर खंड जिन को नहिं होय ॥
तिनसों महाकूपवह भरो । बारम बार कूटदिढ़करो॥२१३॥
तिन रोमन की संख्या जान । पैंतालीस अंक परवान ॥
तेश्री जिन शासनमें कहे। करप्रतीत जैनीसरदहे॥२१४॥

॥ अंक संख्या कथन ॥

॥ चामर[2] छंद ॥

चारै एकै तीनै चारै पांचै दोै छै तीनै ले।

१—प्रथम एक गोल कुआं ऐसा कल्पित करो जो एक महा जोजन (जो दो हजार कोश का माना गयाहै) गहरा हो और जिस्की व्यास रेखाभी इतनी ही हो फिर उत्तम भोग भूमि के सात दिन के अंदर जने हुये भेड़के बच्चों के अग्र भाग रूम ऐसे सुक्षम कल्पित करो जिस्के खण्ड न होसकैं उन रूमन की संख्या जिन शास्त्र में ४५ अंकबताईहै देखो टिप्पण चामर छंद गणिता २१५ इन रूमन को उस कुयें में ऐसा कूट कूट भरो जो और न आसकें फिर सौ सौ वर्ष में एक एक रूम निकालो जितने व्रर्ष विदीत होंगे सो प्रथम पल्य की संख्या है इस पल्य का काल केवल गिणती बताने के अर्थ है और कोई प्रयोजन नहीं रूमन की संख्या पर दो बिंदु देने से वर्षों की संख्या जानो ॥

२—सुगमता अर्थ अंक गिणती दिखावै हैं—
४१३४५२६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९२०००००००००००००००००००

सुन्न तीन[3] सुन्न आठ दोय[2] अंक सुन्न दे ॥
तीन[3] एक[1] सात[7] सात[7] सात[7] चार[4] नौ[9]करो ।
पांच[5]एक[1] दोय[2]एक[1] नौ[9]समार दो[2]धरो ॥२१५॥

॥ दोहा छंद ॥

सात[2]वीस[7] ये अंकलिख, और अठारह सुन्न ।
प्रथम पल्ल के रोम की, यह संख्या परिपुन्न[1]॥२१६॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सौ सौ वरस वीत जब जाहिं । एक एक काढ़ो या माहिं॥
ऐसीविधिसबकरतेसोय । कूप उदर जब खालीहोय॥२१७।
जो कुछ लगै काल परवान । सो व्योहार पल्ल उरआन ।
प्रथमपल्लसबतेंलघुरूप । बीजभूतभाष्योजगभूप ।२१८।

॥ दोहा छंद ॥

संख्या कारण जिनकह्यो, और न यासों काज ॥
दुतिय पल्ल विवरण सुनो, जोभाषो जिनराज ।२१९।

१५ ॥ मात्रा चौपाई छंद ॥

पूरब[2] कथित रोम सबधरो । तिनके अंश कल्पना करो ॥

१–संपूर्ण॥ २–पहले कहेहुये रूपनसे प्रतिरूपइतने अंश कल्पनाकरो जितने असंख्य कोड़ वर्षके समय हों फिर इस कल्पित रूप राशिसे समय समय में एक एक निकालो जितना काललगै सो दुतिय पल्यकाल है, पैंच्चीस कोड़ गुणे हुई एक कोड़ दुतिय पल्यके रूपन की जितनी संख्या है उतनेही दीप समुद्र पृथ्वीपर जानो ॥

बरसअसंखकोटकेजिते। समैंहोहिं आतम परिमिते।२२०।
एक एक के तावत मान। करोभाग बिकलप मन आन॥
याविधिठान रोमकीरास। समैंसमैं प्रतिएक निकास।२२१।
जितनो काल होय सबयेह। सोउद्धार पल्ल सुन लेह॥
याकेरोमनसों परवान। दीपोदधिकी संख्या जान। २२२।

॥ दोहा छंद ॥

कोड़ाकोड़ पचीस के, पल्ल रोम जावन्त॥
तितनेदीप समुद्रसब, बरने जैन सिद्धन्त। २२३।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबसुनत्रितियपल्लकीकथा। श्रीजिन शासन बरनी यथा॥
दुतियपल्लके अमितअपार। रोमअंश लीजे निर्धार।२२४।
एक एक के भाग प्रमान। कर सौ वर्ष समय परवान॥
इहिविधिरासिहोयफिरएह। समैंसमैंप्रतिलीजे तेह। २२५।
ऐसे करत लगे जे काल। सोई अर्धापल्ल विशाल॥
करमनकीतिथियासोंजान। यहउत्कृष्टकही भगवान।२२६।

१–दुतिय पल्यके रूम संख्या से प्रतिरूम उतने अंश कल्पना करो जितने सौवर्ष के समय होंय फिर समय २ में एक एक निकालो जोकाल लगै सो तीसरी अर्धापल्य के काल की संख्या है जो असंख्यात तीनो पल्य में यह अर्धापल्य बड़ी है–दश कोड़ अधापल्य को एक कोड़ अर्धापल्य में गुणो जो गुणलब्धि प्राप्तहो उसके कालकी बराबर एक अर्धा कहिये बड़ा सागर होता है इसही सागर से यहजीव पुन्य पापकर स्वर्ग नर्क में स्थित रहता है॥

॥ दोहा छंद ॥

प्रथमपल्लसंख्यातमित,दुतिय असंख्यपरिमान॥
असंख्यातगुणतीसरी,लिखोजिनागमजान। २२७।
इन सब तीनो पल्ल मैं, अर्धापल्ल महान ॥
दश कोड़ा कोड़ी गये, अर्धासागर ठान । २२८।
इसही अर्धा सिंधुसों, पुन्न पाप परिभाव ॥
संसारीजन भोगवै, स्वर्ग नर्क की आव । २२९।
ऐसे दीरघ काललों, नर्क सातवें थान ॥
कमठ जीव दुखभोगवै, परो कर्म वश आन। २३०।
धिकधिकविशयकषायमल, येबैरीजगमाहिं॥
येहीमोहित जीवको, अवश नरक लेजाहिं । २३१।
धर्म पदारथ धन्यजग, जापटतर कछुनाहिं ॥
दुर्गति वास वचायकै, धरैस्वर्ग शिवमाहिं । २३२।
यही जान जिन धर्मको, सेवो बुद्धि विशाल ॥
मनतन बचन लगाय कै,तिहुँपन तीनोकाल । २३३।

इतिश्रीपार्श्वपुराण भाषा वज्रनाभिनाम चक्रवर्तिहोकर फिर स्वर्गमैं अहमिंद्रहोसुख वाभीलका नरकमैं दुख भोगननाम तृतीय अधिकार संपूर्णम्॥

॥ चतुर्थ अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

मारूथल संसार, बामा नंदन कल्प तरु ॥

बंछितफल दातार, सुखकामी सेवो सदा। १।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इसही जम्बूदीप मझार। भरथ खण्ड दच्छिन दिशसार॥
कौशलदेशवसैअभिराम। नगर अयोध्या उत्तमठाम। २।
आरज खण्ड माहिं परधान। मध्य भाग राजै शुभथान॥
गढ़गोपुर खाईगृह पांत। बन घन सों सोहैं बहुभांत। ३।
ऊंचे जिन मंदिर मनहरैं। कंचन कलश धुजा फरहरैं॥
वज्रबाहु भूपति तिहिंथान। वरइक्ष्वाक वंश नभ भान। ४।
जैनधर्म पालै वड़भाग। जिनपद कमलनि मधुप सराग॥
प्रभाकरी[1] तियताघरसती। जीतीजिन रंभा रति रती। ५।

॥ दोहा छंद ॥

यथाहंस के वंश को, चाल न सिखवै कोय॥
त्यों कुलीन नर नारिके, सहज नमन गुणहोय। ६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

वह अहमिंद्र तहां तै चयो। तिनके सुदिन पुत्र सो भयो॥

१-जिस प्रभाकरीने रंभा कहिये पार्वती शिवकी स्त्री रतिकहिये कामदेवकी स्त्री का भाग जीत लिया॥

नामधरो आनन्द कुमार । अतुलतेज सब लक्षणसार ।७।
सुभग सोम श्रीवंत महान । बलबीरज धीरज गुणथान ॥
नरनारी मन माणक चोर । देखत नयन रहैं जा ओर । ८ ।
जाके सुगुण शेष कह थके । और कौन वरनन करसके ॥
जोबनवन्तजनक तिसदेष । ब्याहमहोत्सव कियो विशेष ।९।
परनी राज सुता बहु भाय । जिनकी छबि बरनी नहिंजाय ॥
क्रमसों कुमर पिता पद पाय । बलसे बश कीये बहुराय।१०।

॥ दोहा छंद ॥

योवन वय भूपति वढ़ी, मिलो सकल सुख योग ॥
महा मंडली पद लह्यो, पूरब पुन्न नियोग । ११ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबसुन आठजातिके भूप।जिनको जिनमत कह्योसरूप ॥
कोट ग्राम को अधिपति होय । राजा नाम कहावे सोय।१२।
नवैं पांच सौ राजा जाहि । अधि राजा नृप कहिये ताहि ॥
सहस राय जिस मानै आन । महाराज राजा बहुजान ।१३।
दोय सहस नृप नवैं अशेश । मंडलीक वह अर्ध नरेश ॥
चार सहस जिस पूजें पाय । सोई मंडलीक नरराय । १४ ।
आठ सहस भूपति को ईश । मंडलीक सो महा महीश ॥

सोलह सहस नवें भूपाल । सो¹अधचक्री पुन्यविशाल । १५ ।
सहस बतीस आन जिस वहैं । ताहि सकल चक्री बुधकहैं ॥
इनमें श्री आनंद नरेश । महा मंडली पद परमेश । १६ ।

॥ सोरठा छंद ॥

आठ सहस सुख हेत, नृप नक्षत्र सेवें सदा ।
कीरति किरण समेत, सोहै नरपति चंद्रमा ॥ १७ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिना आनंद महीश । बैठो सभा सिंहासन शीश ॥
मंत्री तहां स्वामि हित नाम । कहै विवेकी सुवचन ताम । १८ ।
स्वामी यह वसंत ऋतुराज । सब जनकरैं महोछवकाज ॥
नंदी²स्वर व्रत औसर येह । करिये प्रभु पूजा जिन गेह । १९ ।
पूजा सदा पाप निर्दलै । पर्व संजोग महा फल फलै ॥
परम पुन्यको कारनआन । नहीं जगतमें याहि समान । २० ।

॥ दोहा छंद ॥

जिनपूजा की भावना, सब दुख हरन उपाय ॥
करते जोफल संपजै, सो वरणो किमजाय । २१ ।

१—अधअर्थातअर्ध ॥ २—नंदीस्वर आठवैं दीपकानाम जिस्में ५२ चैत्यालयअकृत्रिमहै

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मुनराजा मंत्री उपदेश। नगर महोछव कियो विशेश ॥
करसनान जिन मंदिरजाय। जैन बिंब पूजे बिहसाय। २२।
बहु विधि पूजा दरब मनोग। धरे आन जिन पूजनयोग ॥
भाव भक्ति सों मंगल ठयो। राजा के मन संशयभयो।२३।
विपुलमती मुनिवर तिहि थान। दरशन कारण आयेजान॥
तिनै पूज नृप पूछै येह। भो मुनिंद्र मुझ मनसंदेह। २४।

॥ दोहा छंद ॥

प्रतमा धात पषान की, प्रघट अचेतन अंग।
पूजक जन को पुन्यफल, क्योंकर देय अभंग। २५।
तुम जगमें संशय तिमर, दूरकरण रवि रूप ॥
यह मुझ भिरम मिटाइये, करे बीनती भूप। २६।
तब ज्ञानी गणधर कहें, समाधान सुन राय ॥
भवि जनको प्रतमा भगत, महा पुन्य फलदाय। २७।
भाव शुभाशुभ जीव के, उपजें कारण पाय ॥
पुन्य पाप तिनसों बँधे, यों भाषो जिनराय। २८।
कुसुम वरणको जोग लहि, जैसे फटक पषान ॥
अरुन श्याम दुतिकों धरै, यही जीवकीबान। २९।

सो कारन है दोय विधि, अंत रंग वहि रंग॥
तिनके ही उर आय है, जे समझै सरवंग।३०।
वाहिज कारण जानयो, अंतरंग को हेत॥
सोई अंतर भाव नित, कर्म बंधको देत।३१।
जिन परिणामन पुन्यबहु, बंधै अन्यथा नाहिं॥
तिन भावनको निमतहै, जिनप्रतमा जगमाहिं।३२
वीत राग मुद्रा निरख, शुध आवै भगवान॥
वही भाव कारण महा, पुन्य बंधको जान।३३।
रागद्वेषवरजित अमल, सुखदुख दातानाहिं॥
दर्पन वत भगवान हैं, यह आनो उरमाहिं।३४।
तिनको चिंतनध्यानजप, थुतिपूजादिबिधान॥
सुफल फलै निज भावसों, है मुक्ती सुखदान।३५।
जैसे गुण प्रभु के कहे, ते जिन मुद्रा माहिं॥
थिर सरूप रागादिबिन, भूपनआयुध नाहिं।३६
यद्यपिशिल्पीकृतकृतम, जिनवराविंवअचेत॥
तदपि सही अंतर विषे, शुभ भावनको हेत।३७।
और एक द्रष्टांत अव, सुनअवनीपतिसोय॥

१–जीव के परिणाम पलटने के दोकारण हैं एक अंतरंग कारण जैसे सत्ता में स्थितकर्म परिमाण जो उदयावली में आकर आत्मा को रागीद्वेषी करते हैं वहिरंग कारण यथा कठोर वचन श्रवन, स्त्रीदर्शनादि से॥

जियके उर द्रष्टांत सों, संशय रहै न कोय । ३८ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

गणिका धरी चितामें जाय । विसनी पुरुष देखपछताय ॥
जोजीवतमुझमिलतोजोग । तोमैंकरतोवंछितभोग । ३९ ।
स्वान कहै उरक्यों यह दही । मैं निज भक्षण करतो सही ॥
पुनितिसदेषकहैमुनिराय । क्योंनकियोतपयहतनपाय।४०।
इहिविधि देष अचेतन अंग । उपजे भावपाय परसंग ॥
तिनहीभावनकेअनुसार । लाग्योफलतिनकोतिहिंवार।४१।

॥ दोहा छंद ॥

विसनी नर नरकहुं गयो, लहो छुधादुख स्वान ॥
साधु सुरग पहुँचेसही, भावन को फलजान । ४२ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यांजिनबिंब अचेतन रूप । सुखदायक तुम जानो भूप ॥
कारनसम कारज संपजै । यामैं बुधसंशय नाहिं भजै ।४३।

॥ दोहा छंद ॥

जैसे चिंतामणि रतन, मन बंछित दातार ॥

१—जीवके अर्थात् प्राणी के ॥

तथा अचेतन बिंब यह, बंछापूरण हार । ४४ ।
जोयांचत सुखकल्प तरु, दानी जनको देय ॥
त्यों अचेत यह देत है, पूजक को सुख श्रेय ॥ ४५ ॥
मणि मंत्रादिक औषधी, हैं प्रत्यक्ष जड़ रूप ॥
विष रोगादिक को हरैं, त्यों यह अघहरभूप ॥ ४६ ॥
जड़ सरूप को पूज पद, प्रघट देखये लोय ॥
राजपत्र सिर धारयें, मुद्रा अंकित होय ॥ ४७ ॥
राजपत्र सिर धारयें, राजा को भयमान ॥
जिनवर मुद्रा पूजयें, पातक को डर जान ॥ ४८ ॥
प्रत्मा पूजन चिंतवन, दरशनआदि विधान ॥
हैं प्रमान तिहुं कालमें, तीन लोक में जान ॥ ४९ ॥
जे प्रत्मा पूजें नहीं, निंद्या करैं अजान ॥
तीनलोकतिहुं कालमें, तिनसम अधमनआन । ५० ।
जे प्रत्मा पूजें सदा, भाव भक्ति विधि शुद्ध ।
तिनको जन्म सराहिये, धन तिनकी सद बुद्ध ॥ ५१ ॥
इत्यादिक उपदेश सुन, आई उर परतीत ॥
जिन प्रत्मा पूजन विषै, धरी राय दिढ़ प्रीत ॥ ५२ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तिस औसर मुनि वरनै ताम । तीन भवन बरती[1] जिन धाम ॥

1–बरतने वाले ॥

भानु विंमान विषै जिन गेह । सो पहले बरने धरनेह । ५३ ।
रत्न मई प्रतमा जग मगै । कोट भानु छबि छीणी लगै ॥
निरुपमरचनाविविधविशाल।सूरयदेवल मैं तिहुंकाल । ५४ ।
सुन आनंदो आनंद राय । विकसत आनन अंगनमाय ॥
जब संदेह शल्य निर्वरै । तब अवश्य उर सुख विस्तरै।५५।
प्रात सांझ मंदिर चढ़ सोय । अर्घ देय रवि सन्मुख होय ॥
करजिनबिंबनकोमनध्यान।अस्तुतिकरै राग मनआन । ५६ ।
रवि विमाण मणि कंचन मई । निर्मापो अद्भुत छबि छई ॥
जैनभवनकरमंडितसोय । देखत जनमनअचरज होय।५७।
पूजा तहां करै नित राय । महा महोछव हर्ष बढ़ाय ॥
प्रतिदिनदेयदयाउरआन । दीन दुखितजनकोबहुदान।५८।
यह नित नेम करै भूपाल । चली नगर में सोई चाल ॥
सब सूरज को करें प्रणाम । देखा देख चलो मतताम ।५९।
समझे नहीं मूढ़ परणाये । भानु उपासक तब सों भये ॥
जो महंत नर कारज करै । ताकी रीत जगत आचरै । ६० ।
यों बहु पुन्न करै भूपाल । सुख में जात न जानो काल ॥
एक दिना निजसभा नरेश । निवसै मानो स्वर्ग सुरेश । ६१ ।
धवल केश देषो निज शीश । मन कंप्यो शोचे नरईश ॥
जाहि देष मनउत्सव घटै । कामी जीवनको उर फटै । ६२ ।

१--समाय ॥

सो लख शेत बाल भूपाल। भोग उदास भये ततकाल॥
जगतरीतसबअथिरअसार। चिंतैचितमैं मोह निवार।६३।
बाल अवस्था भई वितीत। तरुणाई आई निज रीत॥
सो अब बीती जरा पसाय। मरण दिवस यों पहुंचै आय।६४।
बालक काया कूँपल सोय। पत्र रूप जोवन मैं होय॥
पाको पात जरा तन करै। काल बयाल चलत झरपरै।६५।
कोई गर्भ माहिं खिर जाय। कोई जन्मत छोड़ै काय॥
कोई बाल दशा धर मरै। तरुण अवस्था तन परिहरै।६६।
मरन दिवस को नेम न कोय। यातैं कछु सुध परै न लोय।
एक नेम यहतो परिवान। जन्म धरै सो मरै निदान।६७।
महा पुरुष उपजे बड़ भाग। सब परलोक गएतन त्याग॥
संसारी जन अपनी बार। पूरब उदै करै अनुसार।६८।
परबतपतत नदी के न्याय। छिनहींछिन थिति बीती जाय॥
राग अंधप्रानीजगमाहिं। भोग मगन कछुसोचैनाहिं।६९।
अंतकाल जब पहुंचै आय। कहाहोय जो तब पछिताय।
पानी पहले बंधेपाल। वही कामआवै जलकाल।७०।
यही जान आतमहित हेत। करैं विलंब न संत सुचेत॥
आजकालजेकरत रहाहिं। ते अजान पीछे पछताहिं।७१।
रात दिवस घटमाल सुभाव। भरहिंजल जीवन कीआव॥

१–संसारी जन अपनी बार अर्थात् समय को पूरब उदय कर्म के अनुसार विदीत करै है॥

सूर्य चांद बैलये दोय । काल रहट नित फेरैं सोय । ७२ ।

॥ बारहभावना विवर्ण ॥

१ अथिरभावना ॥

दोहा छंद

राजा राणा छत्रपति, हाथियन के असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार । ७३ ।

॥ २ अशरण भावना ॥

दल बल देवी देवता, मात पिता परवार ॥
मरती बरयां जीव को, कुई न राखण हार । ७४ ।

॥ ३ संसार भावना ॥

दामबिना निर्धन दुखी, तिश्नाबश धनवान ॥
कहींन सुख संसार में, सबजग देखो छान । ७५ ।

॥ ४ एकत्व भावना ॥

आप अकेला अवतरै, मरै अकेला होय ॥
योंकबही इस जीवका, साथी सगा न कोय । ७६ ।

॥ ५ अन्यत्व भावना ॥

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपनो कोय ॥
परसंपति पर प्रगट ये, पर हैं परयन लोय । ७७ ।

॥ ६ अशुचि भावना ॥

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह ॥
भीतर यासम जगत में, और नहीं घिनगेह । ७८ ।

॥ ७ आश्रवभावना ॥

॥ सोरठा छंद ॥

मोह नींद के जोर, जग बासी घूमें सदा ॥
कर्म चोर चहुँ ओर, सरबस लूटें सुधनहीं । ७९ ।

॥ ८ संबर भावना ॥

सतगुरु देह जगाय, मोह नींद जब उपशमें ॥
तब कछु बने उपाय, कर्म चोर आवत रुकें । ८० ।

॥ ९ निर्जराभावना ॥

॥ दोहा छंद ॥

ज्ञानदीप तपतेल भर, घर सोधै भ्रम छोर ॥

१–यह बात प्रघट है कि परसंपति पर है ॥

याविधि बिन निकसैं नहीं, बैठे पूरब चोर । ८१ ।
पंचमहाव्रत संचरन, समति पंच परकार ॥
प्रबलपंच इन्द्री विजय, धार निर्जरा सार । ८२ ।

॥ १० लोक भावना ॥

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान ॥
तामैं जीव अनादि सों, भरमत है बिन ज्ञान । ८३ ।

॥ ११ धर्म भावना ॥

यांचे सुरतरु देय सुख, चिंतन चिंत्यारैन ॥
बिन यांचे बिन चिंतवे, धर्म सकल सुख दैन । ८४ ।

॥ १२ बोधदुर्लभ भावना ॥

धनकन कंचन राजसुख, सबै सुलभ करजान ॥
दुर्लभ है संसारमें, एक यथारथ ज्ञान । ८५ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहिबिधि भूप भावना भाय । हितउद्यम चिंत्यो मनलाय ॥
सबसों मोह ममत निर्वार । उठो धीर धीरज उरधार । ८६ ।

१—रैन प्राकृत शब्द रत्न अर्थ में है चिंत्यारैन चिंत्यामणि रत्न.

जेठे सुतको दीनो राज। आप चले शिव साधन काज॥
सागरदत्त मुनीश्वरपास। संयमलियोतजीजगआस।८७।
घने भूप भूपति के संग। धरे महाव्रत निर्भय अंग॥
अब आनंद महामुनि धीर। बननिवास बिचरै बरबीर।८८।
दुद्धरतप बारह बिधि करै। दुबिधि संग ममता परिहरै॥
तिनके नाम कहूं कुछ[1] धार। जिनशासन जिनकोबिस्तार।८९।
प्रथम महातप अनशन[1] नाम। दूजो ऊनोदर[2] गुणधाम॥
तीजोहैव्रत परिसंख्यान[3]। रसपरित्याग[4] चतुर्थम मान।९०।
पंचम भिन सयनाशन[5] सार। काय कलेश[6] छठो अबिकार॥
यहषटबिधिबाहजतपजान। अबअन्तरतपसुनोसुजान।९१।
पहले प्रांछित[1] बिनय[2] दुतीय। बैयाव्रत[3] तीजो गनलीय॥
चौथो अंतरंग सिज्भाय[4]। पंचमतपब्युत्सर्ग[5] बताय।९२।
षष्टम ध्यान[6] हरै सब खेद। ये अन्तरतप के सब भेद॥
अबइनको संक्षेप सरूप। सुनोसंततज भाव बिरूप।९३।
जिनके सुनत बँधे शुभध्यान। सेवत पद लहिये निर्बान॥
तपबिन तीनकाल तिहुँलोय। कर्मनाश कबही नहिंहोय।९४।
दिनसौं लेय बरष लग करै। चार[2] प्रकार अशन परिहरै॥
रागरोग निर्दलन उपाय। सोअनशन भाष्यो जिनराय।९५।

१—धारना कर के.

२—खाद्य यथा रोटीपूरी आदि १, स्वाद्य यथा चूसने की वस्तु आम्रआदि २, लेह्य यथा चाटने की वस्तु चटनी आदि ३, पेय यथा पीने की वस्तु दूध आदि ४,

पौन अर्ध चौथाई टेक। एक ग्रास अथवा कन एक॥
ऐसीविधि जो भोजनलेत। ऊनोदर आलस हरलेत।९६।
जैसी प्रथम प्रतिज्ञा करै। ताही विधि भोजन आदरै॥
सोकहियेव्रत परिसंख्यान।आशाब्याधि विनाशनजान।९७।
लवनादिक रस छार उपाध। नीरसभोजन भुंजै साध॥
रसपरित्याग कहावैएम। इन्द्रीमद नाशन यह नेम।९८।
सूनगेह गिरगुफा मसान। नारि नपुंसक बरजित थान॥
बसैभिन्न शयनासन सोय। यासों सिद्धिध्यानकीहोय।९९।
ग्रीषम काल बसै गिरि सीस। पावस में तरुवर तलदीस॥
शीतसमै तटनीतट रहै। काय कलेश कहावै यहै।१००।

॥ दोहा छंद ॥

यातप के आचरन सों, सहन शील मुनि होय॥
अब्अन्तर तपभेद छह, कहूं जिनागमजोय।१०१।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

जो प्रमाद बश लागै दोष। सोधै ताहि छोड़ छल रोष॥
आचारय बानीअनुसार।यहीप्रथमप्राश्चिततपसार।१०२।
जे[1] गुण जेठे साधु महंत। दरशन ज्ञानी चारित वंत।
तिनकी विनै करैमन लाय। विनैनामतपसो सुखदाय।१०३।

१—जे साधु गुणों में जेठे अर्थात् बड़े हैं॥

रोगादिकपीड़ित अविलोय । बालविरध मुनिवर जोहोय ॥
सेव करै निज संयमराख । सो वैयाव्रत आगमसाख ।१०४।
शक्ति समान सकल गुण ठाठ । करै साधु परमागमपाठ ॥
परमोतम तपसोसिज्झाय।जासोंसब संशय मिटजाय।१०५।
निज शरीर ममता परिहरै । काउसर्ग मुद्रा दिढ़ धरै ॥
अंतर बाहर परिग्रह छार । सोई तपव्युत्सर्ग उदार।१०६।
आरत रुद्र निवारै सोय । धर्म शुकुल ध्यावै थिरहोय ॥
जहांसकलचिंतामिटजाहि।वहीध्यानतपजिनमतमाहि।१०७

॥ दोहा छंद ॥

यह बारह विधि तप विषम, तपै महा मुनिधीर ।
सहै परीषह बीसदो, ते अब वरणूंवीर ।१०८।

॥ समुच्चय २२ परीषहनाम ॥

॥ छप्पै छंद ॥

छुधा तृषा हिम उश्न डंस मंसक दुख भारी ।
निरावरनतन अरति वेद उप जावन नारी॥
चरया आसन शयन दुष्ट वायक वध बंधन ।
यांचै नहीं अलाभ रोग तिण फरस निबंधन॥

मल[19] जनित मान[20] सैन मान बस, प्रज्ञा[21] और अज्ञानकर॥
दरशैन[22] मलीन बाईससब, साधुपरीषहजाननर।१०९।

॥ दोहा छंद ॥

सूत्र पाठ अनुसार ये, कहे परीषह नाम ॥
इनके दुख जे मुनिसहैं, तिनप्रति सदा प्रणाम। ११०।

॥ भिन्न भिन्न २२ परीषह विवर्ण ॥

॥ पोमावती छंद ॥

॥ १ क्षुधा परीषह ॥

अनशन ऊनोदर तप पोषत, पाषमासादिन बीतगये हैं॥
जोग न बनै योग भिक्षा विधि, सूक अंगसब शिथलभये हैं॥
तवबहु दुसह भूखकी बेदन, सहत साधुनहिं नेक नये हैं॥
तिनकेचरणकमलप्रातिदिनादिन,हाथजोरहमसीसठयेहैं १११

॥ २ तृषापरीषह ॥

पराधीन मुनिवरकी भिक्षा, परघर लेहिं कहैं कछुनाहीं॥
प्रकृति विरोध पारना भुंजत, बढ़त प्यासकी त्रास तहांही॥

ग्रीषमकाल पित्त अति कोपै, लोचन दोयफिरे जबजाहीं ॥
नीर न चहैं सहैं ऐसे मुनि, जैवंते बरतो जगमाहीं ।११२।

॥ ३ शीतपरीषह ॥

शीतकाल सबहीजन कांपैं, खड़ेजहां बन विरछ डहे हैं ॥
झंझाबायु बहै वरषाऋतु, वरषत बादल झूमरहे हैं ॥
तहां धीर तटनी तट चौवट, ताल पालपै कर्मदहे हैं ॥
सहैं सँभाल शीत की बाधा, तेमुनि तारन तरन कहे हैं।११३।

॥ ४ उष्णपरीषह ॥

भूखप्यास पीड़ै उर अंतर, प्रजलै आंत देह सब दागै ॥
अग्निसरूप धूप ग्रीषम की, ताती बाल झालसी लागै ॥
तपै पहार ताप तन उपजै, कोपै पित्त दाह ज्वरजागै ॥
इत्यादिकग्रीषमकीबाधा, सहतसाधुधीरजनहिंत्यागै।११४।

॥ ५ डंसमंसकपरीषह ॥

डंस मंस माखी तन काटैं, पीड़ैं बनपंछी बहुतेरे ॥
डसैं ब्याल विषयाले बीछू, लगैं खजूरे आन घनेरे ॥
सिंह स्याल सुंडाल सतावैं, रीछरोझ दुख देहिं बड़ेरे ॥
ऐसे कष्टसहैं समभावन, ते मुनिराज हरो अघ मेरे।११५।

॥ ६ नग्नपरीषह ॥

अंतर विषय बासना बरतै, बाहर लोकलाज भयभारी ॥
तातैं परम दिगंबर मुद्रा, धरनहिं सकैं दीन संसारी ॥
ऐसी दुद्धर नगन परीषह, जीतैं साधु शील व्रत धारी ॥
निर्विकारबालकवतनिर्भय, तिनके पायन ढोकहमारी॥११६।

॥ ७ अरतिपरीषह ॥

देश कालको कारन लहिकै, होत अचैन अनेक प्रकारै ॥
तबतहांखिन्नहोहिजगबासी, कलमलायथिरतापदछारै ॥
ऐसी अरति परीषह उपजत, तहां धीर धीरज उरधारै ॥
ऐसे साधनको उर अंतर, बसो निरंतर नाम हमारै।११७।

॥ ८ स्त्री परीषह ॥

जेप्रधान केहरि को पकरैं, पन्नग पकर पांवसों चापै ॥
जिनकी तनक देषभौं बांकी, कोटक सूरदीनता जापै ॥
ऐसेपुरुष पहार उड़ावन, प्रलय पवन तिय वेदपयापै ॥
धन्यधन्यतेसाधुसाहसी, मनसुमेरुजिनकोनहिंकांपै।११८।

॥ ९ चर्यापरीषह ॥

चारहाथ परवान निरखपथ, चलत दिष्टइतउत नहिंतानै॥

कोमलपांय कठिन धरती पर, धरतधीर बाधा नहिं मानै॥
नाग तुरंगपालकी चढ़ते, ते सवाद उर याद न आनै॥
योंमुनिराजभरैचर्यादुख, तबदिढकर्म कुलाचलभानै।११९।

॥ १० आसनपरीषह ॥

गुफा मसान शैल तरु कोटर, नियसै जहांशुद्धिभूहेरै॥
परिमित कालरहैं निश्चलतन, बारबार आसन नाहिं फेरै॥
मानुषदेव अचेतन पशुकृत, बैठे विपत आनजब घेरै॥
ठौर न तजे भजे थिरता पद, तेगुरु सदाबसो उरमेरै।१२०।

॥ ११ शयन परीषह ॥

जेमहान सोनेके महलन, सुंदरसेज सोय सुखजोवैं॥
तेअब अचलअंग एकासन, कोमल काठिन भूमिपरसोवैं॥
पाहन खंड कठोर कांकरी, गड़त कोर कायर नहिं होवैं॥
ऐसी शयन परीषह जीतत, ते मुनि कर्म काल मा धोवैं।१२१।

॥ १२ आक्रोश परीषह ॥

जगत जीव यावंत चराचर, सबके हित सबके सुखदानी॥
तिनै देख दुर्वचन कहैं दुठ, पाखंडी ठग यह अभिमानी॥
मारो याहि पकर पापीको, तपसी भेष चोर है छानी॥

ऐसेबचन बाँणकीबर्षा। छिमाढाल ओटैं मुनिज्ञानी।१२२।

॥ १३ बधबंधनपरीषह ।,

निर्पराध निर्बैर महामुनि। तिनको दुष्टलोग मिल मारैं॥
केई खैंच थंभ सो बाँधत। केई पावक में परजारैं॥
तहाँ कोप नहिं करहिं कदाचित। पूरब कर्म विपाक बिचारैं॥
समरथहोय सहैंबधबंधन। ते गुरुसदा सहायहमारैं।१२३।

॥ १४ याँचनापरीषह ॥

घोरवीर तपकरत तपोधन, भयो छीण सूकी गल बाहीं॥
अस्थिचामअवशेषरहोतन, नसाजालझलकोजिसमाहीं॥
औषधि अशन पान इत्यादिक, प्रानजाय परयांचतनाहीं॥
दुद्धर अयाचीकव्रतधारैं, करहिंनमलिनधरमपरछाहीं १२४

॥ १५ अलाभपरीषह ॥

एकबार भोजन की बरयां, मौनसाध बसती में आवैं॥
जो नबनै योग भिक्षाविधि, तौ महंत मन खेद न लावैं॥
ऐसेभ्रमत बहुत दिन बीतैं, तब तप विरद भावना भावैं॥
योंअलाभ की परम परीषह, सहैंसाधु सोई शिवपावैं।१२५।

१—तप है धन जिसके।

॥ १६ रोगपरीषह ॥

बायपित्त कफशोणित चारों, येजब घटैं बढ़ैं तन माहैं ॥
रोग सँयोग सोग तन उपजत, जगत जीव कायर होजाहैं॥
ऐसीव्याधि वेदना दारुन, सहैं शूर उपचार न चाहैं ॥
आतमलीन देहसों बिरकत, जैनयती निजनेम निवाहैं ।१२६।

॥ १७ तृणास्पर्शपरीषह ॥

सूकेतृण अरु तिक्षणकांटे, कठिन कांकरी पायविदारैं ॥
रज उड़ आय परैं लोचनमैं, तीरफांस तनपीर बिथारैं ॥
तापर पर सहाय नहिं बांछित, अपने करसों काढ़ न डारैं॥
योंतृण परस परीषह विजई, तेगुरु भवभव शरणहमारैं॥

॥ १८ मलपरीषह ॥

यावजीव जलन्होन तजो जिन, नग्नरूप बनथान खरेहैं॥
चलैं पसेवधूपकी बरयाँ, उड़त धूलसब अंगभरेहैं
मलिनदेहको देषमहामुनि, मलिन भावडर नाँहिकरेहैं ॥
योंमलजनितपरीषहजीतैं, तिनैंहाथहम सीसधरेहैं ।१२८।

१—अर्थात यावत ।

॥ १९ सत्कारपरीषह ॥

जेमहान विद्यानिधिविजई, चिरतपसी गुण अतुलभरेहैं॥
तिनकीविनयबचनसों अथवा, उठप्रणाम जननाहिंकरेहैं॥
तौमुनितहाँ खेद नाहिं मानैं, उर मलीनता भाव हरेहैं॥
ऐसेपरमसाधुके अहनिशि, हाथजोरहम पांयपरेहैं।१२९।

॥ २० प्रज्ञापरीषह ॥

तर्क छंद व्याकर्ण कलानिधि, आगम अलंकार पढ़जानैं॥
जाकी सुमतिदेख परवादी, बिलखत्त होय लाजउरआनैं॥
जैसेनाद सुनत केहरकी, बन गयंद भागत भयमानैं॥
ऐसी महाबुद्धिकेभाजन, परमुनीश मदरंचन ठानैं।१३०।

॥ २१ अज्ञानपरीषह ॥

सावधान बरतैं निशबासर, संयम शूर परम बैरागी॥
पालत गुप्तिगए दीरघ दिन, सकल संगममता परत्यागी॥
अवधिज्ञानअथवामनपर्य्यै, केवलकिरणअभौंनहिंजागी॥
योंविकल्पनाहिंकराहिंतपोधन, सोअज्ञानविजईबड़भागी१३१

॥ २२ दर्शनपरीषह ॥

मैं चिरकाल घोरतप कीने, अजौंरिद्ध अतिशयनाहिंजागे॥

तपबलसिद्धहोंहिं सबसुनिये, सोकुछबात झूठसी लागे ॥
योंकदापि चितमें नाहिंचिंतत, समकितशुद्धशांतरसपागे ॥
सोईसाधु अदर्शन बिजई, ताके दर्शनसोंअघभागे।१३२।

परीषह उदैविवर्ण

॥ घनाक्षरी छंद ॥

ज्ञानावरणीसोंदोय, प्रज्ञा औ अज्ञानहोय।
एक महा मोइ तें, अदर्शन बखानये ॥
अंतराय कर्मसेती, उपजै अलाभ दुख।
सप्त चारित्र मोहनी, केवल जानये ॥
नगन निषिद्या नारी, मान सन्मान गारी।
याचना अरति सब, ग्यारै ठीक ठानये ॥
एकादश बाकीरही, वेदनी उदोत कही।
बाइस परीषा उदै, ऐसे उर आनये।१३३।

॥ अड़िल छंद ॥

एकबार इनमाहिं, एक मुनि के कही।
सब उनीस उतकृष्ट, उदै आवैं सही ॥

आसन शैन विहार, दोय इनमाहिं की ।
शीत उश्नमें एक, तीनये नाहिं की । १३४।

॥ दोहा छंद ॥

अब दशलक्षण धर्मके, कहूँ मूल दश अंग ।
जे नित श्री आनंद मुनि, पालत हैं सरवंग । १३५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

बिनादोष दुर्जन दुखदेय । समरथ होय सकल सहलेय ॥
क्रोधकषाय न उपजे जहां । उत्तम छिमा कहावै तहां । १३६।
आठ महामद पाय अनूप । निर्भिमान[1] बरतै मृदुरूप ॥
मानकषाय जहां नहिं होय । मार्दव नाम धर्म है सोय । १३७
जो मनचिंतै सोमुख कहै । करै कायसों कारज वहै ॥
माया चारन डर पाइये । आर्जव धर्म यही गाइये । १३८।
बोलै बचन स्वपर हितकार । सत्य सुरूप सुधा उनहार ॥
मिथ्या बचन कहै नाहिं भूल । सोई सत्यधर्म तरुमूल । १३९।
पर कामिन पर दरब मझार । जो विरक्त बरतै छल छार ॥
अंतर शुद्धहोय सरबंग । सोई शौच धर्म को अंग । १४०।

१—निर्अभिमान ॥

मन समेत ये इन्द्री पंच । इनको शिथल करे नहिं[1] रंच ॥
त्रस थावर की रक्षा जोय । संयम धर्म बखानो सोय ।१४१।
ख्याति लाभ पूजा सब छंड । पंचकरण को दीजे दंड ॥
सोतपधर्मकहोजगसार । अनशनादिबारहपरकार । १४२ ।
संयमधारी व्रति परधान । दीजेचहुँ विधि उत्तम दान ॥
तथादुष्टविकलपपरिहार[2] । त्यागधर्मबहुसुख दातार । १४३ ।
बाहिजपरिग्रह को परित्याग । अंतर ममता रहै न लाग ॥
आकिंचनयहधर्ममहान।शिवपद दायक निश्चैजान ।१४४।
बड़ी नारि जननी सम जान । लघु पुत्री सम बहिनबखान ॥
तज विकार मन बरते जेह । ब्रह्मचर्य परिपूरण येह ।१४५।

॥ दोहा छंद ॥

सोलह कारण भावना, भावें मुनि आनंद ।
तिनकोनाम सरूप कुछ, लिखूं सकलसुख कंद।१४६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आठ[3] दोष मद आठ मलीन । छै अनाय तन सठता तीन ॥

१—नहिं रंच—सर्व अर्थात् बिलकुल या यों कहो इन्द्रियों को ऐसा शिथल करै जो फिर राचै नहीं ॥ २—दुष्ट विकलप—खोटा विचार, भावार्थ राग द्वेष ॥

३—सम्यक्त के सर्व २५ दोष यह हैं, प्रथम आठ दोष-शंकित-जिन बचन में शंका करना १ कांक्षित-संसार के सुख की इच्छा करना२विचिकित्सा-मुनि जनों से ग्लानी करना ३ मूढ़ता-तत्व कुतत्व की पहिचान न करना ४ अनुपगुहणता-पराये औगुण अपने गुण प्रघट करना ५ अप्रभावना-अपने धर्म की उमंग

येपचीस मल वरजित होय । दर्शन शुद्धिकहांवै सोय।१४७।
रत्नात्रय धारी मुनिराय । दर्शन ज्ञान चरित समुदाय ॥
इनकी विनयविषैपरवीन।दुतियभावनासोअमलीन।१४८।
शीलभार धारै समचेत । सहस अठारह अंग समेत ॥
अतीचार नहिंलागै जहां। तृतियभावना कहिये तहां । १४९।
आगमकथित अर्थ अवधार । यथाशक्तिनिजबुधि अनुसार॥
करैंनिरंतरज्ञान अभ्यास।तुरवैभावना कहिये तास । १५० ।

॥ दोहा छंद ॥

धर्म धर्म के फलविषै , बरतै प्रीत बिशेष ।
यही भावना पंचमी , लिखी जिनागम देष । १५१ ।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

औषधि अभय ज्ञान आहार । महादान यह चार प्रकार ॥
शक्तिसमान सदानिर्वहै । छठीभावना धारक वहै । १५२ ।
अनशन आदि मुक्ति दातार । उत्तमतप बारह परकार ॥

न करना ६ असुस्थि करण-आप वा परको धर्म से डिगती समय स्थिर न करना ७ अवात्सल्य-धर्मी पुरुषों से प्रीति न करना ८ द्वितीय आठमद-कुलका मद १ बड़ी जातिका मद २ रूपका मद ३ विद्या का मद ४ धनका मद ५ बलका मद ६ तपका मद ७ प्रभुताका मद ८ छै अनायतन-कुगुरु १ कुदेव २ कुधर्म ३ कुगुरु सेवक ४ कुदेव सेवक ५ कुधर्म सेवक ६ इनकी प्रशंसा करना, तीनै शठता अर्थात् मूढ़ता-जिनदेव १ जिन मुनि २ जिन शास्त्र ३ इनके विपरीतों की मानता करनी ॥

बलअनुसार करैजोकोय। सोसातमी भावनाहोय । १५३ ।
यतीवर्ग को कारण पाय। विघ्न होत जो करै सहाय ॥
साधुसमाधि कहावैसोय। यहीभवना अष्टम होय । १५४ ।
[1]दशविधि साधु जिनागम कहे । पथपीड़तरोगादिक गहे ॥
तिनकी जो सेवा सत्कार। यहीभावना नौमीसार । १५५ ।
[2]परमपूज आतम अर्हंत । अतुल अनन्त[3] चतुष्टय वन्त ॥
तिनकीथुतिनतिपूजाभाव। दशमभावनाभवजलनाव। १५६
जिनवर कथित अर्थ अवधार । रचना करै अनेक प्रकार ॥
आचारजकी भक्तिविधान। एकादशम भावनाजान। १५७।
विद्यादायक विद्यालीन । गुणगरिष्ट पाठक परवीन ॥
तिनकेचरण सदाचितरहै। बहुश्रुतिभक्ति बारमीयहै। १५८।
भगवत भाषत अर्थअनूप। गणधर ग्रंथित ग्रंथ सरूप ॥
तहांभक्तिबरतैअमलान। प्रबचनभक्ति तेरमीजान। १५९।
[4]खटआवश्यक क्रिया विधान । तिनकी कबही करै न हान ॥
सावधानबरतौथिरचित्त। सोचौदहमी परमपवित्त। १६०।
कर जप तप पूजा व्रत भाव। प्रघट करै जिनधर्म प्रभाव ॥
सोई मारग पर भावना। यहै पंच दशमी भावना। १६१ ।

१–आचार्य्य १ उपाध्याय २ तपस्वी ३ सैक्ष ४ गलाण ५ गण ६ कुल ७ संघ ८ साधु ९ मनोग १० ॥ २–परम पूज हैं आत्मा जिनकी ऐसे अर्हंत ॥
३–अनंत ज्ञान १ अनंत दर्शन २ अनंत सुख ३ अनंत वीर्य ४ ॥
४–समता धारण १स्तुतिउचारण २जिन देवबंदना ३शास्त्र स्वाध्याय ४ प्रतिक्रमण-पिछले कियेहुये दोषोंकादंडलेना५ महामिन्द्र तनधारण की इच्छानकरना ६,

चार प्रकार[1] संघ सों प्रीत। राखै गाय बच्छ की रीत॥
यहीसोलमीसबसुखदाय। प्रवचनवात्सल्यअभिधाय।१६२

॥ दोहा छंद ॥

सोलह कारन भावना, परम पुन्य को खेत॥
भिन्न भिन्न अरु सोलहों, तिर्थंकर पद हेत।१६३।
बंध प्रकृति जिनमत विषे, कही एकसौ[120] बीस॥
सौसैंतरह[2][117] मिथ्यात मैं, बांधत है निश दीस।१६४।
तिर्थंकर आहार[3] दुक, तीन प्रकृति ये जान॥
इनको बंध मिथ्यात मैं, कहो नहीं भगवान।१६५।
तातें तिर्थंकर प्रकृति, तीनों समकित माहिं॥
सोलह कारण सों बँधे, [4]सभको निश्चै नाहिं।१६६।

॥ सोरठा छंद ॥

पूजपाद मुनिराय, श्री सर्वारथ सिद्ध में॥
कह्योकथनइस न्याय, देखि लीजियो सुबुधजन।१६७।

१—मुनि १ अर्जिका २ श्रावक ३ श्राविका॥
२—अर्थात् एक सौसैंतरह. ३—आहारदुक—आहारक १आहारक मिश्र २ देपोसूत्र जी की टीका, गोमठसारजी काया मारगणा ४—तिर्थकर पदकी प्रकृति का बंध यह निश्चय नहीं है कि सोलहू कारण भावना के समूह सेही हो भिन्न भिन्न कारण भावना से भी होसकता है

॥ कुसुमलता छंद ॥

सोलह कारन ये भव तारन, सुमरत पावन होय हियो ॥
भावैंश्री आनंद महामुनि, तिर्थंकर पद बंध कियो। १६८।
काय कषाय करी कृष अतिही, सत संयम गुण पोढ़किये॥
तपबल नानारिद्ध उपन्नी, राग विरोध निवारदिये।१६९।
जिसबन योगधरैं योगेश्वर, तिस बन की सब विपत टलैं॥
पानीभरहिं सरोवर सूके, सबऋतु के फलफूल फलैं।१७०।
सिंहादिक जे जात विरोधी, ते सब बैरी बैर तजैं॥
मोर भुयंगम मूश मजारी, आपस मैं मिल प्रीतभजैं।१७१।
सोहैं साधु समता रथ बैठे, परमारथ पथ गमन करैं॥
शिवपुर पहुँचन की उरबंछा, औरनकुछ चितचाहधरैं।१७२।
देह विरक्त ममत्त बिना मुनि, सबसों मैत्री भाव धरैं॥
आतमलीनअदीनअनाकुल,गुणवरणतनहिंपारलहैं।१७३।
एक दिना ते वीर बनांतर, ठाड़े मुनि वैराग भरे॥
पौनपरीषह सों नहिं कांपै, मेरुशिखर ज्यों अचलखरे।१७४।
सो मर नरक कमठ चर पापी, नाना भांति विपत्त भरी॥
तिसही कानन में विकटानन, पंचानन की देह धरी।१७५।
देष दिगंबर केहरि कोपो, पुर्ब भवांतर वैर दहो॥

१—पोढ़ अर्थात् द्रढ़ किये

धायो दुष्ट दहाड़त तित्तण, आन अचानक कंठगहो।१७६।
तीषे नखन विदारै काया, हाथ कठोरन खण्ड करै॥
बांकी दाढ़नसों तनबेधै, बदन भयानक ग्रास भरै।१७७।
यों पशुकृत परचंड परीषह, सम भावन सो साधु सही॥
क्रोधविरोधहियेनहिंआन्यो, परम छिमाउरमांभवही।१७८।
धन धन श्री आनंद मुनीश्वर, धन यह धीरज भाव भजे॥
ऐसे घोर उपद्रव में जिन, योग युगत सों प्राणतजे।१७९।
अंत समय परयंत तपोधन, शुभ भावन सों नाहिंचये॥
आनत नाम स्वर्गमें स्वामी, सुरगण पूजत इन्द्र भये।१८०।

॥ दोहा छंद ॥

स्वर्गलोक वरणन लिखूं, यथा शक्ति सुखरीत॥
धर्म धर्म के फल विषे, ज्यों मन उपजे प्रीत।१८१।

॥ स्वर्ग वर्णन ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

चंद्र कांति मूँगा मणि मई। नाना वरण भूमि वरणई॥
रात दिवस को भेद न जहां। रत्न उद्योत निरंतरतहां।१८२।

मणि कंगुरे कंचन प्राकार । औंड़ी परिखा ऊँचे द्वार ॥
तोरण तुंग रत्न ग्रह लसैं । ऐसे स्वर्ग लोक पुर बसैं ।१८३।
चंपक पारियात मंदार । फूलन फैलरही महकार ॥
चैत बिरछ तैं बढ़ो सुहाग । ऐसे स्वर्ग रवाने बाग । १८४ ।
विपुल वापिका राजैं खरी । निर्मल नीर सुधामय भरी ॥
कंचनकमलछईछबिवान।माणकखण्डखचितसोपान १८५
काम धेनु सोहैं सब गाय । कल्पवृक्ष सबही तरुराय ॥
रत्नजातिचिंत्यामणिसबै । उपमा कौन स्वर्ग कोफबै।१८६।
गान करैं कहिं सुर सुंदरी । बन वीथिन बैठी रस भरी ॥
कहीं देवगण वनिता संग । लीला बन विचरैं मनरंग।१८७।
मंद सुगंध बहै नित वाय । पहुप रेण रंजित सुख दाय ॥
आंधी मेह न कबहीं होय । ताप तुसार न व्यापै कोय ।१८८।
ऋतुकी रीति फिरै नहिं कदा । सोम काल सुखदायक सदा ॥
छत्र भंग चोरी उतपात । सुपने नहीं उपद्रवजात । १८९ ।
ईतिभीत भूचाल न होय । बैरी दुष्ट न दीपै कोय ॥

१—ईति–उपद्रव जो सात हैं, यथा बहुत वर्षा होना १ नहीं वर्षा होना २ टिड्डी दलआना ३ बहुत जंगली चूहों का पैदा होना ४ बहुत शुक आदि पक्षियों का उत्पन्न होना ५ स्वदेशी राजा की चढ़ाई दूसरे राजापर ६ पर राजा की चढ़ाई अपने राजापर ७ ॥ भीत अर्थात् भय जो सात हैं यथा इस भवका भय १ परभव का भय २ मरने का भय ३ रोगकष्ट आदिका भय ४ नहीं रक्षा होने का भय ५ अगुप्त अर्थात् प्रत्यक्ष होनेका भय ६ अकस्मात् चानचककी आफतकाभय ७॥

रोगी दोखी दुखिया दीन। विरध त्रैस गुण संपतिहीन।१९०।
बढ़ती अंग विकलता कहीं। ये सब स्वर्ग लोकमें नहीं॥
सहजसोमसुंदरसरबंग। सबआभरणअलंकितअंग।१९१
लक्षण लक्षित सुरभि शरीर। रिद्ध सिद्ध मंदिर मनधीर॥
कामसुरूपीआनंद कंद। कामिन नेत्र कमलनीचंद। १९२।
बदन प्रसन्न प्रीत रसभरे। विनय बुद्धि विद्या आगरे॥
यों बहु गुण मंडित स्वैमेव। ऐसे स्वर्ग निवासी देव।१९३।

॥ स्वर्ग स्त्री कथन ॥

॥ दोहा छंद ॥

ललितबचन लीलावती, शुभलक्षणसुकमाल॥
सहजसुगंध सुहावनी, यथा मालती माल।१९४।
शील रूपलावण्य निधि, हाव भाव रस लीन॥
सीमा शुभगासिंगारकी, सकल कलापरवीन।१९५।
निरत गीत संगीत सुर, सब रस रीत मझार॥
कोविदा होहिं स्वभावतैं, स्वर्ग लोक की नार।१९६।
पंच इन्द्री मनको महा, जे जग में सुख हेत॥

१—जितनी वस्तु इस जीवको संसार में सुख की हेतु हैं सो सर्व स्वर्ग लोक का चिन्ह मानो॥

तिन सबही को जानयो, स्वर्ग लोक संकेत ।१९७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इत्यादिक बहु संपति थान। देवलोक महिमा असमान॥
आनतवर बिमान है जहां। धरोजन्म सुरपति नेतहां। १९८।

॥ दोहा छंद ॥

उपजो संपुट गर्भ तैं, तेज पुंज अति चंड ॥
मानो जलधर पटल तैं, प्रघटो दामिनि दंड । १९९।
एक महूरत में तहां, संपूरण तनधार ॥
किधों रत्न की सेज तज, सोवत उठो कुमार । २०० ।
मणि किरीट माथे दिपै, आनन अधिक सरूप ।
कानन कुंडल जग मगै, पानन कटक अनूप । २०१ ।
भुज भूषन भूषत भुजा, हिये हार छबि देत ॥
अंग अंग इत्यादि बहु, सब आभरण समेत । २०२ ।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

शनै शनै देषै दिश सही। लोचन कोर कान लगरही ॥
विसमैवंत होय मन ताम। कहैं कौनआयो किसधाम।२०३।
अहो कौन यह उत्तम देश। सकल संपदा थान विशेश॥

कंचन के मंदिर मणिजरे । दिपै दिव्य अपछराभरे।२०४।
अति उतंग अतिही दुति धरै। मध्य सभा मंडफ मनहरै ॥
सिंहासनअद्भुतइहिठाम । मानोमेरुशिखरअभिराम।२०५।
अनुपम नाटक देषन योग । श्रवणसुखद ये गीतमनोग॥
ये लावण्यवती वरनार। रूप जलधि वेलाउनहार।२०६।
येउतंग हाथी मद भरे। तेज तुरंगन के गण खरे ॥
कंचनरथपायक दलजेह । मोप्रतिसिरनावैसबयेह ।२०७।
सबआनंद भरे मुझ देष । सब विनीत सबसुंदर भेष ॥
जैजैकारकरैं बिहसाय । कारनकछु जानोनहिंजाय । २०८।

॥ दोहाछंद ॥

इन्द्रजाल अथवा सुपन , कै माया भ्रमकोय ।
यों सुरेश सोचै हिये , पै निरनै नहिंहोय ॥२०९॥

॥ १५मात्राचौपाईछंद ॥

तवतिस थानक देव प्रधान। मनकीबात अवधिसों जान॥
योगबचनबोलेसिरनाय।संशयहरनश्रवनसुखदाय।२१०।
हम विनती सुनियेसुरराज। जीवनजन्म सफल सबआज॥
अबसनाथ स्वामी हमभये । जन्मजोगतैंपावन थये।२११।
सूर्यउदय कमलनी बाग। विकसै यथा जग्यो सिरभाग॥

नंदवर्ध हमदेहिंअशीश। चिरयहराजकरोसुरईश ।२१२ ।
अहो नाथ यह उत्तम ठाम । स्वर्ग तेरमो आनत नाम ॥
जगतसारलछमीकोयेह । निरुपमभोगनिरंतरगेह ।२१३ ।
तुम इहि थान इन्द्र अवतरे । पुर्व जन्म दुद्धर तप धरे ॥
ये सब सुर सेवक तुमतने । ये परिवार लोक हैं घने ।२१४।
ये मनोग बनिता मंडली । तुम आदेश चहैं मनेरली ॥
ये पटदेवी लावन खान । सब देवी इन मानैं आन।२१५।
ये बिमान पुर महल उतंग । चमर छत्र सेना सप्तंग ॥
धुजासिंहासनआदिमनोग ।सकलसंपदायहतुमजोग२१६
ऐसे बचन अनंतर तबै । जाने इन्द्र अवधि बल सबै ॥
मैं पूरब कीनो तप घोर । दंड कर्म धर्म धन चोर ।२१७ ।
जीव जात को निर्भयदान । दीनो आप बराबर जान ॥
सबउपसर्ग सहे धरधीर । जीतोमहाराग रिपुवीर ।२१८ ।
काम विषम वैरीबश कियो । अरु कषाय बन कूँचा दियो ॥
जिनवरआनअखंडितपोष। चारितचिरपालोनिर्दोष।२१९।
इहिविधि सेयो धर्म महान । तिस प्रभाव दीषै यह थान ॥
दुर्गतिपात निवारणकरो। तिनमुझ इन्द्रलोकलेधरो।२२०।
सो अब सुलभ नहीं इस देह। भोग जोग है थानक येह ॥
रागआगदुखदायकसदा। चारितजलबिनबुझैनकदा।२२१

१—मनलगाकर २-सेना सप्तंगकी व्याख्या देखो छंद अंक ११ षष्टम अधिकार।

सोकारण सुरगति में नाहिं। व्रतको उदै न या पद माहिं॥
यहिसम्यक दर्शनअधिकार। शंकादिकमलबरजितसार२२२
के जिनवर की भक्ति सहाय। और न दीषै धर्म उपाय॥
यहविचारजिन पूजनहेत। उठोइन्द्र परिवार समेत।२२३।
अमृत बापिका में करन्हवन। गयोजहां मणिमयजिनभवन॥
रत्नबिंबबंदे बिहसाय। भावभगत सों सीस नवाय।२२४।
पूजाकरी दरबधर आठ। पुलकित अंगपढ़ो थुति पाठ॥
चैतबिरचजिन प्रत्मा जहां। महामहोछव कीनो तहां।२२५।
यों बहु पुन्न उपायो सही। फेर आय निज सम्पति गही॥
दिव्यभोगभुंजेबड़भाग। लोकोतमजाहिं सहजसुहाग।२२६।
शोभनरूप [1]प्रथम संठान। [2]वसुवैक्रियक सुलच्छन वान॥
कोमलसुरभि सचिक्कनदेह। सातधात बरजितगुणगेह २२७
पलकपात लोचन में नहीं। मलपसेव नख केशन कहीं॥
जराकलेश न चिंत्या सोग। नाहींअल्प मृत्युभयरोग।२२८।
इत्यादिक दुखयोग अनेक। तिनमें नहीं अमर के एक॥
[3]आठरिद्धिअणिमादिपसथ। तिसबलसकलकाजसमरथ२२९
स्वर्ग लोक के सुख की कथा। कहै कहांलो बुध बल यथा॥

१—प्रथम संठान का नाम—सम चतुर संस्थान है—जो ऊपर नीचे समान विभाग रूप शरीर के अंग उपांग में आकप होय सो सुंदर मर्याद रूप अंग होय इसी का नाम चतुर संस्थान है॥ २—देषो बाण्या आठ रिद्धि छंद अंक २२९ चतुर्थ अधिकार॥ ३—अणिम। १ महिमा २ लघिमा ३ गरिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशत्व ७ वशित्व ८॥

बैठमनोगतिबिमलाबिमान।बिचरैंनभपथ बंछितथान।२३०।
कवही मेरु जिनालयगमै। कबही आन कुलाचलरमै॥
दीप समुद्र असंखअपार। करै सुरेन्द्र सुछंद बिहार।२३१।
बर्ष बर्ष मैं हर्ष बढ़ाय। तीनबार नंदीसुर जाय॥
पंचकल्याणक समैं सुयोग। करैतीनपदनमननियोग।२३२।
और केवली प्रभुके पाय। दोय कल्याणक पूजै आय॥
निज कोठे थिरहोयसुजान। करै दिव्य बानी रस पान।२३३।
सभा सिंहासन बैठ सुरेश। देयसुरनप्रति हित उपदेश॥
करैतत्त्ववर्णन विस्तार। अनेकांत वाणी अनुसार।२३४।
जेसुर सम्यक दर्शनहीन। तपबल देवभये सुख लीन॥
तिनप्रतिधर्म वचन उच्चरै। दर्शनगुणकी प्रापति करै।२३५।
इहिविधि विविधकरै सुभकाज। महापुन्न संचै सुर राज॥
दर्शनज्ञान रत्न भंडार। चारित गुणकोनाहिं अधिकार।२३६।
धर्म बासना बासित योग। करै पुनीत पुन्न फल भोग॥
कबही सुनै अपछरा गान। निरखै नाटक निरुपम थान।२३७।
कबहीं शुभ सिंगार रस लीन। हाव भाव जोवै परबीन॥
कबही हास्यकथा विस्तरै। बनक्रीड़ा देवन संग करै।२३८।
योंनानाविधि करतबिलास। प्रतिदिन सुखसागरमैंबास॥
साढ़ेतीनहाथ परवान। दिव्यशरीर अतुलदुतिवान।२३९।

१—धर्म की बासना से जिसका योग बासित है॥

सागर बीस परम थिति जास। बीस पक्ष परलेयउसास ॥
बीसहजारवर्ष अवसान। मनसा भोजन करै महान।२४०।
पंचमापिरथीलों जिससही।अवधि शक्ति जिनशासनकही ॥
तावतमान विक्रिया खेत।सकल काजसाधनसुखहेत।२४१।
असंख्यात सुर सेवन पाय। देवी नेत्र कमल दिनराय ॥
यों पूरब कृत पुन्न संयोग। करै[1] इन्द्र इन्द्रासन भोग।२४२।

॥ दोहा छंद ॥

[2]कहा इन्द्रअहमिंद्र पद, जन्म धरै फिर आय ॥
जैन धर्म नृप की धुजा, लोक शिखर फरराय।२४३।

इति श्री पार्श्व पुराण भाषा आनन्दकुमार महा मंडली का आनत नाम तेरवें स्वर्ग में इन्द्र होना वर्णनो नाम चतुर्थम् अधिकार सम्पूर्णम् ॥

१—इन्द्र इन्द्रासन के भोग करै हैं ॥

२—क्या अर्थात् तुच्छ है इन्द्र अहमिंद्र पदकी प्राप्ति किसलिये कि इनका जन्म मरण मिटा नहीं जैन धर्म की धुजा ऊर्ध लोक के शिखरपर फहरारही है भावार्थ जैन धर्म का प्रभाव यह है कि जीव मोक्ष होकर जन्म मरणसे छूट जाता है ॥

॥ पंचम अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

वंदूं पारस पद कमल, अमल बुद्धि दातार॥
अब वरणूं जिन राजके, पंच कल्यानक सार। १।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथम अनंत अलोकाकाश। दशौंदिशा मरजाद न जास॥
दूजो दरब जहां नाहिं और। सुन्न सरूप गगन सबठौर। २।
तहां अनादि लोक थिति जान। छींदे पाय पुरुष संठान॥
कटिपै हाथ सदाथिर रहै। यह सरूप जिन शासनकहै।३।
पौन पिंड वेढों सरवंग। चौदह राजू गगन उतंग॥
घनाकार राजू गण ईश। कहे तीन सौ तैंतालीश। ४।

१—राजू की व्याख्या बहुत बड़ी है सो त्रिलोकसार ग्रंथ से देखलेना॥
२—पुरुषा कार लोक का सब से नीचे छींदे पैरों का भाग ७ उस्से ऊपर कटि का भाग १ उस्से ऊपर कटि पर दोनों हाथ धरने से दोनों कुहनियों के बीच का भाग ५ उस्से ऊपर सिर का भाग १ राजू चौंड़ा है जिनके योग फल १४ का मध्य भाग ३॥ हुवा इस ३॥ राजू चौंड़ाव को १४ राजू पुरुषाकार लंबान में गुणनेंसे ४९ गुणन फल हुवा इस ४९ को ७ राजू मुटाई में गुणनें ३४३ राजू घनाकार लोक हुआ॥

जीवादिकछह दरब सदीव । तिनसों भरो यथा घट घीव ॥
स्वयं सिद्ध रचनायह बनी । नाइस करता हरता धनी॥ ५।
दरब दिष्टि सों ध्रौव्य सरूप । पर्यय सों उत्पतव्ययरूप ॥
जैसे समुद सदाथिरलसै । लहर न्याय उपजैअरुनसै । ६ ।
लोक नाड़ि तिस मध्य महान । चौदह राजूव्योमउचान॥
राजूमित चौड़ी चहुंपास । यह त्रस खेत जिनागम भास।७।
याके बाहर जंगम जीव । समुदघात बिननाहिं सदीव ॥
तामें तीनों लोक विशाल । ऊरध मध्य औरपाताल ।८।
सोलह स्वर्ग पटल बावन्न । नव ग्रीवक नवपटलरवन्न ॥
अनुदिश और अनुत्तर येह । एकएकही पटल गिनेह ।९।
ये सब त्रेसठ पटल बखान । सिद्ध खेत सो है सिर थान॥
ऊरध लोक बसै इहिभाय।उत्तम सुरथानक सुखदाय।१०।
अधो लोक में बहुविधि भेव। सातनरक असुरादिकदेव॥
मध्यलोकपुनितीजो तहां। असंख्यात दीपोदधिजहां।११।
तिन में शोभावंत सुहात । जंबू दीप जगत विख्यात ॥
लक्ष महा जोजन विस्तार । सूर्य मंडल की उनहार ।१२।
वज्र कोट जिस कोट अभंग। परमित योजन आठ उतंग ॥
चारों दिश दरवाजे चार । तिनकेनाम लिखूं अवधार।१३।
विजै नाम पूरब मैं जान। बैजयंत दक्षिण दिश ठान॥

१—आत्मा के प्रदेश का शरीर से बाहर होकर फैलना जो सात प्रकार माना गया है देखो छंद अंक ५६ आदि ७५ पर्यंत नवम अधिकार ॥

पश्चिम भाग जयंत दुवार । उत्तर मैं अपराजितसार । १४ ।
लवण समुद्र खातिका रूप । चहुं दिश बेढ़ो सजल सरूप ॥
तहां सुदर्शन मेरु महान । मध्य भाग शोभा असमान । १५ ।
अति उतंगलख योजन सोय । रिजुबिमान जा ऊपर होय ॥
सब शैलन में ऊंचो यहै । ग्रीव उठाय किधों इमकहै । १६ ।
करै कौन गिर मेरी रीस । जिन पति न्हौन होय मुझसीस ॥
चारों दिश चारों गजदंत । नील निषधसों लगे महंत । १७ ।
छह कुल पर्वत बड़े विथार । पूरब पश्चिम दीरघ धार ॥
आठमहा गिरदिग्गजनाम । मेरु निकटआठोंदिशठाम । १८ ।
कनक वरण सोलह बच्छार । महा विदेह विषै छबिसार ॥
कंचन गिर दीषे परवान । सीता सीतोदा तट थान । १९ ।
कुरु भूँ माहिं यमक गिरचार । नील निषधके निकट निहार ॥
चार नाभिगिर मिथ्यानाहिं । मध्यम जघन भोगभूंमाहिं । २० ।
विजयारध पर्वत चौंतीस । इतनेही वृषभाचल दीस ॥
ते मलेच्छ मध खंडनविषै । चक्री जहांनांव निजलिषै । २१ ।
यों गिर दीप विषै वरनये । ग्यौरह अधिक एकसौ भये ॥
भद्रसाल बन दोयसुबास । पूरव अपर मेरु के पास । २२ ।
दो तरु जंबू सेंभल तने । उत्तम भोग भूमि मै बने ॥

१—हिमवान १ महा हिमवान २ निषध्य ३ नील ४ रुक्मी ५ शिषरी ६
२—अपर अर्थात् पश्चिम ॥ ३—जामुन वृक्ष ॥

छहद्रहवड़े[1] कुलाचल सीस । पद्म महापद्मादिक दीस ।२३।
बीस सरोवर और सुनेह । सीता सीतोदा मध तेह ॥
उत्तमं[2] मध्यम जघन विशेश । भोगभूमि छहकही जिनेश ।२४।
महादेश चौंतीस सुखेत । ऐरावत अरु भरथ समेत ॥
इतनीही नगरी परवान । आरजखंडमध्य थिरथान । २५ ।
उपसमुद्र की संख्या यही । कछू बिनाशिक कछुथिरसही ॥
पूरब दिशदो बाग महंत । देवारण्य दीपके अन्त । २६ ।
ऐसेही पश्चिम दिशदोय । भूतारण्य नाम तिनहोय ॥
गंगादिकसरिता दश[१४]चार । चौसठ[६४] महा बिदेहमझार ।२७।
बारह[१२] बिपुल बिभंगा[3] जेह । महानदी नब्बे[९०] सब येह ॥
इतनेहीसब कुंड महान । जहां तुरंगनि उतरें आन ।२८।
सतरह[१७] लाख सबन परवार । सहसछानवे[९६०००] ऊपरधार ॥
यहसब जम्बूदीप समासं[4] । आगममें विस्तार प्रकास ।२९।

॥ दोहा छंद ॥

यही कथन अंगन विषे, वरणो गणधर ईश ॥

१—पद्म १ महापद्म २ तिगंच ३ केशरी ४ पुंडरीक ५ महा पुंडरीक ६
२—मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा मैं ३ उत्तम १ मध्यम २ जघन ३ हैं इसी प्रकार उत्तर दिशा मै ३ जान लेनी जो सर्व ६ भोग भूमि हुई ॥
३—बड़ी लहर मारने वाली अथवा इनकी संज्ञाभी विभंगा है ॥
४—संक्षेप रूप जंबू दीप इसप्रकार है ॥

तीनलाख पद में सही, ऊपर सहस पचीस । ३० ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यों अनेक रचना आधार । दीप राज राजै अधिकार ॥
तहां मेरुकेदक्षिण भाग । किधोंभूमि तियशुभगसुहाग।३१।
भरथ खण्ड छह खण्ड समेत । धनुषाकार बिराजत खेत॥
तामेंसबसुखधर्मनिवास । काशीदेशकुशल[1] जनबास।३२।
गांव खेट पुर पट्टन जहां । धनेकन[2] भरे बसें बहुतहां॥
निवसै नागर जैनी लोय। दया धर्म पालैं सबकोय।३३।
जिन मँदिर ऊँचेजिन माहिं। नरनारी नित पूजन जाहिं ॥
पदपद पुरपंक्ति पेषये। ऊदवथान न कहिं देषये। ३४।
नीरअगाध नदी नित बहैं। जलचर तहांजीव नितरहैं॥
मुनिजनभूषित जिनकेतीर। काउसर्ग कर ठाड़े धीर।३५।
ऊँचे परबत झरना झरैं। मारग जात पाथिक मनहरैं॥
जिनमेंसदा कन्दराथान। निश्चल देह धरैं मुनिध्यान।३६।
जहांबड़े निर्जन वनजाल।जिनमेंबहु विधि विरछ बिशाल॥
केला कर्पट कटहल कैर। कैथ करौंदा कोंच कनैर। ३७।
किर्मला कंकोल कन्हार। कमरष कंज कदम कचनार॥
खिरनी खारक पिंडखजूर। खैरखरहटी खेजड़ भूर। ३८।

[1]—कुशल कहिये चतुर जनों का नाम है॥
[2]—धन अर्थात् डांगर ढोर कन नाज॥

अर्जुन अंबली आंब अनार। अगर अँजीर अशोक अपार॥
अरणी औंगा अरलूभने। ऊंबर अरंड अरीठा घने। ३९।
पाखल पीपल पुंग प्रयंग। पीलू पाटल पाट पतंग॥
गोंदी गुड़हल गूलर जान। गांडर गुंजा गोरखपान। ४०।
चंपाचीढ़ चरोंजी फली। चंदन चोल चँबेली भली॥
जंट जंभीरी जामन कोट। नीबु नारयल हींस हिंगोट। ४१।
सोना सीसम सेंभल साल। नीमरु सिरस सदाफल जाल॥
बांस बबूल बकायन बेर। बेत बेहड़ा बड़हल पेर। ४२।
महुआ मौलसिरी मचकुन्द। मरुवा मोगा करना कुन्द॥
तूत तबोंलनि तींदू ताल। तगर तिलक तालीस तमाल।४३।
इहिविधि रहे सरोवर छाय। सबही कहत कथा बढ़जाय॥
तहां साधु एकांत बिचार। करैं पठन पाठन विधिसार। ४४।
विविध सरोवर शीतल ठाम। पंथी बैठ लेहिं विश्राम॥
निर्मल नीर भरे मनहार। मानोमुनिचित विगतविकार।४५।
सोहैं सफल साल के खेत। भये नम्र फल भार समेत॥
सज्जनजनज्यों संपति पाय। छोड़ गुमान[1] चलैं शिरनाय।४६।
केवलज्ञानी करत विहार। जहां सदा सबसुख दातार॥
आचारज शुभ संघसमेत। विहरमान[2] भविजन हितहेत।४७।
केईजहां महाव्रत लेहिं। भवदुख बारि जलांजलि देहिं॥
केईधीर उग्र तप करैं। ते अहिमिंद्र जाय अवतरैं। ४८।

१—गुमान अर्थात् मान॥ २—विहार करते हुये॥

केई श्रावक के व्रत पाल । अच्युत स्वर्ग[1] बसैं चिरकाल ॥
केई कर जिनयज्ञ[2] विधान । पावैं पुन्नी अमर विमान । ४९ ।
केई मुनिवर दान प्रभाव । भोगैं भोग भूमि की आव ॥
अतिपुनीत सबही विधिदेश । जहाँजन्म चाहैं अमरेश ।५० ।
तहां बनारस नगरी बसै । देखत सुर नर मन हुल्सै ॥
है प्रसिद्ध धरनी परसोय । तीरथ राज कहैं सब कोय । ५१ ।
शोभा जाकी कहिय न जाय । नाम लेत रसना शुचि थाय ॥
जहां सरोवर नाना भांत । जिनके तीर तरोवर पांत । ५२ ।
निजजीवन[3]जीवनसुख देहिं । कमलसुबास शिलीमुखलेहिं ॥
सोहैं सघन रवाने बाग । फले फूल फल बढ़ो सुहाग । ५३ ।
सजल खातिका राजे खरी । उठै लहर लोयन[4] गति हरी ॥
कोट उतंग कांगुरे लसैं । मानो स्वर्ग लोक दिशिहसैं । ५४ ।
ऊंचे महल मनोहर लगें । तोरन कलश शिषर जगमगें ॥
अतिउन्नतजिनमंदिरजहां । तिनमहिमावरणनबुधकहां । ५५ ।
रत्न बिंब राजैं जिहि माहिं । शिषर सुरंग धुजा फहराहिं ॥
कंचनके[5] उपकरन समाज । आवैं भविजन पूजाकाज । ५६ ।
जै जै शब्द सहितछबि छजै । किधौंधर्म रयणायरगजै ॥
नगर नारिनित बंदनजाहिं । जिन दर्शन उच्छवउरमाहिं । ५७ ।

१—सोलहवां स्वर्ग ॥ २—जिन पूजा ॥ ३—जीवन अर्थात् जल ॥
४—आखों की चाल को रोक दिया भावार्थ आंखैं खुली देखती रहीं ॥
५—कंचनके भाजनोंका समूह साथ लेकर भविजन पूजा काजआवैं ॥

भूषण भूषित सुंदर देह। मानो स्वर्ग अपछरा येह ॥
सब ग्रहस्थ सोधै[1] खट कर्म। पालैप्रजा अहिंसा धर्म।५८।
[2]दोष अठारह बरजित देव। तिस प्रभुको पूजैं बहु भेव ॥
चाह बिना बराजित जो धीर। सोई गुरु सेवैं बरवीर।५९।
आदि अंत जे बिगत विरोध। तेई ग्रंथ सुनैं मनसोध ॥
सत्य शील गुण पालैं सदा। तातें लोग सुखी सर्बदा। ६०।

॥ दोहा छंद ॥

प्रजा बनारस नगरकी, नागर नीत सुजान।
चार रत्न के पारखी, लहिये घर घर थान। ६१।
देव धर्म गुरु ग्रंथ ये, बड़े रत्न संसार ॥
इनको परख प्रमानये, यहनर भव फलसार। ६२।
जे इनकी जानैं परख, ते जग लोचन वान।
जिनको यह शुध नापरी, ते नर अंधअजान। ६३।
लोचन हीने पुरुषको, अंध न कहिये भूल।
उर लोचन जिनके मुँदे, ते अंधे निर्मूल। ६४।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहि विधिनगरबसै बहुभाय। सबशोभा वरणीनहिंजाय॥

१—सिज्झाय अर्थात् सामायक १ तप २ जिन पूजा ३ संयम अर्थात् इन्द्रियों का रोकना ४ श्रीगुरु के पावोंमें चित्त लगाना ५ और अपने वित्त समान दान देना ६ ये षट्कर्म हैं ॥ २—अठारह दोष की सूची पहिले लिख आयेहैं देखो ८१ रूपा छंद ३६ अधिकार २ ॥

अश्वसेन भूपति वड़ भाग । राजकरैतहां अतुलसुहाग।६५।
काशिपगोत्र जगतपरशन्स । वंशइक्ष्वाक विमलसरहन्स॥
तेजवंत दिनपतिज्योंदिपै । प्रभुता देषशची पतिछिपै ।६६।
कल्प तरोवर सम दातार । रति पति लाजै रूप निहार॥
रैणायर सम अति गंभीर । पर्वत राज बराबर धीर। ६७ ।
सोम समानसबन सुखदाय । कीरति किरण रहीजगछाय॥
तीन[1] ज्ञान संयुक्त सुजान । परम विवेकी दया निधान।६८।
जिनपद भक्त धर्म धन वास । गुरु सेवा रति नीत निवास ॥
कला चातुरी बुध विज्ञान । विद्या विनै संपदा थान ।६९।
सकल सार गुण माणक कोष । उभय[2] पक्ष निर्मल निर्दोष ।
जिनसूरजउदयाचल राय।तिसमहिमावरणीकिमजाय।७०।
बामा देवी नाम पवित्त । तिनके घर रानी शुभ चित्त ॥
निरुपमलावन सबगुणभरी।रूपजलधि बेलाअवतरी।७१।
नखशिषसहज सुहागिननार।तीनलोक तियतिलकसिंगार॥
सकल सुलक्षण मंडित देह । भाषा मधुर भारती[3] येह।७२।
रंभा रति जिस आगे दीन । रोहिणि रूप लगै छबिछीन ॥
इन्द्र बधू इम दीषै सोय । रवि दुति आगे दीपकलोय ।७३।
जन मन हर्ष बढ़ावन एम। कातिक चांद चंद्रिका जेम ॥

१—मति-श्रुति, अवधि ॥
२—दोनों पक्ष अर्थात् पिता का कुल माता की जाति ॥
३—वाणी ॥

सकलसारगुणमणिकीखान। शीलसंपदाकी निधिजान ।७४।
सज्जनता की अवधि अनूप। कला सुबुधि की सीमारूप ॥
नाम लेत अघतजै समीप। महा पुरुष मुक्ताफलसीप ।७५।
त्रिवभुन नाथ रत्नकी मही। बुधिबल महिमा जाय न कही ॥
बहुविधि दंपति संपति जोग। करै पुनीत पुन्नफल भोग।७६।

॥ उक्तंच प्राकृत गाथा ॥

॥ आर्या छंद ॥

तित्थयरा तप्पियरा हल हर चक्कांई वासदेवांई।
पडि बास भोय भूमिय आहारोणात्थिणी हारो। ७७।

॥ भाषा टीका ॥

तिर्थंकर और उनके माता पिता बलभद्र चक्रवर्ति नारायण और भोगभूमि वासी युगल इन सबके आहार हैं निहार अर्थात् मल मूत्र नहीं होता ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जिनवर जिन माता जिन तात। बासदेव बलदेव विख्यात ॥
चक्री राय युगलया जोय। इनसब के मल मूत्र नहोय।७८।

॥ दोहा छंद॥

पूरब गाथा को अरथ, लिखो चौपाई लाय।

खट पाहुड़ टीका विषै, देष लेउ इहि भाय। ७९।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

अब आगे भविजन मन थंभ । सुनो गर्भ मंगल आनंद ॥
एक दिना सौधर्म सुरेश। धनपति प्रति दीनो उपदेश।८०।
आनतेंद्र[2] की थित में सही। आयु छ मास शेष अव रही ॥
तेबीसम[23] अवतार महान । होसी नगर बनारस थान ।८१।
अश्वसेन भूपति के धाम । पंचाश्चर्ज करो अभिराम ॥
यह सुरेन्द्र नें आज्ञा करी ।सो कुबेर निज माथे धरी।८२।
चलो तुरत लाई नहिं बार । सोहै संग अमर परवार ॥
हर्षत अंग पिता घर आय । करी रत्न वर्षा बहुभाय। ८३।
जिनके तेज तिमर नाहिं रहै। नाना वरण प्रभा लह लहै ॥
ऐसे निर्मोलक नग भूर। वरषैं नृप के आंगन पूर। ८४।

॥ दोहा छंद ॥

नभसों आवें झलकती, मणि धारा इहिभाय ।
सुरग लोक लक्ष्मी किधौं सेवन उतरी माय। ८५।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

साढ़े तीन कोड़ परवान। यों नित वरषैं रत्न महान॥

१—एक ग्रंथ का नाम । २—तेरवां स्वर्ग ।

सुरभि सुगंध कल्प तरुफूल । वरषावैं सुर आनंदमूल । ८६।
गंधोदक की वरषा करैं । मानो मुक्ताफल अवतरैं ॥
प्रति दिन देव दुंदभी बजै ॥ किधौं महा रैणायर गजै । ८७।
नंद विरध जैजै उच्चरैं । मात पिता प्रति सुरयों करैं ॥
इहि विधि पंचाश्चर्य बिलोक । जैनी भये मिथ्याती लोक।८८।

॥ दोहा छंद ॥

देवन किये छ मास लों, पंचाश्चर्य अनूप ॥
देष देष परजा भई, आनंद अचरज रूप । ८९ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यों अति आनंद सों दिन जाहिं। माता मगन सुखोदधि माहिं ॥
माणकजटित मनोहर धाम । रत्नपलंक सेज अभिराम ।९०।
मणिमय दीपजहां जगमगैं । अति सुगंध आवत अलिपगैं ॥
करि चतुर्थानंद स्नान । करैं सैन जननी सुखमान । ९१ ।
पश्चिम रैन रही जब आय । सोलह सुपने देषे माय ॥
तिनके नाम लिखूं अवलोय। पढ़त सुनत पातकक्षै होय। ९२।

॥ पद्धडी छंद ॥

सुपनावलि सोलह सुनहु मीत। जिन राज जन्म सूचक पुनीत।

१—ऋतु समय स्त्री चौथे दिन स्नानकर शुद्ध होती है भावार्थ वामा देवी शुद्ध स्नानकर सोगई और ऐसा समय गर्भका कारण है ॥

ऐरावत हाथी प्रथमदीस। मद गीलेगंड विशालशीस।९३।
देष्यो डक्कारत वृषभ राज। अति उज्जल मोती वरणभाज॥
देष्यो पंचनन धवलदेह। निज नाद करैं ज्यों सरदमेह।९४।
देष्योमणिआसनशोभमान।तहां हेमकलश[2] कमलासनान॥
देखीदो पावनपहुप माल। भमरावलिवेढ़ीअतिविशाल।९५।
रवि मंडल देष्यो तम गलंत। उदयाचल ऊपर उदयवंत॥
संपूरण तारापति विमान। तारा वलिमध्य विराजमान।९६।
जलतिरत मनोहर मीनजोट। देषे जिन जननीपलकओट॥
देषेचामीकरकलश दोय।अति भलकैं वारिजढकेसोय।९७।
देष्यो कमलाकर कमल[3] छन्न। वहु हंसी हंसन सों रवन्न॥
देष्यो रैणायर गर्जमान। पुनि सिंह पीठ माणक निधान।९८।
फिर देष्यो देव विमाग योग। धुज घंटा भालर सों मनोग॥
प्रघटोमहीफोरफनेंद्रधाम।मणिकंचनमयनयनाभिराम९९।
पुनि रत्न रांशि देषी अनूप। इन्द्रायुध वर्ण विचित्र रूप॥
निर्धूम धनंजय दीपमान। येदेखेसोलह सुपन जान। १००।

॥ दोहाछंद ॥

गजप्रवेशमुखकमलमैं,सुपनअंत अविलोय॥

१—पौष माघ की वर्षा॥
२—मणि आसन शोभमानपर हेम कलश से लक्ष्मी को स्नान करते देखी॥
३—कमलों कर छाया हुआ॥ ४—नैनों को आनंद देनेवाला॥ ५—दिपती हुई अर्थात् चमकती हुई॥ ६—सुपनों के अंत में भावार्थ सुपनों के पीछे॥

सुख निद्रा पूरी भई, भयो प्रात तम खोय ।१०१।
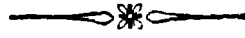
॥ प्रातकाल कथन ॥

॥ दोहा छंद ॥

पुब्ब दिवाकर ऊगयो,गयो तिमर दुखदाय ॥
जैसे जैन सिधांतसुन, भरम भाव मिटजाय ।१०२।
मंदतेज तारे भये, कछु दीषें कछु नाहिं ॥
ज्यों तिर्थंकर के उदय, पाषंडी छिपजाहिं ।१०३।
सूरजवंशी जे कमल, खिले सरोवर माहिं ।
ज्योंजिनबिंबबिलोकके, भविलोचनविकसाहिं।१०४।
चंद विकाशी कमल जे,विकसत भये न सोय ॥
ज्योंअजान जिन वचनसुन, मुद्रित मूलनहोय।१०५।
चक्रबाक हरषत भये, ज्योंजिन मत्त संयोग ॥
जीवसुमति पियनारिको, मिटोआनादिवियोग।१०६।
घूघूगण भूतल विषे, आंधे भये असूझ ॥
जैनग्रन्थ के रहस में, ज्यों परमती अबूझ ।१०७।

१—जीव रूप पुरुष और सुमति रूप नारी का जो अनादि काल से वियोग था सो मिटगया ॥

कमलकोष मधुकर बँधे, छुटेजग्यो सिर भाग॥
यथा जीव जिनधर्मसों, मुक्तिहोय भवत्याग।१०८।
पथिक लोग मारग चले, सूझे घाट कुघाट॥
जिन धुनि सुन सूझै यथा, स्वर्गमुक्ति कीबाट।१०९।
इहिविधिभयोप्रभातशुभ, आनन्दभयोअतीव॥
धर्म ध्यान आराधना, करनलगे भवि जीव।११०।
जिनजननी रोमांचि तन, जगीमुदितसुखजान॥
किधोंसकंटककमलनी, विकशीनिश अवसान।१११।
मंगलीक बाजित्र धुनि, सुन वन्दी जन गान॥
उठीसेजतज सुखभरी, धरो हिये शुभ ध्यान।११२।
सामायक विधि आदरी, पंच परम पदलीन॥
औरउचित आचारसब, न्हौन विलेपन कीन।११३।
पहरे शुभ आभर्ण तन, सुन्दर बसन सुरंग॥
कल्पबेल जंगम किधौं, चलीसखी जन संग।११४।
राजसिंहासन भूप तब, बैठे सभा सुथान॥
देवी आवत देखिकै, कियो उचित सनमान।११५।
अर्धासन बैठन दियो, जोग बचन मुख भास॥
योंरानी विकशत बदन, बैठी भूपति पास।११६।
सभा लोक तारे विविधि, भूपति चांद सरूप॥
श्रीबामा देवी तहां, दिपै चन्द्रिका रूप।११७।
स्वामी सोलहु सुपनहम, देखे पश्चिम रैन॥

श्रीमुखते इनको सुफल, कहो श्रवन सुखदेन । ११८ ।
अश्व सेन भूपाल तब, बोले अवधि बिचार ॥
एकचित्त कर देवितुम, सुनो सुपन फलसार । ११६ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

धुरगजेन्द्र दर्शन तैं जान । होसी जगपति पुत्र प्रधान ॥
महाद्यषभपुनि देख्यो सोय । जगजेठो नंदनतुमहोय । १२० ।
स्वेतसिंह दर्शन फलभास । अतुल अनन्ती शक्तिनिवास ॥
कमलामज्जन तैंसुरईश । करैंन्हौनकनकाचल शीश । १२१ ।
पहुपदाम दो देषीसार । तिसफल दुबिधि धर्मदातार ॥
शशितैं सकल लोकसुखदाय । तेज पुंज सूर्य तैं थाय । १२२ ।
मीन युगलतैं सबसुखभाज । कुंभविलोकन तैं निधिराज ॥
सरवरतैं सब लक्षणवान । सागर तैं गंभीर महान । १२३ ।
सिंहपीठ तैं मृगलोचनी । होयबाल तुमत्रिभुवन धनी ॥
सुर विमान देख्यों सुख पाय । स्वर्ग लोकतैं उपजैआय । १२४ ।
नागराज ग्रहको सुनहेत । जन्मैं मतिश्रुति अवधिसमेत ॥
रत्नराशि तैं गुणमणि थान । कर्मदहन पावकतैं जान । १२५ ।
गज प्रवेश जो बदन मझार । सुपन अन्तदेष्यों बरनार ॥
श्रीपारस जिनजगत प्रधान । गर्भ तुम्हारे उतरैआन । १२६ ।

१--सुपनों के अन्त में

॥ दोहा छंद ॥

सुन बामादे सुपनफल, रोमांचित तनभूर ॥
सुबचन जल सींचतकिधों, उगेहर्ष अंकूर । १२७ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबसौधर्म सुरेश विचार । स्वामि गर्भ अवसर निर्धार ॥
कुलगिरकमल वासनीजेह ।श्रीआदिक देवीगुणगेह । १२८।
तिन्हैंबुलाय कहोशुभ भाउ । अश्व सेन भूपति घरजाउ ॥
बामादेवी के उरथान । तेबीसम जिन उतरे आन । १२९ ।
तिनकीगर्भ शोधनाकरो । निज नियोग सेवामन धरो ॥
यहसुनसब आनंदितभई । इन्द्रआन माथे धरलई । १३० ।
स्वर्गलोक तजि आई तहां । बसे बनारस नगरीजहां ॥
महाकांततनलावनभरी । मानोनभ दामिनिअवतरी । १३१।
अंगअंग सबसजे सिंगार । रूपसम्पदा अचरज कार ॥
चूड़ामणि माथेजगमगै । देखतचका चोंधसी लगै । १३२ ।
सुरतरुसुमन दामउरधरी।अतिसुवास दशदिशि विस्तरी॥
श्रवनसुखद नेवरझंकार। शोभा कहत न आवै पार । १३३।
आय नृपत के पायन नई । आयसु मांग महल में गई ॥

सिंहासन थितिमाय निहार । करप्रणाम कीनो जैकार।१३४।

॥ दोहाछंद ॥

जननी देहसुभावसों, अतिनिर्मल अविकार ॥
ताहि कुलाचल वासनी, औरकरैं शुचिसार ।१३५।
कृष्णपाखवैशाखदिन, दुतिया निश अवसान ॥
विमलविशाखा नखतमें, बसेगर्भ जिन आन ।१३६।
यथासीप संपुट विषे, मोती उपजे जान ॥
त्योंहीं निर्मल गर्भ में, निराबाध भगवान । १३७।
गर्भ बसैं पर गर्भ तैं, बरतैं भिन्न सदीव ॥
घटतैंघट बरतीगगन, क्योंनहिं भिन्नअतीव ।१३८।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तबजिन पुन्नपवन बसहले । चहुँविधि[1] सुरकेआसनचले ॥
चिह्नदेख इन्द्रादिकदेव। जानोंअवधि ज्ञानबलभेव । १३९ ।
जिनवर आजगर्भ अवतरे । यहविचार उरआनन्द भरे ॥
चढ़विमान परिवारसमेत । चलेगर्भ कल्यानक हेत।१४०।
जैजैकार करत बहुभाय । उच्छव सहित पिता घर आय ॥
मातपिता आसन परठये। कंचनकलश नहावतभये । १४१।

१--चार प्रकार देवता

गर्भमध्य वरतीभगवान । प्रणमेंदेव धरो मन ध्यान ॥
गीत निरत बाजित्र बजाय । पूजा भेंट करी शिरनाय।१४२।
यों सुरगण सब साध नियोग । गये गेह कर कारज जोग ॥
इन्द्रराजको आयसुपाय । रुचक वासिनीदेवी आय।१४३।
यथायोग सब सेवाकरैं । छिनछिन जिनजननी मन हरैं ॥
रुचक दीप तेरह मो जहाँ । रुचकनाम पर्वतहैतहाँ।१४४ ।
सो चौरासी सहस प्रमाण । इतने योजन उन्नत जान ॥
इतनोहीं विस्तीरणधार । दीप मध्य सो बलयाकार[1] ।१४५।
ताकेशिषर कूटबहु लसैं । दिशाकुमारी[2] तिनमें बसैं ॥
तेसबसेवन आवेंमाय । यह नियोग इनको सुखदाय ।१४६ ।

॥ कुसमलताछंद ॥

आई भक्ति नियोगिनि देवी । जिन जननीकी सेवभजैं ॥
कोई न्हान विलेपनठानैं । कोईसार सिंगारसजैं ।१४७।
कोई भूषन बसन समप्पै । कोई भोजन सिद्धकरैं ॥
कोई देय तबोल रवाने । कोई सुंदर गान करैं ।१४८ ।
कोई रत्न सिंहासन थापैं । कोई ढोलैं चमर बरो ॥
कोई सुंदर सेज बिछावैं । कोई चापैं चरन करो।१४९।
कोई चंदन सों घरसींचैं । सारे महल सुबास करी ॥

१–गोल है चूड़ी आकार.
२–एक प्रकार की देवी हैं.

कोई आँगन देय बुहारी । झारैंफूल परागपरी ।१५० ।
कोई जल क्रीड़ा कर रंजे । कोई बहु बिधि भेष किये ॥
कोई मणि दर्पण करधारैं । कोई ठाढ़ी खड़ग लिये ।१५१ ।
कोई गूँथ मनोहर माला । आवै आन सुगंध षरी ॥
कोई कल्प तरोवर सोंले । फल फूलनकी भेटधरी । १५२ ।
कोई काव्य कथा रस पोषे । कोई हास्य विलास ठवैं ॥
कोई गावै बीनबजावैं । कोई नाचत सीसनवैं । १५३ ।

॥ दोहा छंद ॥

इहिं विधिसेवा करत नित,नवैं मास शुभश्रेय ॥
प्रश्न करै सुरकामनी, माता उत्तर देय ।१५४।
अंतरलापि[1] पहेलका, बाहिर[2] लापिका एव ॥
बिन्दु[3] हीन निहोंठपद[6], क्रियागुप्ति[7] बहुभेव ।१५५ ।

१–अन्तरलापि–पहेली उसको कहते हैं जिसका उत्तर उसी में हो बाहर से न लाया जावै यथा उदाहरण पहेली बेर नाम फल । हिय कठोर कोमल बदन दुर्जन सँग बिसराम । एक बेर मैं कहत हूँ फेर न लेऊँ नाम यह अर्थचित्रअलंकारकीजाति है.

२–बाहिर लापिका उस पहेली को कहते हैं जिसका उत्तर बाहर से लिया जावै यथा उदाहरण पहेली कसेरू नामफल–श्याम बरण परहर नहीं जटा धरें नाहिं ईश ना जानूं पिया कौन है केश लगायो शीश–यह अर्थचित्र अलंकार की जाति है.

३–बिन्दु हीन अलंकार उसे कहते हैं कि जिस छन्द को कवि ऐसा रचै जिसमें अनुस्वार बिंदु वा विसर्ग बिंदु न होय यथा बेग कहा करिये गड़भाग । दिखा गहन जगत को त्याग- यह वरण चित्र अलंकार की जाति है.

६–निहोंठ अलंकार उसे कहते हैं कि जिस छन्द में ओष्ट स्थानी वर्ण उवर्ण और पवर्गी अक्षर और उवर्ण की मात्रा नहीं यथा उदाहरण कली कविच-कनक लजात न आनन तैं चन्द्रकांति ललित चखन कंज खंजरीट हीन हैं–यह वर्णचित्र अलंकारकी जातिहै.७–क्रियागुप्तअलंकार उसेकहतेहैं जिसमेंक्रियाछिपीहुईहोयथा । पालक मेथी सोया खाकर-यहां प्रत्यक्ष में पालक मेथी के सम्बन्ध से सोया साग को नाम प्रतीत होता है परन्तु यहां सोया क्रिया सोनेके अर्थमें है यहअर्थ चित्र अलंकार की जाति है ॥

इत्यादिक आगम उकत, अलंकार कीजात॥
अर्थगूढ़ गंभीर सब, समझावै जिन मात। १५६।
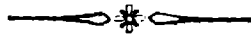
॥ देवाँगनाप्रश्न माताउत्तर॥

॥ १५ मात्राचौपाईछंद ॥

तुमसी[1] त्रिया कौन जग आन। तिर्थंकर सुतजनै महान॥
जगमैंसुभटकोनसेमाय। जेनर जीतैंविषय कषाय। १५७।
कोन कहावै कायर दीन। इन्द्री मद मेटन बलहीन॥
पंडित कौन सुमारग चलै। दुराचार दुर्मारग दलै १५८।
माता मूरख कौनमहंत, विषई जीव जगत जावंत॥
कौनपुरुष[2] सानर भवधार, जोसाधै पुरुषारथ[3] चार। १५९।
कोन पुरुष का[4] कहियेमर्म। जो शठ साध न जानै धर्म॥
धन्य कौन नर इस संसार। योवन समैं धरै व्रतभार।१६०।
धिक किनको कहिये सबैंग। जे धर करैं प्रतिज्ञा भंग॥
कौन जीवके वैरी लोय। काम क्रोधहैं औरन कोय। १६१।
जननी जगमैं कौन मलीन। पातक पंकमलिन मतहीन॥

१—प्रश्नोत्तर अलंकार॥ २—सापुरुष कहिये उत्तम पुरुष कौन ३—अर्थ १ काम २ धर्म ३ मोक्ष ४॥ ४--का पुरुष कहियै खोटा पुरुष कौनहै इसका भेद कहो॥

कहोकौननर नित्तपवित्त । ब्रह्मचर्य धारी दृढ़ चित्त ।१६२।
कौनपशू मानुष आकार । जिनके हिरदै नाहिं बिचार ॥
अंधकोन जोदेवअदेव । कुगुरुसुगुरु कोभेदनभेव ।१६३ ।
बधिर कौनसे उत्तरदेह । जैन सिधाँत सुनैनहि जेह ॥
मूकनामनरकैसें लहै । जो हित सांच बचन नहि कहै।१६४।
लाँबी भुजा कौन करहीन । जिनपूजा मुनि दान न दीन ॥
कौनपाँगले पाँवसमेत । जेतीरथ परसें न अचेत ।१६५ ।
कौनकुरूप जननि कहु एह । शीलासिंगार बिनानरजेह ॥
वेगकहाकरियैबड़भाग। दिक्षागहन जगतकोत्याग ।१६६ ।
मित्रकौन हितवंछकहोय । धर्म दिढ़ावै आलस खोय ॥
शत्रुकौनजो दिक्षालेत । बिघनकरै परभवदुखहेत १६७ ।
जियको कोन शरण हैमाय । पंचपरम[1] गुरु सदा सहाय॥
इहिविधि प्रशनकरैं सुरनार । माताउत्तर देह बिचार।१६८।
वामादेवी सहज प्रबीन। सकल मरम जानै गुणलीन ॥
पुरुषरत्नउरअन्तरवहै।क्योंनाहिंज्ञानअधिकतालहै ।१६९।

॥ दोहा छंद॥

निबसै निर्मल गर्भ में, तीन ज्ञान गुणवान ॥
फटकमहल में जगमगै, ज्योंमणि दीप महान ।१७०।

१—अर्हंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ ॥

उदैवान दिनकरसमैं, पूर्व दिशा छबितेम ॥
त्रिभुवनपति सुतउरधैरे, सोहत जननी एम ।१७१।
गर्भ भार व्यापे नहीं, त्रिबली भंगन होय ॥
देहन दीषै पीतछबि, और विकार न कोय ।१७२।
ज्योंदर्पन प्रति बिंबसों, भारी कह्योन जाय ॥
त्यों जिनपति के गर्भसों, खेद न पावै माय ।१७३।
कल्पलतासीलसतअति, जननीछबि संयुक्त ॥
मंदहास कुसुमत भई, अरुफल है फलपुत्त ।१७४।
देव राजके बचनसों, अहनिश हर्षत अंग ॥
अलषरूप सेवै शची, लिये अपछरा संग ।१७५।
पूरबवत नवमास लों, पंचाश्चर्य अनूप ॥
अश्व सेन भूपालघर, किये धनद सुखरूप ।१७६।
योंसुखसों निशदिन गये, खेद नाम काहिंनाहिं ॥
यहसब पुन्य प्रभाव है, यही रहस इस माहिं ।१७७।

श्री पारश्वे पुराण भाषा गर्भ कल्याणक वर्णन नाम पंचम अधिकार सम्पूर्णम् ॥
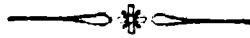
॥ षष्टम अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

रागादिक जलसों भरो, तन तलाव बहुभाय ॥

१—पेटके तीन बल भंग न हों ॥ २—देखो छंद८३ आदि८८पर्यंत पंचम अधिकार

पारस रविदर्शत सुखै, अघ सारस उड़जाय। १।
गर्भ[1] मास पूरण भये, नभ निर्मल आकार॥
पोष मास एकादशी, श्याम पक्ष शुभबार। २।
बामा देवी पुब्ब दिश, जन्मो जिनवर भान॥
मुदितभयोत्रिभुवनकमल, अशुभतिमरअवसान।३।
अश्वसेन नृप उदय गिर, उगयो बाल दिनेश॥
तीनज्ञान किरणावली, लिये जगत परमेश। ४।

॥ पद्धड़ी छंद ॥

जन्मों जब तीर्थंकर कुमार। तिहुँलोक बढ़ो आनंदअपार॥
दीखैंनभनिर्मल दिशअशेश।कहिंआंधी मेहनधूल लेश।५।
अतिशीतल मंद सुगंध वाय। सो बहनलगी सुखशांतिदाय॥
सबसुजनलोकहर्षविशेश।ज्योंकमलखण्डप्रगटतादिनेश ६।
घंटा घन गरजे देवलोक। जोतिष घर केहरनाद थोक॥
भवनालय बाजे सहज संख।विंतरनिवास भेरी असंख।७।
येअनहदबाजे वजेजान। जिनराज जन्म अतिशयमहान॥
बहुकल्पतरोवर पहुपवृष्टि।स्वयमेवकरन लागे विशिष्टि।८।
इन्द्रासन कांपे अकसमात। येकार्न[2] किधों सारथ सुजात॥

१—अर्थात् नवमांस॥

२—ये कार्न अर्थात् इन्द्रासन का चान चक कम्पाय मान होना मानो प्रयोजन सहित पैदाहुआ सो प्रयोजन क्या। जिनदेव का जन्म भूलोक में हुआहै ऐसी समय में इन्द्र का आसन पर बैठना योग्य नहीं है अविनयकी बात है॥

जिनजन्मभयो भूलोकमाहिं । उच्चासन अब तुमजोगनाहिं ९ ।
आनम्रभये मणिमुकटएम । श्रीजिनप्रतिकरतप्रणामजेम ॥
येचिह्नदेष इन्द्रादिदेव । तबअवधि ज्ञानबलजानभेव । १० ।
निर्धार बनारस नगरथान । तीरथपति जन्मों आजआन ॥
प्रभुजन्मकल्याणककरणकाज । उद्यमआरंभो देवराज । ११ ।
परवारसहित सबइन्द्रनाम । [1]आयेमिलप्रथम सुरेन्द्रधाम ॥
नानाविधिबाहनचढ़ेजेह । जिनभक्तिसलिलसिंचतसुदेह १२
सप्तांगसेन तबचलीएम । यह महाजलधि की लहर जेम ॥
[1]हाथी[2]रथ[3]पायक[4]वृषभ[5]बाज । गायनि[6]निर्तकि[7]सेनासमाज । १३ ।
एकेक सेन में सातकच्छ । तिहिमाहिं प्रथमचउ[2]असीलच्छ ॥
फिरदुगुणदुगुणसातलोंजान । इसभांतसात सेनामहान १४ ।
सौकोरजोर छैकोर और । अठसट्ठ लाष ऊपर बहोर ॥
यहएकहस्ति सेनाप्रमान । ऐसीही सब सातों समान । १५ ।
[3]तहिंनागदन्तसुरआभियोग । सोकरतविक्रियानिजनियोग ॥
ताप्रतिआज्ञा दीनी सुरेन्द । तिनकीनों ऐरावत गयन्द । १६ ।
लखयोजन मान मतंगईश । अतिउन्नतदेह उतंगशीश ॥
शुभशेतवरणमनहरतकाय । लीलागतिधारै ललितपाय १७
सबलसतसुलच्छण अंगअंग । नखविद्रुमवर्ण मनोभिरंग ॥

१—सौधर्म नाम इन्द्र के पास आये ॥ २—अर्थात् ८४ लाख ॥

३—दस प्रकार के कल्प वासी देवों में से आभियोगनवी प्रकार के देव हैं जो बाहनविक्रया करतेहैं सो नाग दत्त नाम देवने अपने नियोग हस्ती विक्रयाधारणकरी ॥

गंभीर घनाघनघोषजास। बहुसुंदरसुंड सुगंध सांस। १८।
बहुलसतजुशोभाजासअंग। नहिंगिणीजाहिं जिसछबितरंग
सोकामसरूपी कामगौन। जादेखत मोहित तीनभौन। १९।
घनघोरत घंटा लंब मान। मणि घूंघर माला कंठथान॥
सोरणपाखर सोदिपै देह। संपाजुत मानो शरद मेह। २०।
[1]सौबदन बिराजत शोभवन्त। एकेकबदन में आठ दन्त॥
प्रतिदंतसरोवरएकदीस। सरसरहँकमलनीसो[2]पैंचीस। २१।
एकेक कमलनी प्रतिमहान। पच्चीसमनोहर कमल ठान॥
प्रतिकमल एकसौआठपत्र। शोभावरणीनहिंजायतत्र। २२।
पत्रनपर नाचें देवनार। जगमोहित जिनकीछबिनिहार॥
[3]नवनवरस पोषैंकरतगान। लावन्यजलधिवेलासमान। २३।
तिसहाथी ऊपर शचीसंग। सौधर्मसुरगपति मुदितअंग॥
आरूढ़भयोअतिदिपतएम। उदयाचलमस्तकभानुजेम २४
चंद्रोपकचामर छत्रशीश। [4]दसजाति कल्पसुर सहितईश॥
ईशानप्रमुखइमदेवराज। निजनिजबाहनकोचलै[5]साज। २५।
परियनसमेतउरहर्षभाव। जिनजन्मकल्याणककरणचाव॥
बाजेसुरदुन्दभिविविधिभेव। जैकारकरैंमिलसकलदेव। २६।

१—अर्थात् १०० ॥ २—अर्थात् १२५ ॥ ३—नए नए ॥
४—कल्प वासी देव दश प्रकारहैं इन्द्र १ समानिक २ त्रायस्त्रिंशत ३ पारिषद ४ आत्म रक्षक ५ लोकपाल ६ अनीक ७ प्रकीर्णक ८ अभियोग ९ किल्विष १० ॥ ५—सजाकर ॥

उपजो कोलाहल गगन थान। सब दिशि दीषैं बाहन विमान॥
आकाशसरोवरअतिगंभीर। इन्द्रादिअमरतनतेजनीर।२७
तहांविकशतमुखअपछराएम।यहखिलोकमलनीबागजेम॥
इहिं विधिदेवागमभयो जान।अवतरेबनारसनगरथान।२८।
चन्द्रादि[1] जोतषी पंच जात। दस[2] भेद भवनवाशीविख्यात॥
पुनि आठ जातके वान[3] देव। सब आये इन्द्रसमेत एव।२९।
निज निज बाहनचढ़सपरिवार।जिन जन्ममहोछवहियेधार॥
तव पुरप्रदच्छना सुरन दीन।अतिहर्षत उरजैकारकीन।३०।
बन बीथी मारग गगन रोक। सब ठाड़े देवी देव थोक॥
सब शक्रशची मिल भूप गेह। आयेघरआंगनभरोतेह।३१।
तब इन्द्र बधू अति रंजमान। सोगई[4] गुप्तजिन जन्मथान॥
देषी जिनमात सपूतनाम। परदच्छना दे कीनो प्रणाम।३२।
सुत रागरंगी सुखसेज मांझ। जोंबालक[5] भानुसमेतसांझ॥
करजोरयुगुल सिरनाय नाय।थुतिकीनीबहुजानैनमाय।३३।
सुख नींद रचीतव शची तास। माया मय राखो पुत्रपास॥

१–चन्द्र १ सूर्य २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारे ५

२–असुर कुमार १ नाग कुमार २ विद्युत कुमार ३ सुपर्ण कुमार ४ अग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिक् कुमार ८ वायु कुमार ९ सनत्कुमार १०

३–वान व्यन्तर देव आठ प्रकार हैं-किन्नर १ किम्पुरुष २ महोरग ३ गन्धर्व ४ यक्ष ५ राक्षस ६ भूत ७ पिशाच८

४–सो इन्द्राणी गई

५–जैसे सांझरूप माता भानुरूप बालक साथ रंगी हुई हैं

करकमलनबालकरतनलीन।जिनकोटभानुछविछीनकीन ३४
सुख उपजे जो प्रभु परस देह । कवि वानी गोचरनाहिंतेह ॥
प्रभुको मुख बारिज देष देष । हर्षे सुर रानी उर विशेष।३५।
बसु मंगल दरब बिभूत सार।दिश दिव्य कुमारीअग्रचार ॥
इहिविधिसौधर्मसुरेश नार । आनोशिव कन्याबरकुमार।३६।
देषो हरिबालकचंदजाम । आनंदजलधि उरबढ़ोताम।३७।
शिरनाय इन्द्रनिजबार बार । थुतिकीनी कर जुगशीसधार॥
छवि देष नृपति नहिं होय लेश।तबसहसआंखकीनीसुरेश ॥
करनमस्कार निजगोदलीन्ह।ईशानइन्द्रशिरछत्रदीन्ह ३८।
तहां सैनत्कुमार महेन्द्र सोय । एचामर डोलैंइन्द्र दोय ॥
ब्रह्मादि सुरगबाशी सुरेश । जै नंद विर्द्द बोलैं विशेश। ३९ ।
नाचैं सुररमणी रूपखान । गंधर्ब करै जिन सुयशगान ॥
सुरबाजे बाजैं बहुप्रकार । कर धरहिं किन्नरीबीनसार।४०।
केई सुर श्रीजिन सुभग भेष । देषैं भरलोयननिर्निमेष ॥
केई योंभाषैं सुर समाज । हमदेवजन्म फललहोआज।४१।
केई शरधायुत भये देव । मिथ्यात महाविष बम्योएव ॥
इसभांतचतुरविधिदेवसंघ।सबचलेजोतिषीपटललंघ।४२।

१—ईशान नाम दूसरे स्वर्ग के इन्द्र ने
२—सनत्कुमार नामतीसरे स्वर्ग का इन्द्र महेन्द्र नाम चौथे स्वर्ग का इन्द्र
३—ब्रह्म नाम पांचवे स्वर्ग का इन्द्र
४—विन पलक झांपेअर्थात् खुली आंख लगातार देखना
५—कल्प बाशी १ भुवनबाशी २ योतिषी ३ विन्तर ४

॥ दोहा छंद ॥

योजन सहस निन्याणवें, सुरगिर शिखर उतंग ॥
गयेसकल सुरगण तहां, भूषन भूषित अंग ।४३।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

महामेरु के मस्तक भाग । पांडुक बनबहु धरै सुहाग ॥
योजनसहस जास विस्तार । सुर चारण खगकरैंविहार।४४।
चहूँदिशचार जिनालयतहां । सघनसासते तरुवर जहां ॥
मध्यचूलिका मुकटसरीस । सोउतंग योजनचालीस ।४५।
बारह योजन जड़ विस्तार । आठमध्य अरऊरध चार ॥
जाकेऊपर रजिक विमान । रोमांतर नर[1]क्षेत्र प्रमान । ४६ ।
तिसईशान दिशाशुभ थान । मणिमय शिलासासतीजान॥
पांडुकनाम फटक उनहार । आकृतिअर्ध चन्द्रमाकार।४७।
[१००]सौ योजन आयाम अभंग। विस्तरआधी आठ उतंग ॥
सुरविद्याधर पूजत नित्त। भरतखण्ड जिनन्हौनपवित्त।४८।
तहां हेमसिंहासन सार । रत्न जड़त सो बलयाकार ॥
धनुषपांचसौ उन्नत जोय । भूमिभाग विस्तीरणसोय।४९।
ऊपर जास अर्ध विस्तार । जाके तेज मिटै अंधियार ॥

१--मध्य लोक प्रमाण

तिसहीपर पद्मासन साज । पूरबमुख थापे जिनराज ।५०।
इस औसर सोहैं इमईश । मानो मेघ रत्न गिर शीश ॥
धुजा[1]कलश[2]दर्पन[3]भृंगार[4] । चमर[5]छत्र[6]सुप्रतीक सुतार[7]।५१।
मंगल दर्ब मनोहर जहां । धरे अनादि निधन ये तहां ॥
आसनदोय उभयदिशऔर।युगलइन्द्र ठाड़ेतिहिंठौर।५२।
चारोंदिश चारों दिगपाल । यथायोग जिन मज्जनकाल॥
शचीसुरेन्द्र अपछरा थोक। सबठाढ़े पांडुक बनरोक। ५३ ।
चौबिधि देवखड़े चहुंपास । जन्मन्हौन देखन हुल्लास ॥
कियो महामंडप हरितहां। तीनलोकजन निवसैंजहां। ५४।
कल्प कुसुम माला मनहार । लटकैं मधुप करैं झंकार ॥
सुरबाजित्र बजैंबहुभाय । सुरभि सुगंधरही महकाय ।५५ ।
मंगल मिलगावैं सब शची । नाचैंसुर बनिता रस रची ॥
तबमज्जन आरंभ विशेश।उद्यमकियो प्रथम अमरेश।५६।

॥ दोहाछंद ॥

तहां कुबेर रतन खची, रची पैंड[1]का पन्त ॥
मेरु शिखरसों सोहिये, छीरोदधि परयन्त । ५७।
सुर[2] श्रेणी सोपान पथ, पंचम सागर जाय ॥

१–पैडियोंकीपंक्ति
२–देवताओंकी श्रेणी कहिये जमाअत सीढ़ी केरस्ते पाँचवेंसागर परजाकरचंदन चर्चितकंचन कलशभर लाई

भरलाई कंचन कलश, चंदन चरचित काय । ५८ ।
योजन एक प्रमाणमुख, वसु योजन गंभीर ॥
यहमरयादा कलशकी, जिन शासन में बीर । ५९ ।
मुक्तमाल मंडित लसैं, कंचन कलश महन्त ॥
नभबनिता के उरज ये, यों अति शोभावन्त । ६० ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सहस भुजासुरपति तबकरी । भूषण भूषित शोभाभरी ॥
इसऔसर हरिसोहैं एम । भूषणांग[1] सुर तरु वर जेम । ६१ ।
कलश हाथ हरि लीने जाम । भाजनांग[2] सम शोभा ताम ॥
तीनबार कीनो जयकार । कलशोद्धरन मंत्रउच्चार । ६२ ।
इहिंविधि श्रीसौधर्माधीश । ढाले कलश स्वामि के शीश ॥
तबसबइन्द्रकियोजिनन्होन । अतुलउछावबढ़ोजगभौन ६३ ।
महा धार जिन मस्तक ढरी । मानो नभ गंगा अवतरी ॥
मुदितअसंख अमरगणतबै । जैजैकारकियो मिलसबै । ६४ ।
उपजोअति कोलाहलसार । दशदिश बधिरभई तिहिंबार ॥
भयोअसम औसरइहिंभाय । बचनद्वारवरणोनहिंजाय । ६५ ।

॥ दोहा छंद ॥

जाधारासों गिरिशिखर, खण्ड खण्ड होजाय ॥

१-भूषणांग कल्पवृक्ष जाति नाम २-भाजनांग कल्पवृक्ष जाति नाम

सो धारा जिन देह पै, फूल कली सम थाय । ६६ ।
अप्रमाण वीरज धनी, तिर्थंकर प्रभु होय ॥
ताते तिनकी शक्ति को, उपमा लगै न कोय । ६७ ।
नीलवरण प्रभु देहपर, कलश नीर छविएम ॥
नीलाचल सिर हेमके, बादल वरषे जेम । ६८ ।
चली न्हौन केनीर की, उछल छटा नभ माहिं ॥
स्वामिसंग अघबिनभई, क्योंनहि ऊरधजाहिं । ६९ ।
न्हौनछटा तिरछी भई, तिन यह उपमा धार ॥
दिगबनता मुख सोहियै, करण फूल उनहार । ७० ।

॥ सोरठा छंद ॥

जिनतनपरसपवित्त,भईसकलजगशुचिकरण ॥
सोधारा ममनित्त, पापहरो पावन करो । ७१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यों सुरेन्द्र मज्जन विधिठान । फिरकीनों गंधोदकन्हान ॥
सोजललेय विनै विस्तरी । शांतपाठपढ़ पूजाकरी । ७२ ।
शक्र शची सुर आनंदभरे । यथा योग सब कारज करे ॥
परदक्षना दीनी बहुभाय । बारम्बार नये सिरनाय । ७३ ।

१—भगवान के पवित्र तनको पर्सकर जोसर्वजगत कोपवित्रकरने वाली हुई सो धारा सदीव मेरे पाप हरो

॥ हरिगीत छंद ॥

सौधर्म[1] पति अभिषेक कारन, न्हौन पीठ सुदंसनो ॥
गंधर्व गायन निरतकारक, अपछरा यश शंसनो ॥
पंचम पयोनिध न्हौनकुंड, असंख सुर सेवक जहां ॥
तिसजन्ममंगलकीबड़ाई, कहनसमरथबुधकहां।७४।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जन्म[2] न्हौन विधि पूरनभई । सकल सुरासुर देवन ठई ॥
अबइन्द्रानी। जिनवरअंग।निर्जलकियो बसनशुचिसंग ।७५।
कुंकुमादि लेपन बहु लिये । प्रभुके देह विलेपन किये ॥
इहि शोभा इसऔसर मांझ। किधोंनीलगिरफूलीसांझ।७६।
औरसिंगार सकलसहकियो । तिलकत्रिलोक नाथकेदियो॥
मणिमयमुकट शची सिरधरो। चूड़ामणिमाथे विस्तरो।७७।
लोचनअंजन दियो अनूप। सहजस्वामि द्रगअंजितरूप॥
मणि कुण्डल कानन विस्तरे।किधों चंद सूरज अवतरे ७८
कंठ कंठिका मोतीहार । मुक्तिरमणि झूला उनहार ॥
भुजभूषण भूषितभुजकरी।कटक मुद्रिका शोभित खरी।७९।
कटिभूषण कीनो कटि थान। मणिमय क्षुद्रघंटिका वान ॥

१—इन्द्र न्हौनकारण है सुदर्शन मेरुकी पीठका अर्थात चौकी है
२—सर्व सुर असुर देवों की जन्म न्हौन विधि पूरण होगई जो विचारी थी

पग नेवर पहराये सार । जिन में रत्न झलक झंकार ।८०।

॥ दोहा छंद ॥

अंगअंग आभरन युत, यहउपमा तिहिंकाल ॥
सुरतरु समप्रभु सोहिये, भूषण भूषित डाल । ८१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तब इन्द्रादि लगेजैकरन । जैजिनवर सब्र आरत हरन ॥
त्रिभुवनभुवन दीपउनहार । धन्यदेव तेरोअवतार । ८२ ।
जैश्री अश्वसेन कुल चंद । बामानंदन जोति अमंद ।
सुखसागर केबर्धनहार । सबजग श्रेयशांतदातार । ८३॥
तुमजग भ्रमनाशन अवतरे । हमसे दासमहासुखभरे ॥
बिनरविउदयतिमिरक्यों जाय।कैसेकमलबागबिकसाय।८४।
मिथ्यामत रजनी अतिघोर । मूसैं धर्म कुलिंगी चोर ॥
जो प्रभुजन्मप्रभात न थाय। तोकिमप्रजाबसैसुखपाय।८५।
ये अनादि संसारी जीव । विलखैं भोग उदैस अतीय ॥
सो दुखमेटन दया निधान ।राज वैद जनमे भगवान ।८६।
भ्रम कूप वरती बहु लोय । काढ़न हार तिन्है नाहिं कोय ॥
श्री मुख बचन नेजु बलधार । अब उद्धार लहैं निरधार ।८७।

१—पाप पुण्य के भोगने से विलखैं हैं ॥

आप परम पावन परमेश । औरन को शुचि करहु विशेश ॥
ज्यों शशि शेत प्रभातन धरै । शेत सरूप सबन को करै ।८८।
बिन सनान तुम निर्मल नित्त । अंतर बाहज सहज पवित्त॥
हममज्जनविधिकीनीआज।निजपवित्रकारणजिनराज ८९।
तुम जगपति देवन के देव । तुम जिन सुयं बुद्धि स्वैमेव ॥
तुमजगरक्षकतुमजगतात।तुमविनकारणबंधुविख्यात।९०।
तुमगुण सागर अगम अपार । थुतिकर कौन जाय जनपार॥
सुक्षम ज्ञानी मुनि नाहिं तरें । हम से मंद कहा बलधरें। ९१ ।
नमो देव अशरण आधार । नमो सर्व अतिशय भंडार ॥
नमोसकलशिवसंपतिकरण।नमोनमोजिनतारणतरण।९२।

॥ दोह छंद ॥

इंहिं विधि इन्द्रादिक अमर, सुरपदवी फललेय॥
जन्म न्हौन विधिकर चले, मानो निज शुभश्रेय । ९३ ।
जन्म महोछव देख कर, सुरपति की परतीत ॥
वहु सुर शरधानी भये, तज शरधा विपरीत । ९४ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तव सव देव जनम पुरथान । पूरबली विधि कियो पयान॥
चढ़ोइन्द्र ऐरावत शीश । गोद लिये त्रिभुवन पतिईश। ९५ ।

१—इन्द्रादि देवताओं ने मानो अपना शुभ कल्याण किया न्हौन विधि करके ॥

पूरब वत दुंदभि धुनि गाज। उहिं विधि गीत निरत सब साज ॥
आये जैजै करत अशेश। पिता भवन कीनो परवेश । ९६ ।
मणि मय आंगण में हरि आप। हेम सिंहासन पर प्रभु थाप ॥
अश्वसेन भूपति तिहिं वार। देषो नंदन नयन पसार । ९७।
तेज पुंज निरुपम छवि देह । रोमांचित तन बढ़ो सनेह ॥
मायानींद शची तब हरी । जिन जननी जागी सुखभरी ।९८।
भूषण भूषित कांति विशाल । भर लोयन देषो जिनबाल ॥
अति प्रमोद उर उमग्यो तबै । पूरन भये मनोरथ सबै ।९९।
तब सुरेश रोमांचित काय । मात पिता पूजे मन लाय ॥
भूषण बसन भेट बहुधरी। हाथ जोर युग थुति विस्तरी।१००।
तुम जग में उदयाचल भूप । पूरब दिशि देवी शुचिरूप॥
उदय भयो त्रिभुवन रवि जहां। तुम महिमा बुध वरणन कहां।१०१।
धन धन अश्वसेन भूपाल । जिनके जग गुरु जन्मो वाल ॥
कीरत बेल अधिक तुम बढ़ी। तीन लोक मंडप शिर चढ़ी।१०२।
धन बामा देवी जगराय । जिन जायो नंदन जग राय ॥
तीन लोक तिय सिष्टि सिंगार। धन जीवन तेरो अवतार।१०३।
तुम सम जगमें और न आन । जिन देवल सम पूज प्रधान॥
यों थुतिकर हरि हिये प्रमोद। बाल दिवाकर दीनो गोद।१०४।
कही सकल पूरबली कथा । मेरु महोछव कीनो यथा ॥
तब निज नगर विषै भूपाल। जन्म उछाह कियो तिहिं काल।१०५।
हरषत सब पुरजन परिवार । घर घर भये मंगलाचार ॥

घरघरकामिनि गावैं गीत।घरघरहोंय निरतसंगीत। १०६।
मंगलीक बाजे बहु भेव। बाजन लगे सकल सुखदेव॥
श्रीजिनभवनन्होनविस्तार।कियेसकलमंगलआचार।१०७।
छिड़क्यो चंदन नगर मझार। रत्न साथिया धरे सँवार॥
याचकदानसुजनसनमान।यथायोगसबरीतविधान।१०८।
इहि विध अश्वसेन नरनाह। कीनो पुत्र जन्म उच्छाह॥
पूरन आसभयेसब लोय।दुखीदीन दीषै नहिंकोय।१०९।

॥ दोहा छंद ॥

उदय भयो जिन चंद्रमा, कुलनभ तिलक महंत॥
सुख समुद्र बेला तजा। बढ़ो लोक परयंत।११०।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तब बहु देवन संग विशेश। आनंद नाटक ठयो सुरेश॥
करें गान गंधर्व समाज। समैयोग सब बाजेसाज।१११।
देषे अश्वसेन नरनाथ। पुत्र सहित सब परियन साथ॥
प्रथमरूप नव भव दर्शाय।पहुपांजुलि खेपी सुरराय।११२।
तांडव नामनिरत आरंभ।कियो जगतजन करनअचंभ॥
नट सरूप धारो अमरेश। रंग भूमि कीनो परवेश।११३।

१—मंदिरों में न्हौन विस्तार आदि सकल मंगल आचार किये॥
२—पुष्प अंजुली इन्द्र ने बखेरी॥

मंगलीक सिंगार संवार। सब संगीत वेद अनुसार॥
ताल मान विधिसुहित सुभाय। रंग धरापर फेरैपाय।११४।
करैं कुसुम वरषा नभ देव। देष इन्द्र की भक्ति सुभेव॥
बीना मुरज बांसली ताल। बाजे गेयं गीतकी चाल।११५।
करैं किन्नरी मंगल पाठ। बरयां जोग बनो सब ठाठ॥
नाचै इन्द्र भमैं बहु भाय। मोरै हाथ कंठ कटिपाय।११६।
अद्भुत तांडव रस तिहिं बार। दरसावै जन अचरजकार॥
सहस भुजा हरि कीनी तबै। भूषण भूषित सोहैंसबै।११७।
धारत चरण चपल अति चलै। पहुमी कांपै गिरवर हलै॥
भमैं मुकुट चक्र फेरी लेत। ताकी रतन प्रभा छबिदेत।११८।
वलया कृत ह्वै झलकै सोय। चक्राकार अगन जिमि होय॥
छिनमैं एक छिनक बहुरूप। छिन सुक्ष्म छिनथूल सरूप ११९
छिनमें निकट दिखाई देय। छिन में दूर देह धरलेय॥
छिनआकाश माहिंसंचरै। छिनमेंनिरत भूमिपरकरै।१२०।
छिन छूवै तारावलि जाय। छिनक चन्दसों परसै काय॥
इन्द्रजालवत योंअमरेश। दरसाईनिजरिद्धिविशेश।१२१।
हाथ अंगुलिन पै अपछरा। नाचैं रूप रतन की छरा॥
अंग अंगभूषण झलकाहिं। बिकसतलोचनमुखमुसकाहिं १२२

१—तालके परिमाण की विधि संयुक्त भले प्रकार पांव फेरैं अर्थात् नाचै हैं॥
२—गेय गीत अर्थात् गाने के योग्य गीत॥
३—इस प्रकार जोर से निर्तकरा कि धरती कांपी और पहाड़ हिल गये.

निरत भेद विधि धारै पांव । करै कटाक्ष दिखावै भाव ॥
बहुविधिकला प्रकाशैसार। सुरकामिनिदामिनिउनहार १२३
तिनसँयुक्त हरि सुरतरु एम । कल्प लता गण वेढ़ो जेम ॥
यौंनाटकविधिठानअनूप। तिहुंजगशक्र कियेसुखरूप।१२४।
स्वामिजनमअतिशयपरताप।जिनवरपितासभापतिआप ॥
इन्द्रमहानटनाचै जहां। तिसअवसरवरणनबुधकहां।१२५।
तबतहां मातपिताकी साष । पारस नाम सकल सुरभाष ॥
राख सुरासुर सेवा योग। चले देव सब साध नियोग।१२६।

॥ दोहा छंद ॥

इहिविधिइन्द्रादिकअमर,जन्मकल्यानकठान ॥
बहुविधि पुन्न उपायकै, पहुँचे निजनिज थान ।१२७।

॥ हरगीत छंद ॥

इन्द्रादि जन्म सनान जिनको, करन कनकाचलचढ़े ॥
गंधर्व देवन सुयश गायो, अपछरा मंगल पढ़े ॥
इहिंविधि सुरासुर निजनियोगै, सकल सेवाविधिठई ॥
तेपास प्रभुमुझआस पुरवो, शरण सेवक नेलई।१२८।

॥ श्री पार्श्वपुराण भाषा जन्मोत्सव वर्णन नाम षष्ठम अधिकार सम्पूर्णम् ॥

सप्तम अधिकार ॥

॥ दोहा छंद ॥

पारस प्रभु तज औरको, जेनर पूजन जाहिं ॥
कल्पवृक्ष को छाँड़के, बैठें थोहर छाहिं ।१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबजिन बाल चंद्रमा बढ़ें । कोमलहांस किरणमुखकढ़ें ॥
छिनछिन तात मात मनहरैं।सुखसमुद्र दिनदिनविस्तरैं ।२।
अमरित इन्द्र अंगूठे देय। वही पोष पय पान न लेय ॥
देवीधाय हरष मनधरैं । मज्जनमंडन विधिसबकरैं । ३ ।
केई मणि भूषण पहराय । करैं अलंकृत प्रभुकी काय ॥
केईकामिनि करैं सिंगार। श्रीमुख चन्द्र निहार निहार । ४ ।
केई रहसवती तिय आय । हस्त कमल सों लेंय उठाय ॥
मणिमय आंगन मांझ अनूप।बिचरैंजिनपतिबालसरूप।५।
बहुविधि देव कुमार मनोग। बालक रूप भये बययोग ॥
घुटियागमन करैं तिनसाथ । जोनक्षत्र गणमें निशनाथ ।६।
कबहीं सैनासन सोवन्त । ऊपर दिढ़ जिनयों जोवन्त ॥

१–चित लेटकर. ॥

अजहौं मुक्ति सों केतक परे। मानो यहशंका मनधरे ।७।
कबहीं पुहुमी पै जिनराय। कंपत चरन ठवै इहिभाय ॥
सहे कि ना धरती मुझभार। शंकेउर भावन यह धार।८।
कबहींस्वामि कुदक उठचलै। विकशतमुख सबकोदुखदलै ॥
बांधे मूठी अटपट पाय। कैसे वह छबि वरनी जाय। ९।
कबहीं रतन भीत में रूप। झलकै ताहि गहै जग भूप ॥
जिनसोंजिननमिलैसर्बथा। करतकिधौंकहवतयहवृथा।१०।
कबहीं रत्न रेत करलेत। करै केल सुर कुमर समेत ॥
कबहिं माय बिन रुदन करेय। देषफेर विहस हँसदेव।११।
कबही छोड़ शची की गोद। जननी अंक जाय मनमोद ॥
माता सों मानै अति प्रीत। बाल अवस्थाकी यहरीत।१२।
योंजिन बालक लीलाकरै। त्रिभुवन जन मन माणकहरै॥
क्रमसोंबालभारतीनाम। श्रीमुखकमललसीअभिराम।१३।
अनुक्रम भई अंगबढ़वार। तब त्रिभुवन पतिभये कुमार ॥
निरुपमकांतिकला विज्ञान।लावनरूपअतुलगुणथान।१४।
मतिश्रुति अवधि ज्ञानबलदेव। जानै सकल चराचरभेव ॥

१—जिनराय पृथ्वी पर कंपाय कर पैर धरै हैं इस संभावन से कि धरती हमारे बोझ को उठा सकती है या नहीं यह उत्प्रेक्षा अलंकार है. ॥

२—बाल भारती कहिये तुतली बोली भगवान के मुख में शोभा देने लगी भावार्थ भगवान बोलने लगे यह स्वभाविक बात है कि बच्चे आदि में तुतली बोली बोलते हैं. ॥ ३—कला चौसठ प्रसिद्ध है कोषमेंदेखो जोपुस्तककेअंतमेंहै. ॥

सोमसुभाव सहजउपशंत। निर्मलक्षायक दर्शनवंत। १५।
इहिविध आठवर्ष के भये। तबप्रभु आप अणूव्रत लिये॥
देवकुमार रहैं संग नित्त। तेछिनाछिन रंजैं जिन चित्त। १६।
कबहींगज तुरंगतन धरैं। तिनपै चढ़ प्रभु जनमन हरैं॥
कबहींहंस मोर बन जाहिं। तिनसोंजगपति केलकराहिं।१७।
कबहीं जलक्रीड़ा थलगमैं। कबहीं बन विहार भूरमैं॥
कबहींकरैं किन्नरीगान। सोप्रभुसुयश सुनैंनिजकान। १८।
कबहीं निरत ठवैं सुरनार। देषैं जिन लोचन सुखकार॥
कबहींकाव्य कथारसठान। करैंगोठजिन बुध बलवान।१९।
बिना सिखाये बिन अभ्यास। सबविद्यासब कलानिवास॥
योंसुखअनुभव करतमहान। भयेपासजिन योवनवान।२०।

॥ दोहा छंद ॥

सम्पूरण जोवन समैं, प्रभुतन सोहै एम॥
सहज मनोहर चांदकी, शरद समैं छबिजेम। २१।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रभुके अंग पसेव न होय। सहज सदामल वरजितसोय॥

१—सम्यक्‌ दर्शन तीन प्रकार है उपशम सम्यक दर्शन १ क्षयोपशम २ क्षायिक ३

उज्जल वरण रुधिर जिम षीर। सुसमचतुर संठानशरीर।२२।
प्रथम सारसंहनन[2] सरूप । इन्द्र चन्द्र मनहरन अनूप ॥
बिनाहेततनसहजसुवास।प्रयहितवचनमधुरमुखजास।२३।
अतुलदेह बलधरत महान । सहसअठोतर लक्षणवान ॥
तिनकेनामलिखूंकुछजोय।पढ़तसुनतसुखसंपतिहोय।२४।

॥ हरिगीत छंद ॥

श्रीवृक्ष शंख सरोज सुस्तिक, शक्र चक्र सरोवरो ॥
चामर सिंहासन छत्रतोरण, तुरगपति नारी नरो ॥
सायर दिवायर कल्पबेली, कामधेनु धुजा करी ॥
बरबज्रबान कमानकमला, कलश कच्छपकेहरी ।२५।
गंगा गऊपति गरुड़ गोपुर, बेणु बीणा बीजना ॥
जुगमीन महल मृदंगमाला, रत्न दीप दिपै घना ॥
नागेन्द्र भुवन विमान अंकुश, विरक्ष[3] सिद्धारथ सही ॥
भूषण पटम्बर[4] हट्ट हाटक, चन्द्रचूड़ा मणिकही । २६।
जम्बू तरोवर नगर सूवस, बाग जन मन भावना ॥
नौनिध नक्षत्र सुमेरु सारद, साल षेत सुहावना ॥

१—इसका टिप्पण पहले लिख आये हैं. ॥
२—बज्र वृषभ नाराच संहनन ॥
३—महान वृक्ष ॥
४—रेशमी बस्तर. ॥

ग्रह मंगलाष्टक[1] प्रातिहारज[2], प्रमुख औरबिराजहीं ॥
परमितअठोतरसहसप्रभुके, अंगलक्षण छाजहीं। २७।
अंतर अनंती अतुल महिमा, कथन दूररहो कहीं ॥
वहिरंग गुणथुति करण जगमें, शक्रसेसमरथ नहीं ॥
अबऔर जनकी कौन गिणती, दीनपार न पावना ॥
परपासप्रभुकी सुयशमाला, पहरदास कहावना। २८।

॥ दोहा छंद ॥

सहस अठोतर लछनये, शोभित जिनवर देह ॥
किधों कल्प तरु राजके, कुसुम बिराजत येह। २९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

शुभ परमाणू मय जिन अंग। नीलवरण नौ हाथ उतंग ॥
छविवरणतनाहिंपावेओर। त्रिभुवनजनमनमाणकचोर।३०।
शत संवत्सर आव प्रमाण। अतुल असा धारण गुणथान॥
शत्रुमित्रऊपर समभाव। दयासरोवर सोम सुभाव। ३१।
सागरसों प्रभुअति गंभीर। मेरु सिखर सों अधिके धीर ॥

१—धुजा १ कलश २ दर्पण ३ भृंगार कहिये झारी ४ चमर ५ छत्र ६ सुप्रतीक कहिये ठाणा ७ ताल कहिये बीजणा. ८ ॥

२—प्रातिहार्य ८ हैं चमर १ छत्र २ अशोक वृक्ष ३ भामंडल ४ दुंदुभि ५ सिंहासन ६ पुष्प वृष्टि ७ वाणी. ८ ॥

कांतिदेष लाजैमिरगांक। तेजबिलोकि छिपैरविरांक। ३२।
कलपबिरछ सों अधिक उदार। तिहुँजग आशा पूरणहार॥
योंजिन गुणको उपमाकहीं। तीनकाल त्रिभुवनमेंनहीं।३३।

॥ दोहा छंद ॥

योंमुख निवसत पासजिन, सेवत कमला पाय॥
सोलह वरष प्रमाण प्रभु, भयेजगत सुखदाय।३४।
सभासिंहासन एक दिन, वैठेसहज जिनेन्द्र॥
सुरनरमैं प्रभुयों दिपैं, ज्योंउड़गण में चन्द्र॥३५।
अश्वसेन भूपाल तव, बोले अवसर पाय॥
नेहसलिल भीजे वचन, सुनो कुमर जगराय।३६।
एक राज कन्या वरो, करो उचित व्योहार॥
वंशबेल आगे चलै, सुख पावै परवार।३७।
नाभि राजकी आसजों, भरी प्रथम अवतार॥
तथा हमारी कामना, पूरण करो कुमार।३८।
पितावचन सुन प्रभु दियो. प्रति उत्तर तिहिंवार॥
रिषभदेव सम मैं नहीं, देखो हिये विचारि॥३९॥
मेरी सब सौ वर्ष थिति, सोलह भये विदीत॥
तीस वर्ष संजम समय, फिर मत कहो पुनीत॥४०॥

१–जिनके पैरों को लक्ष्मी सेवै है.॥

अल्पकाल थिति अल्पसुख, अल्प प्रयोजन काज ॥
कौन उपद्रव संग्रहै, समझ देख नरराज ॥४१॥
सुन नरेन्द्र लोचनभरे, रहे बदन बिलखाय ॥
पुत्र ब्याह वर्जन वचन, किसे नहीं दुखदाय ।४२।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहिंविध मंदराग जिनराय । निवसैं सब जीवन सुखदाय ॥
पूरबकथित कमठ चरसींह[1] । पापकरत मानीनाहिंचीह।४३।
मुनिहत्यावशदुर्गतिगयो । पंचम नरक बास सो लियो ॥
सत्रैंहजलधितहाँ दुखसहे । बचनद्वारजोजाहिंनक्हे। ४४ ।
थिति पूरणकर छोड़ी ठौर । सागर तीन भमों फिर और ॥
पशुगतिमाहिंविपतबहुभरी । त्रसथावरकीकायाधरी।४५।
इहिंविध भयो पाप अवसान। काहू[2]जन्म क्रिया शुभठान ॥
महीपालपुर सोहै जहाँ । महीपाल नृप उपजो तहां।४६।
पारस प्रभुकी बामा माय । इनको पिताभयो यह राय ॥
पटराणीकेप्राणवियोग । उपजोविरहबढ़ोचितसोग ।४७।
तपसी भेष धरो दुखमान । पंचागनि साधै बनथान ॥
सीसजटा मृगछाला संग । भसम पीसलाई सब अंग ।४८।
भ्रमत बनारसके उद्यान । आयो कष्ट करत विनज्ञान ॥

१—सिंह ॥ २-किसी जन्म में अच्छी क्रियाकरी ता कारण ॥

इहिंअवसरश्रीपार्श्वकुमार। गएसहजबनकतरविहार।४९।
राजपुत्रबहु सुरगन साथ। गजआरूढ़ दिपै जिन नाथ॥
कर सुछंदबनकेलअनूप। चलेनगरकोआनंदरूप।५०।
देखो मग में जननी तात। तपै पंच पावक तपगात॥
सोसमीपप्रभुकोअविलोय। चिंतौचितरोषातुर होय।५१।
मैं तपसी कुलवंत महंत। जननी पिता पूज सभ भंत॥
अहोकुमरकैयहअभिमान।विनयप्रनामकरैनहिआन।५२।
इतनै ईंधन कारण जान। लकड़ी चीरन लगो अयान॥
हाथकुल्हाड़ी लीनी जबै। हितमित वचनचये प्रभुतबै।५३।
भो तपसी यह काठन चीर। यामैं युगल नाग हैं वीर॥
सुन कठोर बोलो रिसआन। भोबालकतुमऐसोज्ञान।५४।
हरिहर ब्रह्मा तुमही भये। सकल चराचर ज्ञाता ठये॥
मनै करत उद्धत अविचार। चीरोकाठ न लाई बार।५५
ततषिण खंडभये जुगजीव। जैनी बिन सब अदयअतीव॥
दया सरोवर जिनतबकहै। तपसी वृथा गरभ तूं बहै।५६।
ज्ञान बिना नित काया कसै। करुणा तेरे उर नाहिं बसै॥
तबसठरोषवचनफिरचयो। जननीजनकरतपसीभयो।५७।
करैनमद वश विनय विधान। और उलट खंडै मुझआन॥
पंच अगन साधूं तन दाह। रहूं एकपद ऊरध बांह।५८।

१—मैं तुम्हारा माता को जनकर तपसी हुआहूं भावार्थ मैं पुरानाहूं तुम नवीन तपसी हो॥

भूष प्यास बाधा सब सहूं। सूखेपत्र पारना गहूँ॥
ज्ञानहीनतपक्योंउचरै। क्यों कुमारमुझ निंदाकरै। ५९।
तब प्रभु बचन कहे हितकार। तुझ तपमैं हिंसाअघभार॥
छहोंकायकेजीवअनेक। नाशहोहिंनितनाहिविवेक। ६०।
जहां जीववध होय लगार। तहां पाप उपजै निर्धार॥
पापसही दुर्गति दुख देह। यातें दयाहीन तपयेह। ६१।
ज्ञान बिनासबकायकलेश। उत्तम फलदायक नहिंलेश॥
जैसेतुस खंडन कनछार। योंअजान तपअफलअसार।६२।
अंधपुरुष वनदौ में दहै। दौर मरै मारग नहिं लहै॥
त्योंअजान उद्यम करपचै। भवदावानल सोंनाहिं बचै।६३।
ऐसेही किरया बिन ज्ञान। सोभी फलदायक नाहिं जान॥
तथापंगलोचन बलधरै। उद्यम बिन दावानलजरै। ६४।
तातेंज्ञान सहित आचार। निश्चै वंछित फल दातार॥
इहिंविधिजिनमनकेअनुसार। करउत्तमतपयहहठछार।६५।
मैं तुझ वचन कहे हितकार। तू अपने उर देख विचार॥
भलीलगैसोई करमित्त। वृथामलीन करै मत चित्त।६६।

दोहा छंद

नाग युगल सुनाजिन वचन, क्रूरजीव अतिनिंद॥

१—जलकाय १ अग्नि २ भूमि ३ पवन ४ वनस्पति ५ (ये पांच प्रकार के जीव थावर हैं) त्रस ६ दो इन्द्री आदि पंचइन्द्री पर्यंत॥

देह त्याग ततषिन भये, पदमावती धनिंद । ६७ ।
नाग युगल के भागकी, महिमा कही न जाय ॥
जिन दर्शन प्रापति भई, मरण समैं सुखदाय । ६८ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

घर आये श्री पार्स जिनंद । सुरनर नेत्र कमलनी चन्द ॥
समैंपाय तपसी तजदेह । भयोजोतषी शम्वर तेह ।६९॥
देखो जगमें तप परभाव । ज्ञान बिना बांधी सुरआव ॥
जेनर करैं जैन तपसार । तिन्है कहा दुर्लभ संसार । ७० ।
स्वामी मगन सुखोदधि माहिं । हर्षविनोद करतदिनजाहिं ॥
प्रभुकेइष्ट वियोगनहोय । सोग सँजोग न कवहीकोय ।७१।
वायपित्त कफजनित विकार । सुपनै होय न सोच विचार ॥
जरा नव्यापै तेजनजाय । नामुखकमल कभीकुमलाय ।७२।
होहिनहीं दुख कारन आन । पुन्यउदधि वेला भगवान ॥
यों सुखभोग करतदिनगये । तबजिन तीसवर्षकेभये । ७३।
नृप जैसेन अयोध्या धनी । भक्ति प्रीतप्रभु सों अतिघनी ॥
तुरगादिकबहु बस्तुअनूप । पठईविनयवचन कहभूप । ७४।
राज दूत चलि आयो तहां । सभा थान जिन बैठे जहां ॥
हेमासनपर सोहैंएम । हिमगिरशिखर श्यामघनजेम। ७५।
देखदूत रोमांचित भयो । बहुविधि चरन कमल को नयो ॥
मानोसफलजन्मनिजसार।त्रिभवनपतिपरत्यक्षनिहार।७६।

धरी भेंट जो राजा दई । विनय प्रणाम वीनती चई ॥
तवपूछैतहां त्रिभुवनधनी । संपतिनैर अजोध्या तनी ।७७।
कहै दूत करयुग सिरधार । वरणे तिर्थंकर अवतार ॥
मोषगयेवरणे तिहिंठाम । सुनस्वामी चिंतैउरताम । ७८ ।

॥ १४ मात्रा चाल छंद ॥

सुनदूत वचन वैरागे । निज मन प्रभु सोचन लागे ॥
मैं इन्द्रासन सुख कीने । लोकोत्तम भोग नवीने । ७६ ।
तब त्रपत भई तहांनाहीं । क्या होय मनुष पदमाहीं ॥
जो सागर के जल सेती । नबुझी तिश्ना तिस एती । ८० ।
सो डाभ अनीके पानी । पीवत अब कैसे जानी ॥
ईंधन सों आग न धापै । नदियों नाहिं समुद्र समापै ।८१।
यों भोग विषै अति भारी । तृपतैं न कभी तनधारी ॥
जो अधिक उदै यह आवै । तौ अधिकी चाह बढ़ावैं।८२।
जो इनसों तृपति विचारै । सो वैसानर घृत डारै ॥
इन सेवत जो सुख पावै । सो आकों आंब उम्हावै ।८३ ।
ये भीम भुजंग सरीखे । भ्रम भाव उदय शुभ दीखे ॥
चाखतही के मुख मीठे । परिपाक समय कटु दीठे । ८४ ।
ज्यों खाय धतूरा कोई । देखै सब कंचन सोई ॥
धिक ये इन्द्री सुख ऐसे । विषबेल लगे फल जैसे । ८५ ।

इनही वश जीव अनादी। भव भाँवर[1] भ्रमत सवादी॥
इनही वश सीख न मानै। नाना विध पातक ठानै।८६।
थिर जंगम जीव संघारै। इनही वश झूठ उचारै॥
पर चोरी सों चितलावै। परतिय संग शील गमावै।८७।
परिग्रह तिस्ना विस्तारै। आरंभ उपाधि विचारै॥
इत्यादि अनर्थ अलेखै। कर घोर नरक दुख देखै।८८।
येहीसुख पर्वत केरे। जग फोरन वज्र बड़ेरे॥
येही सब दोष भँडारे। धन धर्म चुरावन हारे।८९।
मोहीजन मोहें योंहीं। ये आदर योग न क्योंहीं॥
इनसों ममता तज दीजै। परत्यागत ढील न कीजै।९०।
सामान पुरुष जग जैसे। हमखोये येदिन ऐसे॥
संयम बिन काल गमायो। कछुलेखे में नहिं लायो।९१।
ममतावश तप नहिं लीनो। यहकारज जोग न कीनो॥
अबखाली ढीलनकीजे। चारित चिंत्यामणिलीजे।९२।

॥ दोहा छंद ॥

भोगबिमुख जिनराजइम, शुधकीनी शिव थान॥
भावें बारह भावना, उदासीन हित दान।९३।

१—भवरूप भांवर कहिये यतियोंका भोजन तिस्का स्वादी भ्रमै है॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद

* १ अथिरभावना *

द्रव्य सुभाव विनाजगमाहि। परयैरूपकछू थिरनहिं॥
तनधन आदिक दीषैंजेह। कालअगनसबईंधनतेह। ९४।

* २ असरणभावना *

भवबन भमत निरंतर जीव। याहिनकोई सरणसदीव॥
व्योहारै परमेठी जाप। निश्चै सरण आपको आप।९५।

* ३ संसार भावना *

सूर कहावै जो सिर देय। खेत तजै सो अपयश लेय॥
इसअनुसारजगतकीरीत। सबअसारसबही विपरीत।९६।

* ४ एकत्व भावना *

तीनकाल इस त्रिभुवन माहिं। जीव संघाती कोई नाहिं॥
एकाकी सुखदुख सबसहैं। पाप पुन्न करनी फललहैं। ९७।

* ५ अन्यत्वभावना *

जितने जग संजोगी भाव। तेसब जियसों भिन्न सुभाव॥
नितसंगीतनहीपरसोय। पुत्रसुजनपरक्योंनहिंहोय।९८।

* ६ अशुचिभावना *

अशुचिअस्थि पिंजर तनयेह। चाम बसन बेढ़ो घिनगेह॥
चेतनाचिरातहांनितरहै। सोविन ज्ञानगिलानिनगहै।९९।

* ७ आश्रव भावना *

मिथ्या अविरत योग कषाय। ये आश्रव कारण समुदाय॥
आश्रवकर्मबंध कोहेत। वंधचतुरगतिके दुखदेत। १००।

* ८ संवर भावना *

समिति गुप्ति अनुपेहा धर्म। सहन परीसह संजमपर्म॥
येसंवर कारण निर्दोष। संवर करै जीवको मोष। १०१।

* ९ निर्जराभावना *

तपबल पूर्वकर्म खिरजाहिं। नये ज्ञानवल आवैं नाहिं॥
यही निर्जरा सुख दातार। भव कारन तारननिर्धार।१०२।

* १० लोकभावना *

सुयंसिद्ध त्रिभवन थितजान। कटिकर धरै पुरुष संठान॥
भ्रमतअनादिआत्माजहां।समकितबिनशिवहोयनतहां१०३।

* ११ धर्म भावना *

दुर्लभ धर्म दसांग पवित्त। सुखदायक सहगामी नित्त॥
दुर्गति परत यही करगहै। देय सुरग शिव थानक यहै।१०४।

* १२ बोध दुर्लभ भावना *

सुलभ जीव को सब सुख सदा। नौग्रीवक ताईं संपदा॥
बोध रतन दुर्लभ संसार। भव दरिद्र दुखमेटन हार।१०५।
ये दससदोय भावना भाय। दिढ़ वैराग भये जिनराय॥
देह भोग संसार सरूप। सब असार जानो जगभूप।१०६।
इतनैं लोकांतिक सुर आय। पुहपांजलि दे पूजे पाय॥
ब्रह्म लोक वाशी गुण धाम।देव रिषीश्वर जिनकोनाम।१०७।
सब पूरब पाठी बुधवंत। सहज सोम मूर्ति उपशंत॥
वनिता राग हिये नहिं बहैं।एक जन्म धर शिवपद लहैं।१०८।
तिर्थंकर जब विरकत होय। हर्षवंत तब आवैं सोय॥

और[1]कल्यानककरैं प्रणाम।सदा सुखीनिवसैंनिजधाम।१०९।
हाथ जोर बोले गुण कूप। थुति बायक अरु शिक्षारूप॥
धन विवेक यहधन्नसयान।धनयह औसर दयानिधान।११०।
जानो प्रभु संसार असार। अथिर अपावन देहनिहार॥
इन्द्री सुख सुपने सम दीस।सोयाही विधहैं जगदीस।१११।
उदासीन असि तुम कर धरी। आज मोह सेना थरहरी॥
बढ़ोआजशिवरमणिसुहाग।आजजगेभविजनासिरभाग११२
जग प्रमाद निद्रा वश होय। सोवत है शुध नाही कोय॥
प्रभु धुनि किरन पयासै जबै। होय सचेतजगै जनतबै।११३।
यह भव दुस्तर पारावार। दुख जल पूरत वार न पार॥
प्रभुउपदेश पोत चढ़ धीर।अब सुखसों जइहैं जनतीर।११४।
शिवपुर पौर भरम पट जहां। मोह मुहर दिढ़ कीनी तहां॥
तुम बानी कूंची करधार। अब भविजीवलहैं पदसार।११५।
सुयं[2] बुद्ध बोधन समरत्थ। तुम प्रतिपर बुध वचन अकत्थ॥
ज्यों सूरज आगे जिनराज। दीप दिखावन है बे काज।११६।
हम नियोग औसर यह भाय। तातैं करैं वीनती आय॥

१—और कल्यानकों में देव रिषीश्वर जो पांचवें सुरग लोकके लोकांतिक पाड़े में रहते हैं घर बैठे प्रणाम करते हैं केवल तप कल्यानक में वैराग बढ़ावन हेत आते हैं॥

२—आप जो सुयं बुद्ध औरों के समझाने को सामर्थ हो इसकारण तुम प्रति परलोगों के बुद्ध वचन अकत्थ अर्थात् निष्फल है॥

धरिये देव महाव्रत भार। करिये कर्म शत्रु संघार।११७।
हरये भरम तिमर सर्वथा। सूझै सुरग मुक्ति पथ यथा॥
यों थुतिकरबहुभाव दिढ़ाय।बारबारं चरनन शिरनाय।११८।
साध नियोग गये निज थान। लोकांतिक सुर बड़े सयान॥
अबचौविधइन्द्रादिकदेव।चढ़निजनिजबाहनबहुभेव११९।
हर्षित उर परवार समेत। आये तृतिय कल्याणक हेत॥
सुर वनिता नाचैं रस भरी। गावैं मधुर गीत किन्नरी१२०॥
बाजैं विविध बजैं तिस वार। करैं अमर गण जैजै कार॥
सोरनकलशभरे सुरराय।विमल क्षीर सागर जललाय।१२१।
हेमासन थापे जिनराय। उच्छव सहित न्हौन विधठाय॥
भूषणबसन सकल पहिराय।चंदन अर्चितकीनीकाय।१२२।
इस औसर प्रभु सोहैं एम। मोष बधू वर दूलह जेम॥
कहवैराग वचन जिनतबै। प्रतिबोधे परिजन जनसबै।१२३।
अति हठसों समझाई माय। लोचन भरे बदन बिलषाय॥
बिमला नाम पालकी साज।आनी इन्द्रचढ़े जिनराज।१२४।
पहले भूमि गोचरी राय। सात पैंडलीनी सुखदाय॥
फिर विद्याधर राजा रले। पैंड़सातही ते लेचले।१२५।
पीछे इन्द्रादिक सुरसंघ। कांधे धरी चले पुरलंघ॥
नाअति निकट नदीषे दूर। नभ मारग देषैं जनभूर।१२६।

॥ दोहा छंद ॥

जिन साहब की पालकी, इन्द्र उठावन हार॥

तिसगुण महिमा कथन अब, पूरनहोउ अपार।१२७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

योंसुरनर सब हर्षित भये। अश्वनाम बनमें चलगये ॥
बड़तरुतलैशिलाशुभजहां। कीनोशचीसाथियातहां।१२८।
उतरे प्रभुअति उत्तम ठाम। शान्तभयो कोलाहल ताम ॥
शत्रुमित्रऊपरसमभाव। तिणकंचनगिनएकसुभाव। १२९।
सोमभाव स्वामी उरधार। पट भूषण सब दीने डार ॥
उदासीनउत्तरमुखभये। हाथजोर सिद्धन प्रतिनये। १३०।
दुविध परिग्रह तज परमेश। पंच मुष्टि लोंचे सिरकेश ॥
शिवकामिनिकी दूती जोय। धरी दिगंबर मुद्रासोय।१३१।

॥ दोहा छंद ॥

सोहै भूषन बसन बिन, जातरूप जिन देह ॥
इन्द्र नीलमणि को किधों, तेजपुंज शुभयेह।१३२।
पोह प्रथम एकादशी, प्रथम पहर शुभवार ॥
पद्मासन श्रीपार्स जिन, लियो महाव्रत भार।१३३।
और तीनसै छत्रपति, प्रभुसाहस अविलोय ॥
राजछोड़ संयम धरो, दुख दावानल तोय।१३४।
तब सुरेश जिनकेश शुच, छीर समुद पहुँचाय ॥

करथुति साधनियोग सब, गयो सुरग सुरराय।१३५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अब स्वामी बनथान नियोग। तेलाथाप दियोजिन योग ॥
अट्ठाईस मूलगुण शाख। उत्तर गुण चौरासी लाख।१३६।
सब प्रभुधरे परम समचेत। अचल अंगमुख मौन समेत॥
यों वन बसत ऊपजो ज्ञान। संयम धर मनपर्यैज्ञान।१३७।

॥ सोरठा छंद ॥

लघु वै में जगपाल, कियो निर्वीरज[1] कामदल ॥
धीरज धनुष सँभाल, तिनके पदनीर जनमूँ।१३८।

श्रीपार्श्वपुराण भाषा श्रीजिन दिक्षाकल्याणक वर्णननाम सप्तमअधिकार संपूर्णम् ॥

॥ अष्टम अधिकार ॥

॥ सोरठा छंद ॥

जोप्रभुको यशहंस, तीनलोक पिंजरे वसै ॥
सो मम पाप विधुंस, करो पास परमेश नित।१।

१–कामरूप सेना को निर्शक्ति करदिया भावार्थ जीतलिया ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अबजिन उठे जोग अवसान। देहहेत उद्यम उरआन ॥
परम उदास अधोगतदीठ। सहजशाँतमुद्रामनईठ। २।
दयानीर निर्मल परिवाह। गुलमखेट पुरपहुंचे नाह ॥
लाभअलाभबराबरधार। निर्धनधनकोनाहिंबिचार। ३।
ब्रह्मदत्त भूपति बड़भाग। प्रभुको देषबढ़ो उरराग ॥
उत्तम पात्रसकलगुणधाम। कर प्रणामपड़गाहेताम। ४।
हेमासन थापो नरराय। प्रासुक जल परछाले पाय ॥
आठभाँत पूजा विस्तरी। हाथजोर अंजुलि सिरधरी। ५।
मन तन बायक शुद्ध सरूप। नौदाता गुण संजुत भूप ॥
शुद्ध अन्नदीनो परवीन। प्रासुक मधुर दोष दुखहीन। ६।
उत्तम पात्र दान विधकरी। तीनभवन कीरति विस्तरी ॥
पंचाचर्यभये नृप धाम। फिर स्वामीआये बनठाम। ७।
करैं घोरतप साधैं योग। दर्शन करत मिटैं सबसोग ॥
अचल अंगमुख सोहै मौन। एकचित्त निजपद चिंतौन। ८।
ज्योंसमुद्रजलविगतकलोल। अथवासुरगिरशिषरअडोल ॥
तथानीलमणि प्रतिमा येह। यों अकंप राजै जिनदेह। ९।

१-पात्र को देखबुलाना १ उच्चासनपर बिठलाना २ चरणधोना ३ चरणोदक मस्तक पर रखना ४ पूजाकरना ५ मनशुद्धरखना ६ वचन विनय रूपबोलना ७ शरीर शुद्धरखना ८ अहारशुद्ध देना ॥

॥ उक्तंच संस्कृत शार्दूल विक्रीड़ित छंद ॥

नोकिंचित्करकार्य्यमास्तिगमन, प्राप्यंनकिंचिद्दृशो।
दृश्यंयसानकर्णयोःकिमपिहि, श्रोतव्यमायस्तिन ॥
तेनालम्बितपाणिरुज्झितगति, र्नासाग्रदृष्टी रहः।
सम्प्राप्तोऽतिनिरकुलोविजयते,ध्यानैकतानोजिनः। १०।

॥ भाषाटीका ॥

हाथों मे कुछ कामकरना नहीं रहा इस कारण हाथलम्बे छोडदिये, चलने मे होने वाला कोई काम नहीं रहा इस लिये गमन त्याग दिया दोनों अखों का देखने योग कोईकाम नहीं रहा इसलिये नाककी फुंगल पर दृष्टी धरनहार भये, दोनों कानों को कुछ सुनने योग कामनहीं रहा इसलिये श्रीजिनराज अति निराकुल एकांत ध्यान में एकाग्र चित होबैठे ॥

॥ १५ मात्राचौपाई छंद

बैर भाव छाड़ो बन जीव। प्रीत परस्पर करैं अतीव ॥
केहर आदि सतावैं नाहिं। निर्विषभये भुजंग बनमाहिं।११।
शील सनान सजो शुच रूप। उत्तर गुण आभर्ण अनूप॥
तप मय धनुषधरी निजपान। तीन रत्नये तिक्षण वान।१२।
समताभाव चढ़े गजशीश। ध्यान कृपान लियो कर ईश ॥
चारित रंग मही में धीर। कर्म शत्रु विजई बरवीर। १३।

१—सम्यक दर्शन १ सम्यक ज्ञान २ सम्यक चारित्र ३

॥ दोहा छंद ॥

स्वामी की सब पर दया, सबही के रछपार।
जग विजई मोहादि रिपु, तिनके प्रभु छयकार ।१४।

॥ सोरठा छंद ॥

देषो पवन प्रचंड, दूब न षंडै दूबरी॥
मोटे विरछ विहंड, बड़े बड़ोही बलकरैं। १५।

॥ दोहा छंद ॥

यों दुद्धर तप करत अति, धर्मध्यान पद लीन।
चार मास छदमस्त जिन, रहे रागमल हीन ।१६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

एक दिवस दिक्षा बन जहां। जोग लीन प्रभु निवसैं तहां॥
काउसर्गतन विगत विरोध।ठाड़े जिनवर जोग निरोध।१७।
शम्बर नाम जोतषी देव। पूरब कथित कमठ चरएव॥
अटक्योअंबरजात विमान। प्रभुपर रह्योछत्रवत आन।१८।
ततषिन अवधि ज्ञान बल तबै। पूरब वैर सँभालो सबै॥

१—केवल ज्ञान होनेसे पहले केवलीकी छदमस्त संज्ञा है अर्थात् थोड़े ज्ञान वाला॥

कोपो अधिक न थांभो जाय । राते[1] लोयन प्रजुली काय ।१६।
आरंभो उपसर्ग महान । कायर देष भजैं भय मान ॥
अंधकार छायो चहुँओर । गरज गरज बरषै घनघोर ।२०।
झरै नीर मुसलोपम धार । झंझावायु बहै विकरार ॥
बूड़े गिरतरुवर बनजात । लतामूल विध्वंशनिपात ।२१।
जलथल भयोमहोदधिएम । प्रभु निवसैकनकाचलजेम ॥
दुष्टविक्रियाबल अविवेक । और उपद्रव करै अनेक ।२२।

॥ छप्पै छंद ॥

किलै[2] किलंत वेताल, काल कज्जल छवि सज्जहिं ॥
भौं कराल विकराल, भाल मदगज जिम गज्जहिं ॥
मुंडमाल गल धरहिं, लाल लोयन डरहैं जन ॥
मुख फुलिंग फुंकार, करैं निर्दय धुनि हन हन ॥
इहि विधि अनेक दुर्भेष धर, कमठजीव उपसर्ग किय॥
तिहूंलोकबंदजिनचंदप्राति, धूलडालनिजसीसलिय२३

॥ दोहा छंद

इत्यादिक उत्पात सब, वृथा भये अति घोर ॥

१—लाल होगई आंख ॥

२—किलकी मारकर बोलते हैं वेताल कहिये प्रेतादिक काले कज्जलकी छवि कर साजे हैं ॥

जैसे माणक दीप को, लगै न पौन झकोर ।२४।
प्रभुचितचलो न तन हलो,टलो न धीरज ध्यान ॥
इन अपराधी क्रोधवश, करी वृथा निजहान ।२५।
पावक पकरै हाथ सों, अवश हाथ जल जाय ॥
पर के तन लागे नहीं, वाके पुन्न सहाय ।२६।
प्रानी विषय कषाय वश, कौन कौन विपरीत ॥
करतहरत कल्याण निज, जलो जलो यहरीत ।२७।
प्रभु अचिंत्य महिमा घनी, त्रिभुवन पूजत पाय ॥
तिनके यह क्यों संभवै, सुर उपसर्ग कराय । २८ ।
इहिं विधि जो कोई पुरुष, पूछै संशय राष ॥
ताके समझावन निमत, लिखूं जिनागम साष ।२९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

अवसर्पनि उतसर्पनिकाल । होहिं अनंतानंत विशाल ॥
भरथ तथा ऐरावत माहिं। रहटघटी वत आवैं जाहिं।३०।
जब ये असंख्यात परमान, बीतैं युगमे खेत भूं थान ॥

१—अवसर्पनि निगलने वाला अर्ध कल्प काल जिसमें प्रति दिन आयु और काय घटती जाय उतसर्पनि उगलने वाला अर्ध कल्प काल जिसमें प्रति दिन आयु और काय बढ़ती जाय प्रति सर्पणि काल के जिनपतियों ने ६ भाग करे हैं--सुखमा सुखमा १ सुखमा २ सुखमा दुखमा ३ दुखमा सुखमा ४ दुखमा ५ दुखमा दुखमा ६ जिनकालों की वर्ष संख्या त्रैलोक सार आदि महान ग्रंथों में देषो ॥

२—दोनों अर्थात् अव सर्पनि १ उत सर्पनि २ इस पृथ्वी क्षेत्र पर बीतें तब हुंडा अव सर्पणि उत्पन्न हो ॥

तब हुंडा अवसर्पणि एक । परै करै विपरीत अनेक ।३१।
ताकी रीत सुनो मतिवंत । सुखमा दुखमा काल कि अंत ॥
वर्षादिक को कारण पाय । विकलत्रय उपजे बहुभाय ।३२।
कल्प वृक्ष विनशैं तिहिंवार । वरतै कर्म भूमि व्योहार ॥
प्रथम जिनेश प्रथम चक्रेश । ताही समै होहिं इहिंदेश ।३३।
विजय भंग चक्री की होय । थोड़े जीव जाहिं शिवलोय ॥
चक्रवर्त विकलप विस्तरै । ब्रह्मवंश की उतपातिकरै । ३४ ।
पुरुष शलाका चौथे काल । अट्ठावन उपजे गुणमाल ॥
नवम आदि सोलह पर्यंत । सात तीर्थ मैं धर्म नशंत ॥३५॥
ग्यारह रुद्र जन्म जहँधरैं । नौकलिप्रिय नारद अवतरैं ॥
सप्तम तेईसम गुणवर्ग । चरमजिनेश्वर को उपसर्ग । ३६ ।

१—भोग भूमि की विरोधी जिसमें अपने परिश्रम से खान पान आदिक सामग्री संचय की जाय ॥

२—चक्री की लड़ाई में हार हो ॥ ३—नये काम फैलावे ॥

४—६३ शलाका पुरुष में से चतुर्थम कालमें तीन तिर्थंकर शांतिनाथ १ कुंथनाथ २ अरहनाथ ३ सोई चक्रवर्त हुए और त्रिपृष्ट पृथम नारायण का जीव महावीर स्वामी का जीव हुआ और आदिनाथ स्वामी प्रथम तीर्थंकर तीसरे कालमें जन्म लेकर तीसरे ही काल में मोक्ष गये इसप्रकार ५ घटकर ५८ रहे ॥

५—श्री पुष्प दन्त जी ९ तीर्थंकर आदि श्री शांत नाथ जी १६ तीर्थंकर पर्यंत अंतरालय काल में धर्म का नाश होजायगा ॥

६—भीमावलि १ जितशत्रु २ रुद्र ३ विशाल ४ सुप्रतिष्ठ ५ बल ६ पुंडरीक ७ अजितधर ८ जितनाभि ९ पीठ १० सत्य वचन नय ११ ये ११ रुद्र हैं—भीम १ महाभीम २ रुद्र ३ महारुद्र ४ काल ५ महाकाल ६ दुर्मुख ७ नर्कमुख ८ अधोमुख ९ ये ९ नारद हैं ॥

७—सातवें सुपार्श्वनाथ तेइसवें पार्श्वनाथ अंताजिनेश्वर कहिये चौबीसवें महावीर स्वामी हुंडासर्पनि में इन तीनो को उपसर्ग होता है ॥

तीजे चौथे काल मझार । पंचम मैं दीषै बढ़वार ॥
विविधि कुदेव कुलिंगी लोग । उत्तमधर्म नाशकेजोग ।३७।
सवर विलालभील चंडाल । नाहरादि कुलमैं विकराल ॥
कल्कीउपकल्की कलिमाहिं । [४२]बैयालीसहों मिथ्यानाहिं ।३८।
अनावृष्टि अतिवृष्टि विख्यात । भूमि वृद्धि वज्रागनि पात॥
ईतभीत इत्यादिकदोष । कालप्रभाव होंयदुखपोष । ३९ ।

॥ दोहा छंद ॥

यों त्रिलोक प्रज्ञप्ति मैं, कथन कियो बुधराज ॥
सोभविजन अवधार यो, संशय मेटन काज । ४० ।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

तबफनेश आसन कंपियो । जिनउपकार सकल बुधकियो ॥
ततषिन पद्मावति लेसाथ । आयोजहँ निवसैंजिननाथ ।४१।
करप्रणाम परदक्षना दई । हाथ जोर पद्मावति नई ॥
फणमंडप कीनोप्रभुशीश । जलबाधा व्यापैनहिंईश । ४२ ।
नागराज सुर देख्यो जाम । भाजो दुष्ट जोतषी ताम ॥
[१]हीनजोग सूधी यहबात । भागजाय तबही कुशलात ।४३।

१—हीन पुरुष के योगसूधी यह बात है कि भाग जाय इसी में कुशल है ॥

अबसबतुरत कलह मिटगये । प्रभु[1]सप्तम थानकथिरभये ॥
विकलपरहित चिदातमध्यान। करैकर्म क्षयहेतमहान ।४४।
सात प्रकृति चौथे गुणठांन । पहले नाशकरी भगवान ॥
अबह्यांधर्म ध्यानबलधीर । तीनप्रकृति जीतीवरबीर ।४५।
[2]प्रथम शुकल पदसों परनये । खिपक श्रेणिमारग परठये ॥
प्रकृति[36]छतीस नवेंक्षयकरी । दसवेंलोभ प्रकृतिप्रभुहरी।४६।

॥ दोहा छंद ॥

एका[11]दशम उलंघपद, चढ़े [12]बारवें थान ॥
कर्म प्रकृति [16]सोलह तहां, नाश करी अवसान ।४७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

इहिंविधि [63]त्रेसठ प्रकृति निवार । घाते कर्म घाति[3]याचार ॥
चैतअंधेरी चौदशजान। उपजोप्रभुके [4]पंचम ज्ञान । ४८ ।
लोकालोक चराचर भाव। बहुविधि पर्य्यैवंत सुभाव ॥
ते सबआन एकही वार । झलके केवल मुकरमझार । ४९।
भयेअनंत चतुष्टय वन्त । प्रगटी महिमा अतुल अनंत ॥

---

१ सातवें गुणस्थान में स्थिर होगये -२- शुक्ल ध्यान के प्रथम पद रूप परणाय कर क्षायक कर्म श्रेणी पर थिर हो बैठे

३—ज्ञानावर्णी १ दर्शनावर्णी २ मोहनी ३ जिस्केदोभेदहै (दर्शनमोहनी १ चारित्रमोहनी २)अंतराय ४ कर्मप्रकृति की व्याख्या गोमठसार ग्रंथमे देखो ॥
४—केवलज्ञान ॥

दिव्यपरम औदारिकदेह । कोटिभानु दुतिजीतीजेह । ५० ।
अलोकीक अद्भुत संपदा । मण्डित भये जिनेश्वरतदा ॥
वचनअगोचर महिमासार । वरणन करत न पइयेपार । ५१ ।

॥ दोहा छंद ॥

पांच हजार प्रमान धनु, उपजत केवल ज्ञान ॥
अंतरिक्ष प्रभुतन भयो, ज्योंशशि अंबरथान । ५२ ।

॥ उक्तंच प्राकृत गाथा आर्याछंद ॥

जादे केवल णाणे परमोरालं जिणाण सव्वाणं ।
गच्छदि उवरे चावा पञ्च सहस्साणि वसुहाओ । ५३ ।

॥ भाषा टीका ॥

केवलज्ञान होनेपर सब केवल ज्ञानियों का परम औदारिक शरीर पृथ्वीसे पांच हजार धनुष ऊपर चलता है ॥

॥ पद्धड़ी छंद ॥

प्रकटीरविकेवलकिरण जाम। परिफूलो त्रिभुवन कमलताम॥
आकाशअमलदीपैअनूप। दिशविदिशभईसबविमलरूप ५४
सुरलोकबजे घंटागरिष्ट । तरुकरनलगे तहां पुहप विष्ट ॥

१—लोक से बाहर ॥

इन्द्रासनकंपेअतिगरीश। आनम्रभयेसुर मुकुटशीश।५५।
इत्यादिक बहु विधिचिहनचार। प्रभुकेवलसूचकभयेसार॥
तबअवधिजोड़ जानोसुरेश।छपुकरेकर्मपारस जिनेश।५६।
सिंहासन तज निजसीसनाय। प्रणमोपरोषसुष उरन माय॥
इन्द्राणीपूछे कहहुकंत। क्योंआसनतज उतरेतुरंत। ५७।
किसकारन स्वामी नयो शीश। याकोप्रतिउत्तर देहुईश॥
तबबोलेविकसत देवराज। प्रभुउपजो केवलज्ञानआज।५८।
ऐरावतगज सजसांपरिवार। प्रथमेंद्रचलो आनंदअपार॥
बाजेबहुपटह पयानभेर। सबवर्णनकरत लगैअबेर। ५९।
ईशानप्रमुख सबस्वर्गनाथ। निजबाहन चढ़चढ़चलेसाथ॥
हरिनादसुनो जोतषीदेव। चंद्रादिचलेतब पँचभेव। ६०।
भावनघर बाजेसंख भूर। [१]दसविधि सुर निकसे हर्ष पूर॥
बसुविंतरघरगरजे निशान।यों परियनसब कीनो पयान।६१।
योंचली चतुर विधिसुरसमाज।जिनकेवल पूजाकरनकाज॥
अंबरतजआयेअवनिमाहिं।जहांसमोसरनधुजफरहराहिं ६२
जो सुरपति को उपदेश पाय।धनपतिने कीनो प्रथम आय॥
[२]वर पंचवर्णमणिमयअनूप।जगलक्ष्मीकोकुलग्रहसरूप।६३।

॥ दोहा छंद ॥

समोसरन की संपदा, लोकोत्तर तिहुं भौन॥

१—भाव समाय अर्थ में॥ २— श्वेत १ रक्त २ पीत ३ हरित ४ श्याम ५॥

वचनद्वार वर्णो तिसै, सो बुध समरथ कौन । ६४ ।

॥ सोरठा छंद ॥

पैंथल अवसर पाय, धर्म ध्यान कारन निरख ॥
लिखूं लेश मनलाय, पढ़त सुनत आनँद बढ़ै। ६५ ।

॥ समो सरण वर्णन ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पहले गोल पीठका ठई । इन्द्र नील मणि मय निर्मई ॥
पांच कोश चौंडी परवान । उन्नत कोश अढ़ाई जान ।६६।
जाके चहुंदिश गिरदाकार । बनी पैंडका बीसहजार[२००००] ॥
हाथ हाथ पर ऊँची लसैं । नभ पर्यंत देष दुख नसैं । ६७।
तापर धूलीसाल उतंग । पंचरत्न[1] रज मै सर्वंग ॥
विविध वर्ण सो वलयाकार । झलकै इन्द्रधनुष उनहार।६८।
कहीं श्याम कहिं कंचन रूप । कहिं विद्रुम कहिं हरित अनूप॥
समोसरन लच्मी को एम । दिपै जड़ाऊ कुंडल जेम ।६९।
चारों दिश तोरन बन रहे । कनक थंभ ऊपर लहलहे ॥

१—हीरा १ मोती २ लाल ३ नीलम ४ सोना ५ ॥

आगे मान भूमि है जहां। मानथंभ चारोंदिशितहां। ७०।
तिनकीप्रथम पीठका बनी। सोलह पैड़ी संजुत ठनी॥
चारचार दरवाजे ठान। तीनतीन तहांकोट महान। ७१।
तिनमें और त्रिमेखलपीठ। तिनपै मानथंभ थिर दीठ॥
अतिउतंग कंचन के ठये। छत्रधुजादिक सों छविछये। ७२।
जिनै देख मानी मद बढ़े। उतरे मान महागिर चढ़े॥
मूलभाग प्रतिमा मनहरैं। इन्द्रादिक पूजा विस्तरैं। ७३।
एकएक दिशचहुँ दिशठई। सजल वापिका वारिज छई॥
नन्दादिकशुभ तिनकेनाम। चारोंदिश सोलहसुखधाम। ७४।
आगेखाई शोभित करी। औंड़ी अधिक विमलजलभरी॥
रत्ननीरराजै चहुँओर। हंसकलाप करें यहिं शोर। ७५।

॥ दोहा छंद ॥

वलया कृत खाई बनी, निर्मल जल लहरेय॥
किधों विमल गंगानदी, प्रभु परदछना देय। ७६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आगे पुहुप बेल बनसार। महा सुगंध मधुप सुखकार॥
सघनछांह सबरितुकेफूल। फूलेजहां सकल सुखमूल। ७७।

१—२—मद बढ़े मानी पुरुष जो महा मान गिरिपर चढ़े हुए थे सो नीचे उतर आये।

याके कछु अन्तर दुति धरै। कंचन कोट प्रथम मनहरै ॥
वलयाकृति अति उन्नत जेह। मानो मानषोत्र गिरयेह।७८।
चहुँदिश सोहैं चार दुवार। रूपमई तिषने मनहार ॥
रत्नकूट ऊपर जगमगै। लाल वरण अतिसुन्दरलगै।७९।
किधोंअरुन छबिहाथ उठाय। जगलछमी नाचै विहसाय ॥
नौनिधिजहां रहैं अभिराम। पिंगलादिकहैं जिनकेनाम।८०।
प्रभुअजोग गिन दीनी छार। वे मचली सेवैं दरबार ॥
मंगल दरव एकसोआठ। धरे प्रतेक मनोहर ठाठ।८१।
गावैंजिन गुण देवकुमार। और विविधि शोभा।तिहिं सार ॥
विंतरदेव खड़ेदरवान। विनयहीन को देहिं न जान।८२।
यह पहले गढ़की विधिकही। आगे और सुनो अब सही ॥
गोपुर तज चारोंदिश गली। गमनहेत भीतर को चली।८३।
तहां निरतशाला दुहुँ पास। सबदिश में जानो सुखवास ॥
सोरनथंभ फटकमयभीत। तिषणीमणिमय शिषरपुनीत८४
सुरबनिता नाचैं तहिं एम। लावन तोय तरंगनि जेम ॥
मँदहास मुखसोहै खरी। जिनमंगल गावैं सुखभरी।८५।
बाजैं बीन बांसली ताल। मृहामुरज धुनि होयरसाल ॥
आगे वीथी अन्तर धरे। दोनोंदिशा धूपघट भरे।८६।

॥ सोरठा छंद ॥

श्याम वरण यह जान, धूप धुवां नभ को चला।

किधौं पुन्न डरमान, धूवां मिस पातग भजे। ८७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

आगे चार बागचहुओर। प्रथम अशोकनाम चितचोर॥
सप्तवर्ण चंपक सहकार। येइनकी संज्ञाअविधार। ८८।
सबरितुके फल फूलन भरे। विरष वेल सों सोहत परे॥
वापीमंडपमहलमनोग। राजें जहाँ यथा विधजोग। ८९।
चैत विरछ[1] चारों वन माहिं। मध्य भाग सुंदर छवि छाहिं॥
जिनमुद्रामंडित मनहरें। सुरनरनितपूजा विस्तरें।९०।
बाग ओट वेदी चहुँ ओर। चारद्वार मंडित छवि जोर॥
अब इस वन वेदी तैंसही। गढपर्यंत गलीजिरही।९१।
तिनमें धुजा पाँति फरराय। कंचन थम्भ लगी लहराय॥
दशप्रकारआकार समेत। तिनकेभेदसुनो सुखहेत।९२।
माला[1] वसन[2] मोर[3] अरविंद[4]। हंस[5] गरुड[6] हरि[7] वृषभ[8] गयंद[9]॥
चक्र[10] समेतदशाचिहनमनोग। धुजादुकूलनिसोहेंजोग।९३।
येदश एकभांत की जान। एक एकसौआठ प्रमान॥
दशसैअसी[1080] सबै मिलभई। एक दिशामें सबवरनई।९४।
चारों दिशकी जोड़ सरीस। चारहजार[4320] तीनसे बीस॥
यहपरमितजिनशासनमाहिं। अतिविचित्रशोभाअधिकाहिं

१—एक प्रकार का वृक्ष जिसमें प्रतिमा का चिन्ह होता है॥

हालैं धुजा पवन बस येह । जिन पूजन भवि आये जेह ॥
पंथखेद तिन को मन आन । करत किधों सतकार विधान।९६।
मानथंभ धुजथंभ अनूप । चैत विरछ वेदी गढ़रूप ॥
इत्यादिक ऊँचे इकसार । जिन तनतें बारह गुणधार।९७।
आगे रजत कोट निर्मान । तुंगकोट अति धवल महान ॥
किधों सुयश प्रभुशेतप्रकास । फेरीदेयफिरो चहुँ पास।९८।
पूरव वत दरवाजे चार । रत्नमई अनुपम छविधार ॥
नौनिधिमंगलदरबसमाज । तोरनप्रमुखऔरसबसाज।९९।
प्रथमकोट वर्णन समजान । ठाड़े भवन देव दरवान ॥
यासोंलगी और अबगली । चारों तरफ एकसीचली।१००।
कल्पवृक्ष बनराजे तहां । दश विधि कल्पतरोवर जहां ॥
भूषण बसन लगे जिनडार। शोभा कहत न लहियेपार।१०१।
मध्यभाग जिन विंब समेत । सिद्धारथ तरुवर छबिदेत ॥
चहुंदिशवेदीचहुंदिश द्वार। रचनाऔरअनेकप्रकार।१०२।
इस बेदी के बारह भाग। आगे फटक कोटलों लाग ॥
अतिविचित्रमहलनकीपांति।जिनसिररत्नकूटबहुभांति।१०३
चंद्रकांतिमणिभासुर भीत । सोरणमय तहां थंभ पुनीत ॥
सुरनरनागरमैंजिनमाहिं। किन्नरगण बहु केलकराहिं।१०४
बीथी मध्यदेश शुभरूप । पद्मराग मणिमय नव रूप ॥
धुजाछत्रघंटाछबिदेहिं । जिनमुद्रासों मन हरलेहिं।१०५।
आगे तृतिय कोट वनएम । फटक मई निर्मल नभ जेम ।

अतिउतंगसोबलयाकार।लालवरणमणिनिर्मितद्वार।१०६।
और कथन पूरब वत जान। ठाढ़े सुरग देव दरवान॥
महामनोहरलोचनहार।अनुपमशोभाअचरजकार।१०७।
अबसुनमध्यभूमिकीकथा। फटककोट भीतर विधियथा॥
गढ़सोंप्रथमपीठलगलगी॥फटकभीतसोंलहजगमगी१०८
तिनपै रत्न थंभ छवि देहिं। प्रभाजाल सों तम हर लेहिं॥
तिनहीपै श्रीमंडप ठयो। फटक मई नभ मैं निर्मयो।१०९।

॥ सोरठा छंद ॥

याश्री मंडपमाहिं, निराबाध तिहुँजगबसै॥
भीरहोय तहां नाहिं,त्रिभवनपतिअतिशैअतुल।११०।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

भीतन बीच गली जेरही। बारहसभा तहां जिनकही॥
बैठेमुनिअपछरअजिया।जोतिषवानअसुरसुरतिया॥१११।
भावन विंतर जोतिषि देव। कल्प निवासी नरपशुएव॥
तिन मैं प्रथम पीठकाठई। अनुपम बैडूरज मणिमई।११२।
मोरकंठ वत आभाजास। सोलह पैंडसाल चहुँ पास॥
बारह सभा महादिशचार।तिनकोंयहपथसोलहसार।११३।
मंगल दरव जहां सबधरे। यत्तदेव सेवक तहां खरे॥

धर्मचक्रतिनकेसिरदिपै। जिनकोदेषदिवाकरछिपै। ११४।
तापर दुतिय पीठका बनी। चामीकर मयराजत घनी॥
मेरुसिंगवत उन्नति जेम। जगमगाय मंडल रवितेम। ११५।
आठधुजा आठोंदिश जहाँ। तिन शोभा वर्णनबुधकहां॥
तिनमैं आठचिहनचित्राम। चक्रगयंदवृषभ अभिराम। ११६।
वारिज वसन केहरी भूप। गरुड़ माल आकार अनूप॥
मंदपवनबसहालैंजेह। किधों पापरज झारत येह। ११७।
तापर तृतिय पीठका और। तीन मेषला मंडित ठौर॥
सर्वरतनमय झलकतषरी॥किरणजासदशदिशविस्तरी ११८
गंध कुटी जहां बनी अनूप। पंच रत्न मय जड़ितसरूप॥
जाकेचारद्वार चहुँओर। झलकैंमाणक हीराहोर। ११९।
तीनपीठ सिर सोहतषरी। किधों त्रिजगछवि नीचीकरी॥
परमसुगंध न वरनी जाय। सुन्दरसिखर धुजाफहराय। १२०।
तहां हेम सिंहासन सार। तेजसरूप तिमर क्षयकार॥
नानारतन प्रभामैंलसैं। जगलछमी प्रतिकिरणनहसैं। १२१।
बचन गम्य नहिं शोभा जहां। अन्तरीक्ष राजैं प्रभुतहां॥
त्रिभुवनपूजतपार्सजिनेश। ज्योंजगशिषरसिद्धपरमेश। १२२

॥ दोहा छंद

समोसरन रचना अतुल, ताकोअति विस्तार।

संपति श्रीभगवान की, कहत लहत को पार । १२३।

॥ सोरठा छंद ॥

जिन वरणन नभ माहिं, मुनि विहंग उद्यमकरैं ॥
पै उड़पार न जाहिं, कौन कथा नरदीनकी । १२४।

॥ अष्ट प्रातिहार्य वर्णन ॥

॥ हरिगीत छंद ॥

राजत उतंग अशोक तरुवर, पवन प्रेरत थरहरैं ॥
प्रभु निकटपाय प्रमोद नाटक, करत मानो मनहरैं ॥
तिसफूल गुच्छत भ्रमर गुंजत, वहीतान सुहावनी ॥
सोजयोपासजिनेन्द्र पातग, हरनजग चूड़ामनी॥१२५।
निज मरण देष अनंग डरपो, शरणढूंढ़त जगफिरो ।
कोईनराषै चोरप्रभुको, आय पुनि पायन गिरो ॥
यौंहारनिज हथयार डारे, पुहुप वर्षा मिस भनी ॥
सोजयो पास जिनेन्द्र पातग, हरणजग चूड़ामनी॥१२६।
प्रभुनील अंग उतंग गिरतैं, वाणि शुचि सीताढली॥
सोभेद भ्रम गजदंत पर्वत, ज्ञान सागर में रली ॥
नयसप्त भंग तरंग मंडित, पाप ताप विध्वंशनी ॥

सोजयोपास जिनेन्द्र पातग, हरनजग चूड़ामनी।१२७।
चंद्रार्चि चयछवि चारु चंचल, चमर[1] वृन्द सुहावने ॥
ढोलैं निरंतर यक्ष नायक, कहत क्यों महिमा बने ॥
यहनील गिर के शिषरमानो, मेघ झर लागी घनी ॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी।१२८।
हीराजवाहर षचित बहु विधि, हेमैं आसन राजही ॥
तहिंजगत जनमनहरन प्रभुतन, नील वर्ण विराजही ॥
यहजटित वारिज मध्य मानो, नीलमणि[2] कर्णिकाबनी॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी।१२९।
जग जीत मोहमहान जोधा, जगत में पटहा दियो ॥
सोशुक्ल ध्यान कृपानबल, जिनविकट वैरीवश कियो ॥
येबजत विजय निशान दुंदुभि, जीत सूचै प्रभुतनी॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी। १३०।
छदमस्त पदमें प्रथम दर्शन, ज्ञान चारित आदरे ॥
अबतीन तेईछत्रँ छलसों, करत छाया छविभरे ॥
अति धवल रूप अनूप उन्नत, सोम बिंबै[3] प्रभाहनी ॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी।१३१।
दुतिदेष जाकी चांद शरमें, तेज सों रवि लाजए ॥

१—चमर समूह ऐसे सुहावने हैं जैसे चन्द्र किरण समूह छवि और सुन्दर चंचल हैं ॥ २—कर्णिका फूल की डाडी का जीरा ॥
३—चन्द्र विंब प्रभाह को मारने वाली ॥

अबप्रभा मंडल जोग जगमें, कौन उपमा छाजए॥
इत्यादि अतुल विभूत मंडित, सोहिये त्रिभुवनधनी॥
सोजयोपास जिनेंद्र पातग, हरनजग चूड़ामनी।१३२।
योंअसम महिमा सिंधुसाहब, शक्रपार न पावही॥
तजहास भयतुम दासभूधर, भगति वशयश गावही॥
अबहोउ भवभव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहूँ॥
करजोर यह बरदान माँगू मोषपद थावत लहूँ।१३३।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

यहविध समो सरन मंडान। कियो कुवेर यथा विधथान॥
आयेसुर वर्षावत फूल। जैजैकार करत सुख मूल।१३४।
अति प्रसन्नता सब विध भई। हरषत तीनप्रदक्षना दई॥
धूलसालि में कियो प्रवेश। चक्रभयो छविदेषसुरेश।१३५।
मुदित महर्धिक[1] देवनसाथ। जिन सनमुख आयोसुरनाथ॥
हस्तकमल जोरेअमरेश। देषेद्रगभर पार्सजिनेश।१३६।
मणिउतंग आसन परईश। मानो मेघरत्न गिरशीश॥
फैलरहीतनकिरणकलाप। कोटभानुसोंअधिकप्रताप।१३७।
विकसतचितरोमांचितकाय। प्रणमो चरनसीसभुमिलाय॥
मणिझारीभर तीरथ तोय। पूजे मघवा जिन पद दोय।१३८।

१—बड़े रिद्धि वाले॥

सुर्ग सुगंध सों भक्तिबढ़ाय । अर्चें इन्द्र जिनेश्वर पाय ॥
मुक्ताफल मय अक्षत लिये । पुंजपरमगुर आगे दिये ।१३६।
पारजात मंदार मनोग । पुहुप चढ़ाये जिनवर जोग ॥
सुधापिंड चरुलेय पवित्त । पूजाकरी शक्र धर चित्त ।१४०।
रत्न प्रदीप रवाने षरे । श्रीपति पाय शचीपति धरे ॥
देवलोक की अगर अनूप । पास चरन षेई सुरभूप ।१४१।
कल्प तरोवरके फलरँजे । जगपति पाय पुरंदर जजे ॥
सर्वदरवधरकरपरनाम । दीनोंइन्द्रअरघअभिराम । १४२।

॥ दोहा छंद ॥

करजिन पूजा आठ विध, भावभक्त बहुभाय ॥
अवसुरेश परमेश थुति, करत सीस निजनाय।१४३।

॥ १५ मात्राचौपाई छंद ॥

प्रभुइसजग समरथ नहिं कोय। जापैयश वर्णन तुम होय॥
चारज्ञान धारी मुनिथके। हमसे मंदकहा करसकें।१४४।
यह उर जानत निश्चै कीन । जिन महिमा वर्णन हमहीन ॥
पैतुम भक्तकरै बाचाल । तिसवस होय गहूँ गुणमाल १४५।
जै तिर्थंकर त्रिभुवन धनी । जगचंद्रोपम चूड़ामनी ॥
जै जै परम धर्म दातार । कर्म कुलाचल चूरन हार ।१४६।

जै शिव कामिन कंत महंत। अतुल अनंत चतुष्टय वंत॥
जैजगआसभरनबड़भाग। शिवलक्ष्मीकेसुभगसुहाग१४७
जै जै धर्म धुजा धरधीर। सुरग मुक्ति दाता वरवीर॥
जै रतनात्रिय रत्न करंड। जैजिन तारन तरन तरंड।१४८।
जै जै समोसरन सिंगार। जै संशयवन दहन तुसार॥
जै जै निर्विकार निर्दोष। जै अनंत गुण माणक कोष।१४९।
जैजै ब्रह्म चरज दल साज। कामसुभट विजई भटराज॥
जैजैमोह महानगकरी। जैजैमद कुंजर केहरी। १५०।
क्रोध महानल मेघ प्रचंड। मान महीधर दामनि डंड॥
मायाबेल धनंजय दाह। लोभ सलिल सोषक दिननाह१५१
तुमगुणसागर अगमअपार। ज्ञानजहाज न पहुंचैपार॥
तटहीतटपर डोलतसोय। स्वारथसिद्ध तहांहीहोय। १५२।
प्रभुतुम कीर्ति बेलबहु बढ़ी। जतन बिनाजग मंडपचढ़ी॥
औरअदेव सुयशानितचहैं। येअपनेघरही यशलहैं।१५३।
जगत जीव घूमैं विनज्ञान। कीनो मोह महा विषपान॥
तुमसेवाविषनाशनजरी।यहमुनिजनमिलनिश्चैकरी।१५४
जन्मलता मिथ्यामतमूल। जामनमरनलगे जिमफूल॥
सोकबहीबिनभक्तिकुठार। कटैंनहींदुखफलदातार। १५५।
कलपतरोवर चित्राबेल। काम पोरसा नौनिधि मेल॥
चिंत्यामणिपारसपाषान। पुन्नपदारथ औरमहान। १५६।

येसवएक जन्म संजोग । किंचित सुख दातार नियोग ॥
त्रिभुवननाथतुमारीसेव । जन्मजन्म सुखदायकदेव ।१५७।
तुमजगबांधव तुमजगतात । असरनसरनविरदविष्यात ॥
तुमजगजीवनकेरछपाल । तुमदातातुमपरमदयाल ।१५८।
तुमपुनीत तुमपुरुषपुरान । तुमसबदर्शी तुमसबजान ॥
तुमजिनयज्ञपुरुषपरमेश । तुमब्रह्मातुमविष्णुमहेश । १५९।
तुमहीजगभरता जगयान । स्वामिस्वयंभू सुखअमलान ॥
तुमविनतीनिकालतिहुंलोय । नहिंनाहिंसरनजीवकोकोय १६०
तिस कारन करुणा निधनाथ । प्रभुसनमुख जोरे हमहाथ ॥
जबलौंनिकट होयनिर्बान । जगनिवास छूटैदुखदान ।१६१।
तबलों तुम चरणांबुजदास । हमउर होउयही अरदास ॥
औरनकुछ बंछाभगवान । यहदयालु दीजैवरदान । १६२ ।

॥ दोहा छंद ॥

इहिविधि इन्द्रादिकअमर, करबहु भक्तिविधान ॥
निजकोठे बैठेसकल, प्रभुसनमुख सुखमान ।१६३।
जीतकर्म रिपु जे भये, केवल लब्धि निवास ॥
तेश्रीपारसप्रभु सदा, करो विघन घननास ।१६४।

श्री पार्श्व पुराण भाषा भगवत ज्ञान कल्याणक वर्णन नाम अष्टम अधिकार
॥ सम्पूर्णम् ॥

॥ नवम अधिकार ॥

॥ सोरठा छंद ॥

पारस प्रभुको नाउँ, सार सुधारस जगत में ॥
मैं याकी बलि जाउँ, अजर अमर पदमूल यह। १।

॥ दोहा छंद ॥

बारह[1] सभा सुथान मध, यों प्रभु आनंद हेत ॥
यथाकमलनी षंडको, शशि मंडल सुख देत। २।
विकसतमुख सुरनर सकल, जिनसन्मुख करजोर॥
निवसैं प्यासे अमृत धुनि, ज्योंचात्रक घनओर। ३।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तब गणराज स्वयंभू नाम। चार[1] ज्ञान धारी गुण धाम ॥
करप्रनाम पारसप्रभुओर। विनतीकरी करांजुलिजोर। ४।
भो स्वामी त्रिभुवन घरयेह। मिथ्या तिमरछयो अतिजेह ॥
भूलेजीव भमैंतामाहिं। हितअनहित कुछसूझै नाहिं। ५।
श्रीजिन वाणी दीपक लोय। ताबिन तहां उदोत न होय॥

१—मति १ श्रुति २ अवधि ३ मनपर्य्य ४ ॥

तातैंकरुणानिध स्वयमेव। करउपदेश अनुग्रह देव। ६।

॥ गणधर प्रश्न ॥

जानन जोगकहा है ईश। गहन जोग सो कह जगदीश॥
त्यागनजोग कहोभगवान। तुमसब दर्शीपुरुष प्रमान। ७।
कैसे जीव नरक में परै। क्योंपशु योनिपाप दुख भरै॥
काहेसों उपजे सुर लोय। कौनकर्म तैं मानुष होय। ८।
कौनपाप फल जन्मै अन्ध। बहरे कौन क्रिया संबन्ध॥
किसअघ उदय होयनरपंग। गूंगेकिस पातग परसंग। ९।
कौनपुन्न तैं दिरब अतीव। क्योंयह होंय दरिद्री जीव॥
पुरुषवेदकिस कर्मउदोत। नारिनपुंसक किसविधहोत। १०।
किसआचरण बड़ीथितिधरैं। क्योंकर अल्प आयुधरमरैं॥
भोगहीन अरुभोग समेत। सुखीदुखी दीखैं किसहेत। ११।
किसकारन मूरख मतहीन। क्योंउपजें पण्डित परवीन॥
किसकारन तैंहोय सरोग। किसअधर्म तें पुत्रवियोग। १२।
विकल शरीर पाप दुखसहै। नीचऊंच कुल कैसे लहै॥
किनभावनभव तिथिविस्तरै। भवथितभेद कहाकरकरै। १३।
क्योंकर होय सुरग मै इन्द्र। कैसे पद पावे अहमिंद्र॥
चक्रीपदकिस पुन्नउदोत। किमबांधे तिर्थंकर गोत। १४।
इत्यादिक यह प्रश्न समाज। इनको उत्तर कहजिन राज॥
तुमसब संशयहरन जिनेश। जैसे भव तम दलनदिनेश। १५।

॥ दोहा छंद ॥

तबश्री मुख बानी विमल, बिन अक्षर गंभीर ॥
महामेघ की गरज सम, सिरीहरन जगपीर । १६ ।
यथा मेघजल परन में, निंबादिक रस रूप ॥
तथासर्व भाषा मई, श्री जिन बचन अनूप । १७ ।
तालु होठ सपरस बिना, मुख विकार विनसोय ॥
सबभाषा मय मधुरतर, श्री जिनकी धुनिहोय । १८ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

छहोंदरब पंचासतिकाय । साततत्व नौपद समुदाय ॥
जाननजोग जगतमेंयेह । जिनसोंजाहिं सकलसन्देह। १६ ।
सबविध उत्तम मोष निवास । आवा गमनमिटै जिहिंवास॥
तातेंजे शिव कारन भाव । तेई गहन जोग मनलाव।२०।
यह जगबास महा दुखरूप । तातें भ्रमत दुखी चिद्रूप ॥
जिनभावन उपजैसंसार । तेसव त्यागजोग निर्धार । २१ ।
नरकादिक जग दुख जावंत । पापकर्म बशतैं बहुभंत ॥
सुरगादिक सुखसंपतिजेह । पुन्नतरोवर कोफलतेह। २२ ।

॥ दोहा छंद ॥

इहि विधि प्रश्न समाजको, यह उत्तर सामान ॥

अबविशेष इनकोलिखूं, यथाशक्ति कुछजान । २३ ।
जीव अजीव विशेष बिन, मूल दरव ये दोय ॥
इनही को फैलावसब, तीनकाल तिहुँ लोय । २४ ।
चेतन जीव अजीव जड़, यह सामान सरूप ॥
[1]अनेकांत जिनमतविषै, कहेयथारथ रूप । २५ ।
[2]दरव अनेकनयातमक, एक एक नय साध ॥
भयेविविध मत भेदसों, जगमें बढ़ी उपाध । २६ ।
जन्म अन्ध गजरूप जों, नहिं जानै सबंग ॥
त्यों जगमें एकांत मत, गहै एकही अंग । २७ ।
ता विरोध के हरन को, [3]स्याद् वाद् जिनवैन ॥
सब संशय मेटन विमल, सत्यारथ सुखदैन । २८ ।
सात भंग सों साधियै । दरब जात जामाहिं ॥
सधैबस्तु निर्बिघन तब, सबदूषण मिटजाहिं । २९ ।

॥ घनाक्षरी छंद ॥

[4]अपने चतुष्ठै की अपेक्षा द्रव्य अस्ति रूप,
परकी अपेक्षा बहुनासति बषानियै ॥
एकही समै सो अस्ति नासति सुभाव धरै,

१—अनेक धर्म कर के ॥
२—द्रव्य अनेक नय सरूप हैं भावार्थ अनेक नयकर सधै हैं ॥
३—स्याद् वाद जिन वाणी ॥
४-सांतभंग सरूप-अस्ति १ नास्ति २ अस्तिनास्ति ३ अवक्तव्य ४ अस्तिअवक्तव्य ५ नास्तिअवक्तव्य ६ अस्तिनास्तिअवक्तव्य ७ ॥

ज्यों है त्यों न कहाजाय अवक्तव्यमानिये,
एकबार अस्ति नास्ति कह्योजाय कैसें ताते,
अस्ति नास्ति अवक्तव्य ऐसें परवानिये,
आप पर द्रव्यादि चतुष्टे की अपेक्षा करि,
अस्तिनास्ति अवक्तव्य वक्तव्य सुमानिये। ३०।

॥ दोहा छंद ॥

इहि विध ये एकांतसो, सात भंग भ्रम खेत ॥
स्याद्वाद[1]वे रुषधरें, सब भ्रम नाशन हेत। ३१।
स्यादशब्द को अर्थजिन, कह्योकंथ चितजान॥
नागरूप नयविष हरन, यहजग मंत्र महान। ३२।
ज्योंरस[3] विद्ध[2]कुधातु जग, कंचन होय अनूप॥
स्यादवाद संजोगतें, सबनय सत्य सरूप। ३३।

॥ जीव विषे सातों भंग निरूपण॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

दरब दिष्टि जियनित्त सरूप। पर्यें न्याय अथिर चिद्रूप॥

१—एक धर्म के पक्षमौ सप्त भंग नयभ्रम क्षम हैं स्यद्वादि अर्थात् अनेक धर्मपक्ष विरोधि रहित से सबभ्रम नाशन हेतु हैं॥ २—विरोध रहित ३—रसपूरित ॥

नित्यानित्य कथंचितहोय । कहोनजायकथं चितसोय ।३४।
नित्य अवाचि कथंचितवही । अथिर अवाच कथंचितसही ॥
नित्यानित्य अवाचकजान । कहतकथंचितसबपरवान ।३५।
इहिविध स्यादवाद नयभङ्गाहिं । साधोजीव जैनमत माहिं ॥
औरभांतिविकल्प जेकरैं । तिनकेमत दूषणाविस्तरैं । ३६

* जीव निरूपण *

जीव नाम उपयोगी जान । करता भुगता देह प्रमान ॥
जगतरूप शिवरूप अरूप । ऊरधगमन सुभावसरूप।३७॥

॥ सोरठा छंद ॥

ये सब नौ अधिकार, जीव सिद्ध कारन कहे ॥
इनकोकुछ विस्तार, लिखूं जिनागम देषकें । ३८ ॥

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

* १ जीव कथन *

चार भेद व्योहारी प्रान । निश्चै एक चेतना जान ॥
जोइनसोंनित जीवतरहै । सोईजीवजैन मतकहै । ३९ ।

॥ सोरठा छंद ॥

प्रथम आव अवधार, इन्द्री सांस उसांसबल ॥

१—बल ३ हैं मन १ बचन २ काय ३ ॥

मूल प्राण ये चार, इनके उत्तर भेद दसं। ४०।

॥ दोहा छंद ॥

पांचे प्राण इन्द्रीजनत, तीनैंभेद बल प्रान।
एकसांस ऊसांसगिन, आवसहित दंस जान। ४१

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

सैनी जीव जगत में जेह। दसों प्रान सों जीवें तेह॥
मनसों रहित असेनीजात। तेनौंप्रान धरें दिनरात। ४२।
कान विना चो इन्द्री जिते। आठप्रानके धारक तिते॥
तेइन्द्रीके आँख न भनी। तातेंसातं प्रानको धनी। ४३।
नासा बिन वेइन्द्री जीव। तिनसब के षटप्रान सदीव॥
जीभवचन वर्जिततनजास। एकेन्द्रीचहुँ प्राननिवास।४४।

॥ दोहा छंद ॥

इंहिंविध जीवअजीव सब, तीनकाल जगथान॥
सत्तासुख अवबोध चित, मुक्त जीव के प्रान। ४५।

१- मुक्ति गये जीव के ये ४ प्रान हैं सत्ता अर्थात् होना १ सुख २ अवबोध अर्थात् ज्ञान ३ चित अथार्त् चेतन स्वरूप ४॥

* २ उपयोगकथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

दीप्रकार उपयोग बखान । दर्शन चार आठ विधज्ञान ॥
चक्षु[1]अचक्षु[2] अवधि[3]अवधार । केवलयेसब दर्शनचार ।४६।
अवसुनवसुविधज्ञानाविधान।मतिश्रुति अवधि ज्ञानअज्ञान
मनपर्यै केवल निर्दोष । इनकेभेद प्रतक्षपरोष । ४७ ।
मतिश्रुति ज्ञान आदिके दोये । येपरोष जानै सबकोय ॥
अवधिऔर मनपर्यैज्ञान । एक देश परत्यक्ष प्रमान। ४८
केवलज्ञान सकल परत्यक्ष । लोकालोक विलोकनचक्ष ॥
जहांअनंत दरबपरयाय । एकबारसब झलकैंआय ।४९।
दर्शन चार आठ विधि ज्ञान । ये व्योहार चिन्हजी जान॥
निश्चैरूप चिदातमयेह । शुद्धज्ञान दर्शन गुणगेह । ५० ।

* ३ कर्ताकथन *

कल्पित असदभूत व्योहार । तिसनयघट पटादि कर्तार ॥

१—चक्षु इंद्री समान है

२—झूठी असभूत विवहार नय कर कै यह जीव घट पट आदि वस्तुओं का कर्ता है और अनुप चारित अयथारथ रूप विवहार नयसै कर्म पिंड का करता है अशुद्ध निश्चै नय कर कै राग दोष का हरता है शुद्ध निश्चै नय करके शुद्ध भाव कर्ता है ॥

अनुपचरित अयथारथरूप । कर्मपिंडकरता चितरूप।५१।
जब अशुद्ध निश्चै बलधरै । तवयह राग दोष को हरै ॥
यहीशुद्ध निश्चैकरजीव । शुद्धभाव करतार सदीव । ५२ ।

* ४ भोगताकथन *

॥ सोरठा छंद ॥

प्रानी सुख दुख आप, भुगतै पुद्गल कर्म फल ।
यह ब्योहारी छाप, निश्चै निजसुख भोगता ।५३ ।

* ५ देहमात्र कथन *

॥ दोहा छंद ॥

देहमात्र [1]व्यवहार कर, कह्यो ब्रह्म भगवान ॥
दरवित नय की दिष्टिसों, लोक प्रदेश समान । ५४ ।

॥ अडिल छंद ॥

लघुगुर देह प्रमान जीव यह जानये ।

१—विवहार करके ॥

सोविथार संकोच शक्ति सों मानये॥
जोंभाजन परवान दीपदुति विस्तरै।
समुदघात विनराम यहाँ उपमा धरै।५५।

* समुदघात कथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तेजस कारमान जुतभेस। वाहर निकसैं जीव प्रदेस॥
छाड़ैंनहीं मूलतनठाम। समुद्घात विधयाको नाम।५६।
सातभेद सव ताके कहे। गोमठसार देखसर दहे॥
प्रथमवेदना नामवषान। दुतिय कषायनाम उरआन।५७।
नन त्रिकुर्वनातीजा येह। चौथा मारणांत सुन लेह॥
पंचमतेजस संज्ञाजान। षष्ठम आहारक अभिधान।५८।

॥ १५ मात्रा अर्ध चौपाई छंद ॥

केवल समुंद्घात सातमा। ऐसीशक्तिधरै आतमा।५९।

* १ वेदना समुदघात *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

दुसह वेदना के वश जहां। जीवप्रदेश कढ़त हैं जहां॥

१—जीव के दो भेष हैं तेजस कहिये तेजमान १ कारमान कर्मपिंडसंयुक्त २

किसीजीवके हो परवान। पहलासमुद घातयहजान ।९०।

२ कषाय समुद घात

जबकाही रिपुकरण विध्वंश। बाहरजाहिं जीव के अंश ॥
अतिकषाय सों हो है तेह। दूजा समुदघातहै येह। ९१।

३ विकुर्बनासमुदघात

नाना जाति विक्रिया हेत। निकसैं ब्रह्म प्रदेश सचेत ॥
देवनारकी के यह होय। तीजा समुदघात है सोय ।९२।

४ मारणांतसमुदघात

किसी जीव के मरते समैं। हंसअंश तन बाहर गमैं ॥
बांधीगति के परसन काज। चौथाभेद कहाजिनराज ।९३।

५ तेजस समुदघात

जो मुनि के कछु कारनपाय। उपजै क्रोधन थांबोजाय ॥
तेजसतनको औसर यही। बामकंध सों प्रघटै सही ।९४।
ज्वालामई काहलाकार। अरुण सिंदूर पुंज उनहार ॥
बारह जोजनदीरघ सोय। नौजोजन विस्तीरण होय।९५।
दंडक[2] पुरवतप्रलै करेय। साधसमेत भस्म करदेय ॥

१—कुत्सित आकार अर्थात् बेडौल आकार॥
२—दंडक पुर नगर का नाम जिसको १ मुनि ने भस्म कर दियाथा शरीर ५ प्रकार है तेजस १ कारमाण २ औदारिक ३ आहारिक ४ बैक्रयक ५ ॥

अशुभकषाययहीविख्यात। अवसुनशुभतेजसकीबात।६६।
दुर्भिक्षादिक दुख अविलोय। दयाभाव मुनिवर के होय॥
शुभआकृत सों निवसैंताम। दक्षणकांधे सोंअभिराम।६७।
पूरब कथित देह विस्तार। रोगसोग सब दोषनिवार॥
फिरनिज थान करैंपैसार। पंचम समुदघात यहधार।६८।

* ६ आहारकसमुदघात *

करत साधुपद अर्थ विचार। मन संशय उपजै तिहिं बार॥
तहांतपोधन चिंत्याकरै। कैसेयह विकल्प निर्वरै। ६९।
भरथखेत आदिक भूँमाहि। अबह्यां निकट केवलीनाहि॥
तातैंकरयै कौनउपाय। विनभगवान भरमनाहिंजाय।७०।
तबमुनि मस्तकसों गुणगेह। प्रघट होय आहारक देह॥
एकहाथातिसपरामितकही। श्रीजिनशासनसोंसरदही।७१।
फटक बरन मनहरन अनूप। तहांजाय जिहिंकेवलरूप॥
दर्शनकर संदेह मिटाय। फेरआन निजथान समाय।७२।
षष्टम समुदघात यहमान। मुनिके होहिंछटे गुणथान॥

* ७ केवल समुदघात *

जबसयोग[1] जिनकेपरदेस। बाहरनिकसैं अलषअभेस।७३।

१—सयोग केवलीके जीव प्रदेश जब बाहर निकलतेहैं पहले दंड आकार फिर कपाट अर्थात् किवाड़ वत चोड़े फिर प्रतर अर्थात् फैलेहुए होकर लोक पूरित होजाते हैं॥

दंड कपाटादिक विधठान। क्रमसों होंयलोक परवान ॥
सप्तमसमुद्घात यहभाय। शरधाकरो भविकमनलाय।७४।
मरणांतक आहारक जेह। एक दिशा गतजानो येह ॥
बाकीपांच रहेजेआन। तेसबदसों दिशागतजान। ७५।

* ६ संसारी जीवकथन *

दुविधरास संसारी जीव। थावर जंगम रूप सदीव ॥
तहांपांच विधिथावरकाय। भूँ[1]जल[2]तेज[3] बनस्पति[4]वायं। ७६।
चारजाति के जंगम जन्त। चलत फिरतदीषें बहुभन्त ॥
संषसीपकोड़ी क्रिमिजोक। इत्यादिक वेइन्द्रीथोक। ७७।
चेंटीदीम कुंथ पुनिआदि। येतेइन्द्री जीव अनादि ॥
माषीमाछर भृंगी देह। भ्रमरप्रमुख चौइन्द्री येह। ७८।
देवनारकी नर विख्यात। केतक पशू पचेन्द्री जात ॥
ऐसत्रस थावरकेभेव। इनकोविषय छेत्रसुनलेव। ७९।

* छप्पै छंद *

फरस चौरसै चाप, जीभ चोसठ सौनासा।

१—स्पर्स इन्द्री का विषय ४०० जीभ का ६४ नाकका १०० धनुष है द्रग इन्द्रीका विषय २९५४ धनुषहै ऐसा क्रम दिखाया है असेनीकै दुगना जानना चाहिये और अन्तकी जो श्रवण इन्द्री असेनी के हैं उसका विषय ८००० धनुष है और सेनी के स्पर्श इन्द्री जीभ इन्द्री नाक इन्द्री इनका विषय ६ जोजन और नेत्र इन्द्री का विषय ४७२६३ योजन और श्रवण इन्द्रीका बारह जोजन कहा है॥

द्रगजोजन [२९] उँनतीस, [५४०१] शैतकचौवनक्रम भासा ॥
दुगुन असैनी अन्त, श्रवनवसु सहस धनुषमुनि ।
सैनी सपरस विषै, कह्यो [९] नौजोजन श्रीमुनि ॥
[९] नौरसन [९] घ्राणनो चक्षप्राति, [४७२६३] सैंतालीसहजारागिन ।
दोसैत्रेसाठि [१२] बारहश्रवण, विषैक्षेत्रपरवानभन ।८०।

* जीव समास कथन *

* १५ मात्रा चौपाई छंद *

एकेन्द्री सुक्षम अस्थूल । [१] तीनभेद विकल त्रियमूल ॥
दोयप्रकार पचेन्द्रीकहे । [२] मनसोंरहित सहितशरदेह ।८१

* दोहा छंद *

[३] सातोंही परयाप्त तैं, अपरयाप्त तैं जान ॥
चौदह जीव समास यह, मूलभेद उरआन ।८२।

१—दो इन्द्री १ तेइन्द्री २ चौइन्द्री ३ ॥ २—असेनी १ सेनी २ ॥
३--परयाप्त ६ हैं आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ स्वासो स्वास ४ मन ५ वचन६ जिस नैयह ६ पर्याय पूरण धारण करी सो परयाप्त हैं और जिसने पूरण धारण नहीं करी सो अपरयाप्त है ॥

* १५ मात्रा चौपाई छंद *

ऐसेही चौदह गुणथान। चौदह मारगणा उरआन॥
जबलगहै इनरूपीराम। तबलौं संसारी यहनाम। ८३।

* अड़िल छंद *

यहअनादि संसार, जीवकी भूलहै॥
इसकारजमैं और, हेतुनहिं मूल है॥
तौअशुद्ध नयन्याय, जीव जगरूप है॥
द्रव्यद्रष्टि सों देष, सबै शिवभूप है। ८४।

* दोहा छंद *

भयेकर्म संयोगतैं, संसारी सब जीव।
साधनबल जीतैं करम, तवयहसिद्धसदीव। ८५।

* ७ सिद्ध जीव कथन *

---

* अड़िल छंद *

अष्ट[1] गुणातम रूप, कर्म मलमुक्त हैं॥

१—आठगुण आतम रूप धारी हैं और कर्मों के मल से छूटेहुए हैं और थिति १ उपत्ति २ बिनाश ३ इनतीन धर्मकर संयुक्त है॥

थिति उतपत्ति विनाश, धर्म संयुक्त हैं ॥
चरम देहतैं कछुक, हीनपर देश हैं ॥
लोकअग्र पुरवसैं परम परमेश हैं ।८६।

सिद्धजीवविषय उत्पादव्यय
* ध्रौव्य स्थापन *

* दोहा छंद *

अथिर अर्थ परयाय जो, हानवृद्ध मयरूप ॥
तिसमैंसिद्ध बषानिये, उतपाति नाशसरूप ।८७।
ज्ञेयात्रिविध परनातिधरै, ज्ञान तदाकृत भास ॥
योंभी शिवपदमैंसधै, थित उतपात्ति विनाश ॥८८॥
अथवा सबपरनातिनसे, भईसिद्ध पर्याय ॥
शुद्धजीव निश्चल सदा, योंतीनों ठहराय ॥ ८९॥

१- सिद्धों की अर्थकहिये द्रव्य पर्याय अथिर रूप मैं हानि वृद्धि मानी है जो [illegible]ख्यात गुण वृद्धि १ असंख्यात गुण वृद्धि २ अनंतगुण वृद्धि ३ अनंतगुण [illegible]नि ४ असंख्यात गुण हानि ५ संख्यात गुणहानि ६ ॥

२—तिथि १ उतपत्ति २ विनाश ३ ॥

❀ ८ अरूप कथन ❀

❀ अड़िल छंद ❀

बरनपांच रसपांच, गंध दोलीजिये ॥
आठ फरस गुनजोर, बीस सबकीजिये ॥
जीवविषै इनमाहिं, एकनहिं पाइये ॥
यातैं मूर्तिहीन, चिदातम गाइये ॥ ९० ॥
जगमें जीवअनादि, बंध संजोगतैं ॥
छूटो कबहीं नाहिं, कर्म फलभोगतैं ॥
असदभूत ब्योहार, पत्त जोठानयैं ॥
तोयह मूर्तिवंत, कथंचित मानयैं ॥ ९१ ॥

❀ ९ ऊर्द्ध गमन कथन ❀

❀ दोहा छंद ❀

प्रकृति बंधथितै बंधपुनि, अरु अनुभाग प्रदेश ॥

१—ज्ञानावर्णी दर्शनावर्णी आदिबर्णों की प्रकृति बंध १ कालकी सीमा थिति बंध २ अनुभाग कहिये तिव्रमंद दुख सुख अवस्था बंध ३ प्रदेश कहिये आत्मा के प्रदेश परकर्म बंध ४ ॥

चारभेद यह बंध के, कहेपास परमेश ॥ ६२ ॥
बंध बिवर्जित आत्मा, ऊरध गमन करेय ॥
एकसमय कर सरलगति, लोकअंत निवसेय ।६३।
ज्यों जल तूंबी लेपबिन, ऊपर आवैसोय ॥
त्योंऊरध गति रामयह, कर्म बंध बिनहोय ।६४।
जबलों चहुंविध बंधसों' बंधे जीव जगमाहिं।
सरल[1]बक्र तबलोंचलै, बिदशा मैं नाहिजाहिं। ९५ ।
अमृत चंद्रमुनि राजकृताकिमपि अर्थअवधार ।
जीवतत्ववर्णनलिषा, अबअजीव अधिकार। ९६ ।

* २ अजीवतत्त्व कथन *

पुद्गल धर्म अधर्मनभ, कालनाम अवधार ।
येअजीव जडतत्त्व के, भेद पंच परकार। ९७ ।
तिनमें पुद्गल दोय विध, बन्ध रूप अणुरूप ॥
यहसब में रूपी दरब, चारों और अरूप । ६८ ।
अणुरूपी पुद्गल दरब, छेदभेद नाहिं जास ॥
अगन जलादिक जोगसों, होयन कबही नास।६६।
जा अविभागी में नहीं, आदिमध्य अवसान ॥

१—विग्रह गति में. ॥

शब्द रहित पर शब्दको, कारन भूत बषान।१००।

❀ सोरठा छंद ❀

भूँजल पावक वाय, हेतु रूप सबको यही ॥
बहुविधि कारन पाय, वरणादिक पलटैं तुरत।१०१।
अवनाशी जिस माहिं, सदापंच गुण पाइये ॥
इन्द्री गोचर नाहिं, अवधि ज्ञानसों जानिये।१०२।

❀ दोहा छंद ❀

वरण पांचरस पांचमें, एक एकही होय ॥
एक गन्ध दो गन्ध में, आठ फरस में दोय।१०३।
ये परमाणू पंचगुण, सात बंध में जान ॥
वर्णादिक जे बीसहैं, तेगुण जात बषान। १०४।
आगे पुद्गल बंद्ध के, सुनोभेद षट सोय ॥

१—वरण ५ (हरा १ लाल २ काला ३ पीला ४ सुपेद ५) रस ५ (खट्टा १ मीठा २ चरचरा ३ कडुवा ४ कषायला ५) इनमेंसे १ वर्ण और १ रसहोगा दो २ गंध में (सुगंधि १ दुर्गंधि २) इन में से कोई १ गंध होगी स्पर्स ८ (गर्म १ ठंडा २ हलका ३ भारी ४ कोमल ५ कठोर ६ रूषा ७ चिकना ८) इन में से २ गरम ठंडे से १ रूखे चिकने से १ इस प्रकार ५ गुण सदीव पाये जाते हैं और अविनाशीहैं॥

२—बंध में दोगुण चिकना अथवा रूषा १ कोमल अथवा कठोर २ ये और बढ़कर ७ होजायंगे ॥

सरधा करतैं समभतैं, संशय रहैन कोय । १०५ ।

* १५ मात्रा चौपाई छंद *

प्रथम भेद अतिथूल बषान । दुतिय थूल संज्ञाउर आन॥
तृतियथूल सुच्मसर दहो । सुच्मथूल चतुर्थम गहो॥१०६।
पंचमसुच्म नाम गिनेह । षष्टम अतिसुच्म षटयेह ॥
अबइनको बरणन बिरतंत । सुनोएक मनसों मतिवंत।१०७।
षण्डषण्ड कीने जेबन्ध । फेरन मिलै आपसों सन्ध ॥
माटीईंट काठपाषान । इत्यादिक अतिथूल बषान । १०८।
छिन्नभिन्न होंफिर मिलजाहिं । ऐसेपुद्गल जे जगमाहिं ॥
घृतअरुतेल जलादिकजान । येसबथूल कहेभगवान१०९।
देखतलगै दिष्टिसों थूल । करमेंगहे जाहिं नहिं मूल ॥
धूपचांदनी आदिसमस्त । जानथूल तेसुच्म बस्तु । ११०।
आँषन सौं दीषै नाहिं जेह । चारों इन्द्री गोचर तेह ॥
विविधसपर्स शब्दरसगंध । सुच्मथूल जानतेबंध।१११।
नाना भांत वर्गना भिंड । कारमाण परमाणू पिंड ॥
कालीइन्द्री गोचरनाहिं । तेसुच्माजिन शासनमाहिं।११२।

१— कारमाण परमाण पिंडकी जोनानाभांत बरगना लियेहुये एकभिंड है और इन्द्री गोचरहै नहीं सो सूच्मह कर्म बरगना आदि सूच्म है दो आदि प्रमाण का समूह सूच्म अर्थात् सूच्म सूच्म जानो ॥

कर्म वर्गना सोही कहा। जो अतिही सुक्ष्म सरदहा ॥
दुणकआदि परमाणूबंध। सोसुक्ष्म सुक्ष्मसुनबंध। ११३।
षटप्रकार पुद्गल इहिंभाय। मुख्य गौनसब में गुणथाय॥
इनहीसो निर्मापतलोक। और न दीषै दुजो थोक। ११४।
शब्द बंधे छाया तम जान। सुक्षमे थूल भेद संठान॥
अरुउदोतआतमबहुभाय। यहदसविधिपुद्गलपर्याय।११५।

* धर्म द्रव्य कथन *

जब जड़जीव चलै सतभाय। धर्मदरब तबकरै सहाय॥
तथामीनकोजलआधार। अपनीइच्छाकरतबिहार।११६।

* अधर्म द्रव्य कथन *

योंही सहजकरैथितसोय। तब अधर्म सहकारी होय॥
जोमगमेंपंथीकोछांहि। थितिकारनहैंबलसोंनाहि। ११७।

* आकाश द्रव्य कथन *

जोसब द्रव्यन को आकाश। देयसदासो द्रव्यअकाश॥
ताकेभेददोय जिनकहे। लोकअलोक नामसरदहे। ११८।
जहिं जीवाद पदारथनास। असंख्यातपरदेश निवास॥

लोकाकाशकहावैसोय । परेअलोकअनंताहोय ॥ ११६ ॥

* काल द्रव्य कथन *

लोकप्रदेश असंषे जहाँ। एक एक कालाणू तहाँ ॥
रत्नरासि वत निबसैं सदा । द्रव्यसरूपसुथिरसर्वदा१२०।
बरतावन लक्षण गुणजास। तीनकाल जाको नहिंनास॥
समैघड़ी आदिक बहुभाय। येव्योहार कालपर्याय।१२१।
पहले कहो जीव अधिकार। और अजीव पंचपरकार ॥
येहीछहोंद्रव्य समुदाय। कालविना पंचासतिकाय। १२२।

॥ दोहा छंद ॥

वहु परदेशी जो दरब, कायवन्त सो जान ॥
तातै पचअथिकाय हैं, कायकाल विनमान । १२३ ।

॥ ३१ मात्रा सवैया छंद ॥

जीवधर्म अधर्म ये तीनों, कहेलोक प्रदेश परवान ॥
असंख्यात परदेशी राजें, नभ अनन्त परदेशी जान ॥
संखअसंख अनंत प्रदेशी, त्रिविध रूप पुद्गल पहिंचान॥
एकप्रदेश धरै कालाणू, तातें काल कायविन मान। १२४ ।

* शिष्यप्रश्न *

॥ दोहा छंद ॥

कालकाय बिनतुम कहो, एक प्रदेशी जोय ॥
पुद्गल परमाणूँ तथा. सो सकाय क्यों होय। १२५।

* गुरू उत्तर *

॥ ३१ मात्रा सवैया छंद ॥

अलख असंष दरव कालाणू, भिन्नभिन्न जगमाहिं बसाहिं॥
आपस माहिंमिलै नहिंकबहीं, तातैं कायवन्त सो नांहिं ॥
रूष सचिक्कन तैं परमाणू, ततखिन बन्धरूप होजाहिं।
योंपुद्गलको कायकल्पना, कही जिनेश्वरके मतमाहिं ।१२६।

आकाश प्रदेशरूपतथा शक्तिकथन

जितने मानएक अविभागी, परमाणू रोकैं आकास ॥
ताका नांव प्रदेश कहावै, देयसर्व दरवन को वास ॥
तहां एक कालाणू निवसैं, धर्मअधर्म प्रदेश निवास ॥
रहैंअनन्त प्रदेश जीवके, पुद्गल बंधलहैं अवकास। १२७।

* शिष्य प्रश्न *

॥ पोमावती छंद ॥

धर्मअधर्म कालअरु चेतन, चारोंदरब अरूपीगाये ॥
तातैंएक अकाश देशमें, प्रभुसबके परदेश समाये ॥
मूरतवन्त अनंते पुद्गल, तेउस नभमें क्योंकरमाये ॥
यहसंशयसम भावकहोगुर, दासहोयहम पूछनआये १२८

* गुरु उत्तर *

॥ सोरठा छंद ॥

बहु प्रदीप परकाश, यथा एक मंदिर विषै ॥
लहैंसहज अवकाश, बाधा कछु उपजै नहीं । १२९।

॥ दोहा छंद ॥

त्योंहीं नभ परदेश में, पुद्गल बंध अनेक ॥
निराबाध निवसैं सही, ज्यों अनन्त त्यों एक । १३०।

* आश्रव तत्त्व कथन *

जो कर्मन को आगमन, आश्रव कहिये सोय ॥

१—समाये ॥

ताके भेद सिद्धांत में, भावित दरवित होय । १३१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मिथ्या अविरत योग कषाय । और प्रमाद दशा दुखदाय॥
एसब चेतन को परनाम । भावाश्रव इनहीं कोनाम।१३२।
तिनही भावन के अनुसार । ढिग वरती पुद्गल तिहिबार ॥
आवैंकर्म भावकेजोग । सोदरवित आश्रवअमनोग।१३३।

* ४ बंध तत्त्व कथन *

॥ सोरठा छंद ॥

रागादिक परनाम, जिनसों चेतन बंधतहै ॥
तिन भावनको नाम, भावबंध जिनवर कहो । १३४।

॥ दोहा छंद ॥

जो चेतन परदेश पै, बैठो कर्म पुरान ॥
नए कर्म तिनसों बधैं, दरब बंधसो जान । १३५ ।

* ५ संवर तत्त्व कथन *

॥ पद्धड़ी छंद ॥

आश्रव अविरोधन हेतभाव। सोजानभाव संवरसुभाव ॥

जोदर्वितआश्रवशुद्धरूप। सोहोयदरबसंवरसरूप।१३६।
वृतपंचसमितिपाँचों सुकर्म। वरतीनगुप्ति दसभेदधर्म॥
वारहविधअनुप्रेक्षाविचार।बाईसपरीषहविजयसार।१३७।
पुनि पांचजात चारित अशेष। येसर्वभाव संवर विशेष॥
इनसैकर्मआश्रवरुकै एम। परनालीकेमुहँडाटजेम।१३८।

॥ दोहा छंद ॥

शुभउपयोगीजीवके, व्रतआदिकआचार॥
पापाश्रव अविरोध को, कारणहै निर्धार।१३९।
शुद्ध उपयोगी साधजे, तिनकैये आचार॥
पुन्नपाप दोऊन को, संवर हेत विचार।१४०।

* ६ निर्जरातत्त्वकथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद॥

तपवल कर्म तथा थितपात। जिनभावों रस देखिरजात॥
तेई भावभाव निर्जरा। संवर पूरवहै शिवंकरा।१४१।

१—सामायक १ छेदोपस्थापना २ परिहारविशुद्धि ३ सुक्षमसांपराय ४ यथाख्यात ५॥ २—मोक्ष करने वाला॥

बंधेकर्म छूटें जिसबार । दरब निर्जरा सो निर्धार ॥
इहिविधजिनशासनमेंकहेया।समकितवंतसांचसरदहेया ॥

❀ ७ मोक्षतत्त्व कथन ❀

जो अभेद रत्नत्रिय भाव । सोईभाव मोष ठहराव ॥
जीवकर्मसोंन्याराहोय । दरबमोक्षअविनाशीसोय। १४३।
येसब सात तत्व बरनए । पुन्नपाप मिल नौपद भए ॥
आश्रव तत्त्व विषे वे दोय। गर्भित जानलीजियेसोय।१४४।

॥ दोहा छंद ॥

जीव यथारथ दिष्टिसों, सरधै तत्त्व सरूप ॥
सो सम्यक दर्शन सही, महिमा जास अनूप। १४५।
नयप्रमाण निक्षेप कर, भेदाभेद विधान ॥
जो तत्त्वनको जाननो, सोई सम्यक ज्ञान। १४६।
सोसामान बिलोकये, दर्शन कहिये जोय ॥
जो विशेष कर जानये, ज्ञान कहावै सोय ।१४७।
चारित किरया रूपहै, सोपुनि दुविध पवित्त ॥
एक सकल चारित्र है, दुतिय देश चरित्त ।१४८।

॥ अड़िल छंद ॥

जहां सकल सावद्य, सर्वथा परिहरै ।
सो पूरन चारित्र, महामुनि वर धरै ॥
लेश्य त्याग जाहिं होय, देश चारित वही ।
सो ग्रहस्थ को धर्मग्रही पालै सही ।१४९।

॥ दोहा छंद ॥

तिर्थंकर निर्ग्रंथपद, धर साधो शिवपंथ ॥
सोई प्रभु उपदेशयो, मोषपंथ निर्ग्रंथ।१५०।
दसविध बाहिज ग्रंथमै, राषै तिलतु समान ॥
तौ मुनिपद कहिये नहीं, मुनि विननाहिं निर्बान १५१।
जेजन परिग्रह वंतको, मानैं मुक्ति निवास ॥
तेकबही मुकतनलहैं, भ्रमैं चतुर गतिवास ।१५२।
क्रोधादिक जबही करैं, बंधै कर्म तब आन॥
परिग्रहके संजोगसों, बंध निरंतर जान ।१५३॥
बंध अभावे मुक्ति है, यह जानै सबलोय ॥
बंध हेत वरतैं जहां, मुक्ति कहाँतै होय ।१५४।
पश्चिमभान न ऊगवै, अगननशीतलहोय ॥
यथाजात जिन लिंगविन, मोष न पावै कोय।१५५।

॥ छप्पै छंद ॥

धन्य धन्य तेसाधु, देह भवभोग विरक्ये।
धन्य धन्य तेसाधु, आप अपने रसरच्ये॥
धन्य धन्य तेसाधु, पीठ जगकी दिशकीनी।
धन्य धन्य तेसाधु, दिष्टिशिवसन्मुख दीनी॥
तज सकल आस बनबास बस, नगन देहमदपरहरे॥
ऐसेमहंतमुनिराज प्रति, हाथ जोर हम सिरधरे। १५६।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पंच महाव्रत दुद्धरधरें। सम्यक पांच समति आदरें॥
तीनगुप्तिपालेंयहकर्म। तेरहविधचारित मुनिधर्म। १५७।
यातेंसधैं मुक्ति पदषेत। गिरही धर्म सुरग सुखदेत॥
सोएकादश प्रतिमारूप। ते वरनूँ संक्षेप सरूप। १५८।

॥ १ दर्शनप्रतिमा ॥

पंच उदंवर तीनमकार। सात विषन इनको परिहार॥
दर्शनहोयप्रतिज्ञायुक्त। सोदर्शन प्रतिमा जिन उक्त १५९।

* सप्त विषन निषेध *

* ढाल *

श्रीगुरु शिक्षा सांभलो, (ज्ञानी) सात विषन परित्यागोरे॥

एजगमें पातगबड़े, (ज्ञानी)इनमारगमतलागोरे१६०
जूवा खेलन मांडये, (ज्ञानी) जोधन धर्म गमावैरे ॥
सबविषनन कोबीजहै, (ज्ञानी) देषंता दुखपावैरे । १६१ ।
रजबीरज सों नीपजे, (ज्ञानी) सोतन मास[2] कहावैरे ॥
जीवहतेबिन होयना, (ज्ञानी)नांवलियांघिन आवैरे।१६२।
सड उपजैकी डांभरी, (ज्ञानी) मद दुर्गंध निवासोरे ॥
[1]छीयासों शुचितामिटै, (ज्ञानी) पीयाबुद्ध विनासोरे।१६३।
धिक वेश्या बाजारनी, (ज्ञानी) रमती नीचन साथैरे ॥
धनकारन तनपापनी, (ज्ञानी) वेचैविषनी हाथैरे ।१६४।
अति कायरसबसोंडरे, (ज्ञानी) दीन मिरग बनचारीरे ॥
तिनपै आयुध साधते, (ज्ञानी)हाअतिकूर शिकारीरे१६५
प्रघट जगतमें देखये, (ज्ञानी) प्रानन धनते प्यारोरे ॥
जेपापी परधनहरैं, (ज्ञानी) तिनसमकौन हत्यारोरे।१६६।
परतियविषनमहाबुरो, (ज्ञानी) यामें दोष बड़ेरोरे ॥
इहिभवतनधनयशहरे, (ज्ञानी) परभवनरकबसेरोरे१६७
पांडवआदि दुखीभये, (ज्ञानी) एक विषन रतमानीरे ॥
सातनसों जेसठरचे, (ज्ञानी)तिनकीकौनकहानीरे१६८

॥ दोहा छंद ॥

पंच उदंबर फल कहे, मधुमद मास मकार ॥

१—छूने से ॥

इनके दूषण परिहरो, पहली प्रतिमा धार। १६९।

* २ व्रत प्रतिमा *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

पांचें अणूव्रत गुण व्रत तीन। शिक्षाव्रत चारों मलहीन ॥
बारह[12] व्रत धारें निर्दोष। यह दूजी[2] प्रतिमा व्रतपोष। १७०।

॥ दोहा छंद ॥

अव इन बारह[12] व्रतनको, लिखूं लेश विरतंत ॥
जिनको फल जिनमतकहो, अच्युतस्वर्ग पर्यंत।१७१।

* ढाल चाल जिन जप जिन जप जीवड़े *

जोनितमन बचकायसों, कृतआदिक[1] सौंजेहोंजी ॥
त्रसको त्रासन दीजिये, प्रथमअणू व्रतएहोंजी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं। १७२।

१—कृतआप करना १ कारित दूसरे से कराना २ अनुमोदना दूसरे को करते देख आनंदमानना ३ ॥

झूंठबचन नहिंबोलये, सबही दोष निवासो जी ॥
दूजोव्रत सोजानये, हितमित बचनसंभाखो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं । १७३ ।
भूलो बिसरो भूँपरो, जोपरधन बहु भायो जी ॥
बिनदीये लीजे नहीं, जँनम जनम दुख दायोजी ॥
बारहव्रत विध बरणाऊं । १७४ ।
व्याही बनिता होय जो, तासों कर संतोषो जी ॥
परिहरिये परकामनी, यासम औरन दोषो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं । १७५ ।
धनकन कंचन आदिदे, परिग्रह संख्या ठानो जी ॥
तिशना नागन बसकरो, यहव्रत मंत्र महानो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं । १७६ ।
अवधि दसोंदिश खेतकी, कीजेसंवर जानो जी ॥
बाहर पांव न दीजये, जबलग घटमें प्रानो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं । १७७ ।
कर मरयादा कालकी, करिये देश प्रमानो जी ॥
बनपुरसरिता आदिदे, नित्त गमनको थानो जी ॥
बारहव्रत विध वरणाऊं । १७८ ।
जहां स्वारथ नाहिं संपजे, उपजे पाप अपारो जी ॥
अनरथ दंडवही कहो, त्यागे पंच प्रकारो जी ॥

बारहव्रत विध वरणऊं । १७६ ।
सामायक विध आदरो, थलएकांत विचारो जी ॥
उर धर ये शुभ भावना, आरत रुद्र निवारो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८० ।
पोषह व्रत आराधये, चारों परब मझारो जी ॥
चहुँविध भोजन परिहरो, घरआरंभ सब छारोजी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८१ ।
भोजन पान तँबोल त्रिय, खटभूषण बहुएमो जी ॥
भोगयथा उपभोग है, कब इनको पम नेमो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८२ ।
उत्तम अतिथिन कोसदा, दीजे चोविध दानो जी ॥
मान बड़ाई त्याग कै, हिरदै सरधा आनो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८३ ।
अन्त समै संलेखणा, कीजे शक्ति संभालो जी ॥
जासोंव्रत संजम सबै, येफल दोहि विशालो जी ॥
बारहव्रत विध वरणऊं । १८४ ।

* ३ सामायक प्रतिमा *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तीनकाल सामायक करै । पांचो अतीचार परिहरै ॥

शत्रुमित्र जानै इकसार । सोनर तीजी प्रतिमाधार ।१८५।

* ४ पोषह प्रतिमा *

परब चतुष्टय तज आरंभ । पोषह व्रत मांडे मनथंभ ॥
सोलै[१६]हपहरधरैशुभ ध्यान । सोयहचौथी प्रतिमावान।१८६।

* ५ सचित्त त्याग प्रतिमा *

त्यागै हरी जाति जावंत । दल फल कंद बीजबहु भंत ॥
प्राशुकजल पीवैतजराग । सोसचित्त त्यागीबड़भाग।१८७।

* ६ दिवा मैथुन त्याग प्रतिमा *

जोदिन में मैथुन परिहरै । मनबच कायशील दिढ़धरै ॥
षष्टमप्रातिमाधारीधीर । यहजघन्य श्रावक वरबीर।१८८।

* ७ ब्रह्मचर्य्य ब्रत प्रतिमा *

जोसब नार सर्बथा तजै । नौविधि शीलसदा व्रत भजै ॥
कामकथा रतकबहिनहोय।सप्तमप्रतिमा धारीसोय।१८९।

१—त्रिय अस्थानमें बसना १ प्रेम रुचि से देखना २ प्रीतिके मधुवचन बोलना ३ शृंगारकरना ४ त्रियसेजपर सोना ५ पूर्बभवके रस चितवन ६ पुष्टअहार भोजनकरना ७ मन्मथ कथा कहना ८ पेटभर भोजनकरना ६ ॥

* ८ आरंभ त्याग प्रतिमा *

जिनेसब तजे वरन व्योहार । खेती लेन देन ए भार ॥
छेदनपालन करैनरंच । तेपुनि मंदिर नाज न संच।१९०।
निरारंभ बरतै मदछार । जीव दया हितकरै विचार ॥
अहनिश हिंसासोंभयभीत। अष्टमप्रतिमा वंतपुनीत।१९१

* ९ परिग्रह त्याग प्रतिमा *

जोसमस्त परिग्रह परित्याग।उचितबसन राखैबिनराग ॥
सोनोमीप्रतिमा निर्ग्रन्थ। यहमध्यम श्रावक कोपंथ।१९२।

* १० अनुमति त्याग प्रतिमा *

जोग्रहस्थ कारज अघमूल । तिनको अनुमति देयनभूल ॥
भोजनसमें बुलायो जाय। सोदसमीप्रातिमा सुखदाय।१९३।

* ११ उद्दिष्ट प्रतिमा *

॥ दोहा छंद ॥

अव एकादशमी सुनो, उत्तम प्रतिमा सोय ॥

१—जिसने सर्व वरण क्षत्री आदि के विवहार तजदिये ॥

ताके भेद सिधान्त में, क्षुल्लक ऐलक दोय। १९४।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जोगुरु निकट जाय व्रतगहै। घरतज मठ मंडप में रहै॥
एकवसन तनपीछीसाथ। कटिकोपीन कमंडलहाथ। १९५।
भिक्षा भाजन राखैपास। चारों परब करै उपवास॥
लेउदंड भोजन निर्दोष। लाभअलाभ रागनारोष। १९६।
उचित काल उतरावै केश। डाढ़ीमोछ न राखै लेश॥
तपविधानआगम अभ्यास। शक्तिसमानकैरगुरुपास। १९७।
यह क्षुल्लक श्रावककी रीत। दूजो ऐलक अधिक पुनीत॥
जाकेएक कमरकोपीन। हाथकमंडल पीछीलीन। १९८।
विधिसै खडा लेहि आहार। पान पात्र आगम अनुसार॥
करैकेश लुंचन अतिधीर। शीतघाम सबसहै शरीर। १९९।

॥ सोरठा छंद ॥

पान पात्र आहार, करै जलांजुलि जोड़मुनि॥
खड़ो रहै तिहिबार, भक्तिरहित भोजन तजै। २००।

॥ दोहा छंद ॥

एक हाथ पै ग्रासधर, एक हाथ से लेय॥

श्रावक के घर आयके, ऐलक अशन करेय । २०१ ।
यहग्यारह प्रतिमा कथन, लिख्योंसिधांत निहार ॥
औरप्रश्न बाकीरहे, अबतिनको अधिकार । २०२ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

जे जगमें पापी परधान । सात विषन सेवक अज्ञान ॥
रुद्रध्यान धारैं अघमई । अतिही कूर कर्म निर्दई ।२०३।
झूठबचन बोलैं सतछोर । परधन पर बनिता के चोर ॥
बहुआरंभी बहुपरिग्रही । मिथ्यामतको पोषैंसही । २०४ ।
चंड कषाई अधिक सराग । जिन प्रतिमा निंदक निर्भाग ॥
मुनिवरनिंद पापसिरलेहिं । जैनधर्मको दूषणदेहिं । २०५ ।
नीच देव सेवा रस रचे । धरैं कृशन लेश्या मद मचे ॥
इत्यादिक करनी रतरहैं । ऐसेनीचनरक गतिलहैं । २०६ ।

सातों नरक से जीवनिकल कौनगति

* धारण करे हैं *

॥ छप्पैछंद ॥

सप्तम सों पशु होय, देश संयम न संभालैं ॥

छेठनरक सो मनुष, होय व्रत नाहीं पालैं ॥
पंचम सों व्रत धरैं, मोषगति को नहिंसाधैं ॥
चौथे सों शिव जांय, नहीं तीरथ पद लाधैं ॥
सबशुभ्रबाससों आयकै, वासुदेव नहिंभवधरैं ॥
प्रतिबासदेव बलदेवपुनि, चक्रवर्तनहिं अवतरैं।२०७।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मायाचारी जे दुठ जीव। पर पंचन में निपुन अतीव ॥
झूठलिखैंअरुचुगलीखाहिं।झूठीसाषभरत भयनाहिं।२०८
शीलन पालैं मोहउदोत। लेश्या जिनकै नील कपोत ॥
आरतध्यानी धर्मविहीन।पशुपर्यायलहैं अकुलीन।२०९।
आरत रुद्र रहित निरोग। धर्म शुकल ध्यानी बड़भाग ॥
जिनसेवकपालैं[1] व्रतशील। कसैंकरण मदमातेकील।२१०।
जिनप्रतिमा जिन मंदिर ठवैं। सातखेत[2] उत्तम धनबवैं ॥
सदाचारसुन श्रावकहोय। यथाजोग पावैंसुर लोय।२११।
सहज सरल परनामी जीव। भद्रभाव उर धरैं सदीव ॥
मंदमोह जिनके दखयें। मंद कषाय प्रकृत पेषये। २१२।

१—मदमाती इन्द्रयों को कीलकर अर्थात् ठोककर कसैं ॥

२—मुनिको १ आर्जिका २ श्रावक ३ इनतीनों कोदानदेना जिन मंदिर बनवाना ४ जिन प्रतिष्टा कराना ५ तीर्थयात्रा करना ६ शास्त्रदान देना ७ ॥

अलपारंभ अल्प धनचहैं। उरकपोत लेश्या निबेहैं॥
पुण्यपापजहिं बरतैंदोय। मिश्रभावसों मानुषहोय। २१३।
परके दोष सुनैमनलाय। विकथा बानी बहुत सुहाय॥
कुकविकाव्य सुनहरषेंजोय। तेबहरेउपजैं परलोय। २१४।
पढ़ें सुछंद विवेक न करें। मृषा पाठ विकथा विस्तरें॥
परनिंदाभावें बहुभाय। निजपरशंसा करें बढ़ाय। २१५।
मलमुत्रादिक भोजन काल। मौनछार[1] बोलें बाचाल॥
झूठकहतकछु शंकैनाहिं। तेगूँगेजनमें जगमाहिं। २१६।
परतिय मुख देखें करनेह। निरखैंसब योनादिक देह॥
बधबंधन याचैंधर राग। तेमरआंधे होहिंअभाग। २१७।
जेनर करें कुतीरथ गौन। बहुत बोभलादैं विन मौन॥
वृथाविहारी देखनचलैं। होयपंगुते पातक फलैं। २१८।
नीतबनज कर लच्मी लेहिं। ओछालेहिंन अधिकादेहिं॥
अलपवित्त दानादिककरें। तेनरदिरब धनीअवतरें।२१६।
जेधन पाय धरेंअभिमान। समरथ होकर देहिं न दान॥
धनकारन छलछिद्रकराहि। बढ़तपरिग्रह धापैंनाहिं।२२०।
लच्मीवन्त कृपन जनजेह। परभो होहिं दरिद्री तेह॥
मंदकषाई सरलसुभाव। अहनिश वरतैंपूजाभाव। २२१।
निज बनिता संतोषी सदा। मंदराग दीखैं सरबदा॥

१—मौनथान अर्थ अर्थात् प्रमान में॥

दुराचारजिनके नहिंहोय। पुरुषवेद पावैं सुरलोय। २२२।
जे अतिकामी कुटिल अतीव। महा सरागी मोहतजीव॥
परबनितारत शोकसँजुक्त। तेकामिनतनलहैंनिरुक्त।२२३।
रागअन्ध अतिजे जगमाहिं। कामभोग सोंतृपते नाहिं॥
वेश्यादासी रत्तकुशील। तेनरलहैं नपुंसक डील। २२४।
मनबच काय महानिर्दई। बध बंधन ठानै अघमई॥
परकोपीड़ा बहुबिधकरें। तेजियअल्प आयुधरमरें।२२५।
कृपावन्त कोमल परणाम। देखबिचार करें सब काम॥
जीवदयामें तत्परसदा। परकोपीड़ा देहँनकदा। २२६।
सबही जीवन सों हितभाव। धरैं पुरुषते दीरघ आव॥
जेजिनयज्ञपरायणनित्त। पात्रदानरतशीलपवित्त।२२७।
इन्द्री जीत हिये संतोष। तेनर भोगलहैं व्रत पोष॥
पूजादानविमुखमदलीन। इन्द्रीलुब्ध दयागुणहीन।२२८।
दुराचार दुरध्यानी लोग। इनको प्रापत होहिन भोग॥
समैविचारि पढ़ै जिनग्रंथ। पढ़ैपढ़ावै जेसुभपंथ।२२९।
हितसों धर्म देशना कहैं। ते परभो पण्डित पदलहैं॥
ज्ञानगरब हिरदैधरलेहिं। जिनसिधांतकोदूषनदेहिं।२३०।
इच्छाचारी पढैं अशुद्ध। ज्ञानबिना बराजित जड़ बुद्ध॥
पढ़नेजोग पढ़ावैनाहिं। ऐसे मर मूरख उपजाहिं। २३१।
अनाचार रत आरंभवान। परको पीड़न करैं अयान॥

पापकर्मरत धर्म न गहैं। तेपरभव में रोगी रहैं। २३२।
परदुख देखहरष उरधरैं। परवनिता परधन जो हरैं॥
नरपशुजीव विछोहैजोय। सोपुत्रादि वियोगी होय। २३३।
नीचकर्म रतकरुणा नाहिं। हाथपांव छेदैं छिनमाहिं॥
जेपरको उपजावैं पीर। तेनरपावैं विकल शरीर। २३४।
जो मिथ्या मत मदरा पिये। पापसूत्र की शरधा हिये॥
धर्मनिमित्त जीवबधकरैं। महाकषाय कलुषताधरैं। २३५।
नास्तिक मतीपाप मगगहैं। ते अनन्त संसारी रहैं॥
रतनत्रय धारीमुनिराज। आगमध्यानी धर्मजहाज। २३६।
इच्छा रहित घोरतप करैं। कर्मनाश करभव जल तिरैं॥
उत्तमदेवन में शिरनाय। पूजेंपरम साधके पांय। २३७।
साधरमी बतसल मुनिप्रीत। उत्तम गोतबंधै इहिरीत॥
जेजिनयतीजिनागमजान। नमेंनहींशठकरअभिमान।२३८।
मानैंनीच देव गुरुधर्म। ये सब नीच गोत के कर्म॥
जिनकेहिये रमैं बैराग। धारैंसंजम तृश्ना त्याग। २३९।
अतिनिर्मल चारित्त भंडार। ज्ञान ध्यान तत्पर अविकार॥
ख्यातिलाभ पूजानहिंचहैं। तेअहामिंद संपदागहैं। २४०।
पंच करण बैरी बसआन। चारित पालैं अति अमलान॥
दुद्धरतपकर सोखैंकाय। चक्रीहोंय देवपदपाय। २४१।
जेसम्यक दिष्टी गुणग्रही। सोलह कारन भावैं सही॥

तेतिर्थंकर त्रिभुवनधनी। होहितीन जग चूड़ामनी। २४२।

॥ दोहा छंद ॥

इहि विधि पूछन हारको, समा धान जिनराज॥
कीनो गणधर देवप्रति, जगतजीव हितकाज। २४३।
बानी सुन बारह सभा, भयो सबन आनन्द ॥
जैसे सूरज के उदै, बिकसै बारिज वृन्द। २४४।
बचन किरण सों मोहतम, मिटोमहा दुखदाय॥
बैरागे जगजीव बहु, काल लवाधि बलपाय। २४५।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

केईमुक्ति जोग बड़भाग। भए दिगंबर परिग्रह त्याग॥
किनहीश्रावक व्रतआदरे। पशुपर्याय अणू व्रतधरे। २४६।
केई नार अर्जिका भई। भर्ता के संग बनको गई॥
केईनरपशु देवीदेव। सम्यकरत्न लह्यो तहांएव। २४७।
केईशक्ति हीन संसार। व्रत्त भावना करी सुखकार॥
पूजादान भावपरनरा। यथाजोग सबसेवक भरा। २४८।

॥ दोहा छंद ॥

कमठ जीव सुरजोतषी, कर बचनामृत पान॥

बमों बैर मिथ्वात विष, नमो चरण जुग आन ।२४६।
सम्यक दरशन आदरो, मुक्ति तरोवर मूल ॥
शंकादिक मलपरिहरे, गई जनमकी शूल । २५० ।
तहां सातसै तापसी, करत कष्ट अज्ञान ॥
देख जिनेश्वर संपदा, जग्यो यथारथ ज्ञान । २५१ ।
दई तीन परदच्छणा, प्रणमें पारस देव ॥
स्वामि चरण संयम धरो, निंदी पूरब टेव । २५२ ।
धन्य जिनेश्वर के वचन, महा मंत्र दुख हंत ॥
मिथ्यामत विषधर डसे, निर्विष होहिं तुरंत । २५३ ।
कहां कमठ से पातकी, पायो दर्शन सार ॥
कहांपाप तप तापसी, धरोमहा व्रत धार । २५४ ।
जिनके वचन जहाज चढ़, उतरे भवजलपार ॥
जेप्रत्यच्छ आएशरन, क्यों न होय उद्धार । २५५ ।
अबश्री गणधर देवतहँ, चार ज्ञान प्रवीन ॥
जिस समुद्र तैं अर्थजल, मतभाजन भरलीन । २५६ ।
नाम स्वयंभू दया निध, विविध रिद्धिगुणखेत ॥
द्वादशांग रचना करी, जगत जीव हितहेत ।२५७।
परमागम अमृत जलधि, अवगाहे मुनिराय ॥
जन्म जरामृत दाहहर, होंयसुखी शिवपाय । २५८ ।

* द्वादशांगपद प्रमाण कथन *

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

प्रथम एकसोबारह कोड़ । लाख तिरेणावें ऊपर जोड़ ॥
बावननसहस पांचपदसही । द्वादशांग कीपरमितकही ।२५९ ।

* एकपद श्लोक संख्या *

॥ पद्धड़ी छंद ॥

इक्यावन कोड़ी आठलाख । चौरासी सहसश्लोकभाख ॥
छस्सैसाढ़े इक्कीस जान । यहएक महापदको प्रमान । २६० ।

॥ दोहा छंद ॥

इहिं विध सभा समूहसब, निवसै आनन्दरूप ॥
मानोअमृत नीरसों, सिंचत देह अनूप । २६१ ।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

तबसुरेश उठ विनती करी । हाथजोर सिर अंजुलिधरी ॥

१--५१०८८४६२१ ½ ॥

भोजगनायक जगआधार। तीनभवन जनतारनहार।२६२
यहविहार औसर भगवान। करये देव दया उरआन॥
भविकजीव खेतीकुमलाय। मिथ्यातपसों सूकीजाय।२६३।
भोपरमेश अनुग्रह करो। बानी वरषा सों तप हरो॥
मोषमहापुरके परधान। तुमबिनजारे दयानिधान।२६४।
प्रभुसहाय भविसुख पदलेहिं। आवागमन जलांजलिदेहिं
इहिविधिइन्द्रप्रार्थनाकरी॥सहसनामकरथुतिविस्तरी २६५
भयोअनिच्छया गमन जिनेश। भविजीवन के भागविशेश॥
सकलसुरासुरजयजयाकियो॥जिनविहारअमृतरसपियो२६६।
गमनसमें और विधभई। समोसरन रचना षिरगई॥
चलेसंगसुरचतुरनिकाय।चहुंविधिसकलचलेसुरराय२६७
सुरदुंदुभि बाजें सुखकार। जिन मंगल गावें सुरनार॥
हाथधुजाजुत देवकुमार। चलेजाहिंनभमें छविसार। २६८।
चहुंदिश चार चारसौ कोष। होयसुभिच्च सदानिर्दोष॥
नेभविहारजिनवरकेहोय। जीवघाततहांकरेनकोय। २६९।
सब उपसर्ग रहित भगवंत। निरआहार आव परयन्त॥
चतुरानन देखैसंसार। सब विद्यापति परम उदार।२७०।
प्रभुके तनकीपरे नछाहिं। पलक पलकसों लागे नाहिं॥
नेषअरुकेशबढ़ेंनाहिंजास।येदसकेवल अतिशयभास२७१।
भाषासकल अर्ध मागधी। षिरे सकल संशय हरसधी॥

नरपशुजाति विरोधीजीव । सबउरमैत्री धरैंसदीव । २७२ ।
नानाजाति बिरछ दुखदलैं । सबरितु के फलफूलैं फलैं ॥
प्रभुसंचारि भूमिमणिमई । दर्पनवत आगमवरनई । २७३ ।
सुरभिपवन पीछै अनुसरै । बायुकुमार जनित सुखकरै ॥
सुरनरपशू शुभागतिजेह।परमानन्द सहित सबतेह।२७४।
मारुत सुरयोजनमित मही । करैंधूल तृण वर्जित सही ॥
मेघकुमारकरैं मनलाय । गंधोदकवरषा सुखदाय । २७५ ।
चरन कमल जिनधारैंजहां । कंचन कमल रचैंसुर तहां ॥
सातकमलते आगैंठान । पीछेसात एकमध जान । २७६ ।
योंपंकज की पंद्रह पांति । सबादोइसै सब इहिभांति ॥
शुकलध्यानउपजैंबहुभाय । निर्मलदिशनिर्मलनभथाय२७७
मुदितबुलावैं देव समाज । भविजनकों जिनपूजनकाज ॥
धर्मचक्र आगेसंचरै । सूरज मण्डलकी छविहरै । २७८ ।
मंगलदर्ब आठ झलकाहिं । यथाजोग सुरलीये जाहिं ॥
येचौदह देवनकृतजान । बरआतिसै मंडितभगवान।२७९।
करैंबिहार परमसुख होत । भविजीवन के भाग उदोत ॥
स्वर्गमोषमारगप्रभुसार।प्रगटकियोभ्रमतिमरनिवार२८०।
कहीं कुलिंगी दीखैनाहिं । भान उदैज्यों चोर पलाहिं ॥
सबनिजनिज बांछाअनुसार।पूरणआसभयेतनधार।२८१।
काशी कौशलपुर पंचाल । मरहट मारूदेश बिशाल ॥

मगधअवंती मालवठाम। अंगबंग इत्यादिकनाम। २८२।
कीनौ आरजखंड बिहार। मेटोजग मिथ्या अँधियार ॥
अबसबकीगणनागणसुनों।यथापुराणकथितबिधमुनो।२८३।
प्रथम स्वयम्भू प्रमुखप्रधान। दसगणधर सबांगम जान॥
पूरबधारी परमउदास। सर्वतीन सै अरु पंचास। २८४।
शिष्य मुनीश्वर कहैपुरान। दसहजार नौसै परवान ॥
अवधिवन्त चौदहसैसार। केवल ज्ञानी एकहजार।२८५।
विविध बिक्रिया रिद्धबलिष्ट। एकसहस जानो उतकृष्ट ॥
मनपरजैज्ञानी गुनवन्त। सातशतक पंचासमहन्त।२८६।
छसैबाद बिजई मुनिराज। सबमुनि सोलसहस समाज ॥
सहसछबीस अर्जिकागनी।एकलाखश्रावकव्रतधनी।२८७।
तीनलाख श्रावकनी जान। वरनी संख्यामूल पुरान ॥
देवीदेव असंषअपार। पशुगणसंख्याते निरधार। २८८।
इहविध बारह सभासमेत। रतनत्रय मारग विध देत ॥
बिहरमान दरसावतबाट। सत्तरबरष भयेकछुघाट। २८९
सम्मेदाचल शिषर जिनेश। आयेश्री पारस परमेश ॥
एकमासजिन योगनिरोध।मनबचकाय कृपासबरोध।२९०।
सूक्षमकाय योगथितिठान।त्रितियशुकलसंजुत तिहिंठान॥
तजसयोग थानकस्वयमेव। आएफिरअयोगपददेव।२९१
पंचलघुअक्षर है थितिजहां। चतुरथ शुकल ध्यानवल तहां॥

दोयचरम समयेजिनभनी । प्रकृतिबहत्तर तेरहहनी२९२।
इहविध कर्मजीत भगवान । एकसमै पहुँचे निर्बान ॥
औछैत्तीसमुनीश्वरसाथ।लोकशिखर निवसेजिननाथ२९३
सावन शुदिसातें शुभबार। विमल बिसाखा नखत मंझार॥
तजसंसार मोषमेंगए । परमासिद्ध परमातमभए । २९४ ।
पूर्व चरम देह तें लेश । भए हीन आतम परदेश ॥
अष्टगुनातममयब्योहार । निहचैगुणअनंतभंडार।२९५।
सादिअनंत दशापरनरा । सिद्धभाव बसु गुनजुतथरा ॥
परमसुषालयबासोलियो।आवागमनजलांजलिदियो२९६

॥ दोहा छंद ॥

पंच कल्यानक पायसुख, जगत जीव उद्धार ॥
भएपूज परमातमा, जयजय पास कुमार ।२९७।
जिनकेसुखको ज्ञानकी, नहीं उपमा जगमाहिं ॥
जोतिरूप सुषपिंडथिरि, इंद्रीगोचर नाहिं ।२९८।
अब तिनको आकार कछु, एकदेश अवधार ॥
लिखोंएक दिष्टांतकरि, जिनशासन अनुसार।२९९।

॥ १५ मात्रा चौपाई छंद ॥

मोममई इकपुतला ठान। नखशिख सम्म चतुर संठान ॥

१—जिनके आत्म प्रदेश चरम शरीर से कुछकम भये ॥

सबतन सुंदर पुरुषाकार। नराकारइसहीविधसार। ३०० ।
माटी सों इम लेपहु सोय। जैसेत्वचा देह पर होय॥
कहींअंग खालीनहिंरहै। सबउपचार कलपनायहै। ३०१।
फुनिसो लीजै अगनि तपाय। सांचारहै मोमगल जाय॥
अबताभीतर करोबिचार। कहारह्योबुध ताहिनिहार। ३०२।
अन्तर मूसपोल है जहां। पुरषाकार रह्यो नभ तहां॥
याहीअंबर के उनहार। ब्रह्मसरूप जाननिरधार। ३०३।
यहआकाश सुन्य जड़रूप। वह पूरन चेतन चिद्रूप॥
यहीफेरहै यावामाहिं। आकृति मैं कछुअंतर नाहिं। ३०४।
याविध परम ब्रह्मको रूप। निराकार साकार सरूप॥
यहदृष्टांत हियेनिजधरो। भविजियअनुभौ गोचरकरो ३०५

॥ दोहा छंद ॥

बसैं सिद्धशिव खेतमें, ज्यों दर्पन में छाहिं॥
ज्ञाननैंन सों प्रगटहै, चर्म नैंनसों नाहिं। ३०६।

॥ १५ मात्रा चौपाईछंद ॥

तब इंद्रादिक सुर समुदाय। मोषगए जाने जिनराय॥
श्रीनिर्वाणकल्याणककाज। आएनिजानिजवाहनसाज ३०७
परमपवित्त जानजिन देह। मणिशिवका परथापी तेह॥

करीमहापूजा तिहिंबार । लियेअगर चंदनघनसार ।३०८।
और सुगंधदरब शुचिलाय । नमेंसुरासुर शीस नमाय ॥
अगनिकुमार इंद्रतैंताम । मुकटानल प्रगटीअभिराम३०९
तताषिनभस्मभई जिनकाय । परम सुगंध दंसौ दिसथाय॥
सोतनभस्म सुरासुरलई । कंठहियेकर मस्तगठई । ३१० ।
भक्तिभरे सुरचतुर निकाय । इहविध महा पुन्य उपजाय ॥
करआनंद निरतबहुभेव । निजनिजथान गयेसबदेव ।३११।

॥ दोहा छंद ॥

पंच कल्यानक पूजप्रभु, शिवशिरिकंत जिनेश ॥
सबजग सुख संपतिकरो. श्रीपारस परमेश।३१२।

श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके भवोंका
* सामान रूप कथन *

॥ पद्धड़ी छंद ॥

पहलेभव वामन कुल पवित्त । मरुभूत उपन्नो सरलचित्त ॥
दूजेबनहस्तीवज्रघोष ।जिनपालेबारहव्रतअदोष । ३१३ ।
तीजेभवद्वादसस्वर्गबास । सहस्रारनामसवसुख निबास ॥

चौथेभवविद्याधरकुमार । लघुबैसलियो चारित्रभार।३१४।
पंचमभवअच्युतसुरगथान।बाईसजलधिजहिंथितप्रमान॥
छट्ठेभवमैचक्रीनरेश । जिनसाधेसहसबत्तीस देश ।३१५।
सातवेजनम अहमिंद्रहोय । सुषकीनेचिरउपमानकोय ॥
आठमभौश्रीआनंदराय ।तजराजरिद्धिबनवसेजाय ३१६।
सोलह कारन भाएमुनिंद्र । फुनिभए बारमै स्वर्गइंद्र ॥
इहविधउत्तमनौजनमपाय।वामाजननीउरबसेआय ।३१७।
जेगरभजनमतपज्ञानकाल । निर्बाणपूज कीरतविशाल ॥
सुरनरमुनिजाकीकरैंसेव । सोजयोपासदेवाधिदेव । ३१८।

॥ दोहाछंद ॥

नाम लेत पातिक भजै, सुमरतसंकट जाहिं ॥
तेईसम अवतारमुझ, बसो सदा हिय माहिं । ३१९

* सामान्यरूप कथन *

॥ छप्पै छंद ॥

कमठ जीव तनछोर, दुतिय कुरकट अहिजायो ।
नरक पंचमें जाय, आय अजगर तन पायो ॥

धूम प्रभा में उपज, भील अतिभयो भयानक ।
चरम नरक पुनिसिंघ, फेर पँचमभूं थानक ॥
पशुजौनि भुंजमहिपालनृपं, देव जोतिषीअवतस्यो ।
इहविधअनेकभवदुखभरे, बैरभावविषतरुफलो।३२०।

॥ दोहा छंद ॥

छिमाभावफलपासजिन, कमठबैरफलजान ॥
दोनोंदिशाविलोकके, जोहित सो उर आन । ३२१ ।

॥ सोरठा छंद ॥

जीव जाति जावंत, सब सौं मैत्री भावकर ॥
याको यह सिद्धंत, बैर विरोध न कीजिये । ३२२ ।

* उक्तंच संस्कृत वाला छंद *

सत्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं । क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं ॥
माध्यस्थभावंविपरीतवृत्तौ।सदागमात्माविधधातुदेवः३२३

* भाषा टीका *

सच्चे शास्त्र ज्ञाता पुरुष अर्थात् महान पुरुष प्रति जीव मात्रों में मित्रता भाव और गुणवान पुरुषों में हर्षभाव और दुखिया जीवों में दयाभाव विपरीत वृत्तिवालों में माध्यस्थ भाव अर्थात् भला बुरा रहित भाव रखते हैं ॥

॥ पोमावती छंद ॥

जो भगवान बखान करीधुनि, सोगुरु गौतम नैं उरआनी॥
तापर आइ ठईरचना कछु, द्वादश अंग सुधारस बानी ।
ताअनुसार आचारज संघ, सुधीबलसों बहुकावबखानी॥
योंजिनग्रंथ यथारथहै, अयथारथहैं सबऔरकहानी।३२४।

॥ दोहा छंद ॥

जितने जैन सिद्धांत जग, तेसब सत्य सरूप ॥
धर्म भावना हेतसब, हितमित शिक्षा रूप । ३२५ ।
कल्पित कथा सुहावनी, सुनते कौनअरत्थ ॥
लाषदाम किसकाम के, लखनालिखे अकत्थ ।३२६।

॥ सोरठा छंद ॥

सुन श्रीपास पुरान, जान शुभा शुभ कर्मफल ॥
सुहितहेत उरआन, जगत जीव उद्यमकरो । ३२७।

॥ दोहा छंद ॥

प्रभुचरितामिस किमपियह, कीनोप्रभुगुनगान॥
श्रीपारस परमेश को, पूरनभयो पुरान । ३२८ ।

पूरब चरित बिलोकि कै, भूधर बुद्धि समान ॥
भाषाबंध प्रबंध यह, कियो आगरे थान। ३२९।

* कविलघुता *

॥ छप्पैछंद ॥

अमरकोष नहि पढ्यो, मैंन कहि पिंगल पिष्यो ॥
काव्य कंठनाहिं करी, सारसुत सो नहिं सिष्यो।
अछर संधि समास, ग्यान वार्जित बुद्ध हीनी ॥
धर्म भावना हेत, किमपि भाषायह कीनी।
जोअर्थछंद अनमिल कही, सोबुध फेर सवांरियो ॥
सामान्यबुद्धिकविकीनिरखि, छिमाभावउरधारियो ३३०

॥ दोहा छंद ॥

जिनशासन अनुसारसब, कथनकियोअवसान॥
निजकपोल कल्पितकही, मतसमझो मतिवान।३३१
छयउपशम कीओछसौं, कैप्रमाद बस कोय ॥
इहबिधि भूल्योंपाठ मैं, फेर सवांरो सोय। ३३२।
पंचबरष कछु सरससे, लागे करत न बेर ॥

बुधथोरी थिरताअलप, तातैं लगी अवेर। ३३३।
सुलभकाज गरुवो गनै, अलपबुद्धि की रीत ॥
ज्योंकीड़ीकण लेचलै, किधौंचली गढ़जीत। ३३४।
विघनहरननिरभयकरन, अरुनबरनअभिराम॥
पासचरन संकटहरन, नमोनमो गुनधाम। ३३५।

॥ छप्पैछंद ॥

नमोदेव अरहन्त, सकल तत्वारथ भाशी ॥
नमो सिद्ध भगवान, ज्ञान मूरति अविनाशी।
नमोसाधु निर्ग्रन्थ, दुविध परिग्रह परित्यागी ॥
जथा जात जिन लिंग, धार बन बसे विरागी।
बदोंजिनेश भाषित धरम, देवसर्व सुख सम्पदा ॥
येसारचार तिहुँलोक में, करोछेम मंगल सदा। ३३६।

॥ दोहा छंद ॥

संवत् सतरेंहैं शतक मैं, औरनैंवासी लीय ॥
सुदि असाढ़ तिथिपंचमी, ग्रंथसमापत कीय।३३७।

श्री पार्श्व पुराण भाषा भगवत निर्वाण गमन वर्णन नाम नवम अधिकार संपूर्णम्॥

इति श्री पार्श्वपुराण भाषा कविबर
भूधरदास रचित समाप्तं॥

* अन्तिम सूचना *

कोड़ा कोड़ि धन्यबाद है उस परम पवित्र विज्ञान रूप निर्मलबाणी को जिसकी अनुकम्पा दृष्ट सहायता से श्री पार्श्वपुराण भाषा छंद बद्ध कविबर भूधरदास जी रचित मेरे बिचार पूर्वक शुद्धता के सुन्दर बसन धारण कर छंद नामावली यंत्र आदि नाना प्रकार के अनुपम विचित्र भूषण से भूषित हो जैन प्रेस लखनऊ में लाला कन्हैया लाल भगवान दास जी जैन यंत्रअधिकारी के प्रबन्ध से अति उत्तम गरिष्ट चिकने कागज़ पर बम्बई मोटे टाइप (अक्षर) में छपकर अपनी अन्तर वाह्य शोभा कारण धर्म अभिलाषी पुरुषों को प्रियहो जगत प्रसिद्ध हुआ ॥

* ग्रन्थ मुद्रित काल *

॥ दोहा छंद ॥

१९५४
उन्नीससौ चव्वन अधिक, विक्रम सम्बतजान ॥
जैनप्रेस लखनऊ में, मुद्रित भयो पुरान ॥

॥ इति शुभम् ॥

कविवर भूधर दासजी रचित हिंदीभाषा पार्श्वपुराण शब्दार्थ कोष
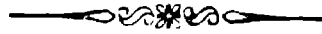
अ

अ—अव्य०-जब किसी शब्द के आदि में आती है निषेध अर्थ में वर्तै है यथा अतुल तुल्य रहित ॥
अंक-गोद, चिन्ह ॥
अंकुश-हाथी हांकने का औजार ॥
अंकूर—अखुआ, बीज जो बोनेपर फूटता है
अंतरद्वीप-बड़े द्वीप में गरभित छोटाद्वीप ॥
अंतरमालका-छाती के हाड़ों का पिंजर ॥
अंतरंग—आत्मीय, अपना, अंदर ॥
अंतराय—८ कर्म में से १ कर्म का नाम ॥
अंतरीक्ष—अधर, निराधार, आकाश ॥
अंतेवर—रनवास, बेगमात ॥
अंबुज—कमल ॥
अंश—भाग, हिस्सा, टुकड़ा ॥
अकस्मात—चानचक ॥ अचानक
अकुलीन—कुलहीन ॥
अगम—अगम्य०—जिसमें न जासकै ॥
अगर-वृक्ष विशेष० जिसकी लकड़ी जलाने से सुगंधि देती है ॥
अगूचार—अगवानी ॥
अगाध—गहरा, अथाह ॥
अघ—पाप ॥
अचर—१ इंद्रीजीव, चरजीव का विरोधी शब्द ॥
अचल—पहाड़, पर्वत ॥
अचेतन—निर्जीव, जड़ ॥
अच्छन, अक्षन } नेत्र, आँख, इंद्री ॥
अच्युत—सोलवें स्वर्ग का नाम ॥
अजर—जराका विरोधी शब्द, बुढ़ापा रहित ॥
अजितंजै—जो न जीताजाय ॥
अजोध—जिस से कोई न लड़सकै ॥
अटवी—वन, जंगल ॥
अणिमा—८ ऋद्धि में से १ ऋद्धि का नाम ॥
अणुव्रत—छोटेव्रत,—जिनको श्रावक पालते हैं ॥
अणुरूप—अणुवत सूक्ष्म ॥
अतिशय—तिर्थंकरों की अद्भुत कृत ॥
अतीचार—भाँगा, व्रत का मलीन करने वाला काम ॥
अतीव—अत्यंत, बहुत ॥
अथिति—अभ्यागत, आया हुवा, महमान
अद्भुत—अजीब ॥
अधम—नीच पुरुष, पापी पुरुष ॥
अधर—होठ, लब, निराधार ॥
अधकार—पदवी, योग्यता, अद्ध्याय ॥
अधिपति—स्वामी, मालिक, राजा ॥

अधो—उर्द्धशब्द का विरोधी शब्द, नीचा
अन—नषेध अर्थ में ॥
अनगार—साधू, बेघर, उजाड़ ॥
अनहद—बाजा विशेष, जो ब्रह्माण्ड मे स्वयंसिद्ध बजता है ॥
अनरथदंड—बृथादंड ॥
अन्यथा—और प्रकार, झूठ ॥
अनादिनिधन—सास्ते, सदीवके, क़दीम ॥
अनाहूत—बिन बुलाया ॥
अनित्व—सबपर हैं, सब गैरहैं ॥
अनुकूल—सहायक, आधीन, मुवाफ़िक़ ॥
अनुत्तर } **अनुदिश** } बिमानों के नाम ॥
अनुगृह—दयालता, मेहरबानी ॥
अनुराग—प्यार, दिलका लगाव ॥
अनुसरै—पीछेचलै, पैरवी करै ॥
अनुमेक्षाधर्म—बारा भावना ॥
अनुचरित्र—श्रावकों का आचार ॥
अनुपम } **अनूप** } उपमा राहित, बेमिसाल ॥
अनेकांत—अनेक प्रकार से बस्तु स्वरूप निश्चय होना ॥
अपरविदेह—पश्चिम विदेह ॥
अपराध—पाप, दोष ॥
अपशंस—खोटा, नाकिस ॥
अपर्याप्त—जीव जो पूरीपर्याय ना पावै
अपावन—अपवित्र, नापाक ॥
अबूझ—मूर्ख, बेवकूफ ॥
अविवेक } **अबेव** } बिबेक राहित, बेतमीज ॥
अभक्ष—नहीं खानेयोग्य बस्तु ॥
अभंग—नहीं टूटनेवाला ॥
अभिधान—बोलता नाम, दूसरानाम ॥
अभिधाय—दौड़ना, चलना ॥
अभिराम—सुन्दर, भला ॥
अभिलाषा—इच्छा, मनोर्थ ॥
अभेद—नही टूटनेवाला ॥
अभिषेक—स्नान क्रिया
अमरकोष—१ संस्कृत शब्दार्थ कोषका नाम ॥
अमोघ—फलदाता ॥
अयान—मूर्ख बेवकूफ ॥
अरति—गिलानी ॥
अरणी—वृक्ष, विशेष ॥
अर्जुन—वृक्ष विशेष ॥
अरलू—वृक्ष, विशेष ॥
अरीठा—वृक्ष विशेष जिस के रीठाफल लगता है ॥
अरघ } **अर्घ** } पूजाकी सामग्री पूजामें जलचढ़ाना ॥
अरि—बैरी, शत्रु ॥
अरुण—लालरंग ॥
अर्चि—पूजन ॥
अर्जिया—अर्जिका, साधुणी ॥
अर्द्धासण—आधा आसण ॥
अर्पे—भेटदेना ॥
अर्हंत—पूजनीक ॥
अलप } **अल्प** } तुच्छ, थोड़ा किंचित ॥
अलंकार—साहित शास्त्र, काव्य विद्या ॥
अलंकृत } **अलंकित** } शोभामान ॥
अवधार—निश्चय, विचार ॥
अवधि—हद, सीम एकदेशका नाम ॥
अवधिज्ञान—ज्ञान विशेष देखो ज्ञानशब्द

अवतार—उतरने वाला ॥
अवनी-पृथ्वी, धरती ॥
अवसान—अंत, अंजाम ॥
अवक्तव्य—जो कहने में न आवे ॥
अवकाश—मौका, अवसर ॥
अवरोधन—रोकना ॥
अवंती—एक देशका नाम ॥
अविलोकन } देखना ॥
अविलोय }
अविनाशी—नाश रहित, परम आत्मा ॥
अविशेष—विस्तार रहित अर्थात् सामान्य
अशन—भोजन ॥
अशरण } निर्आधार ॥
असरण }
अशुच—मलीन ॥
अशोक—वृक्ष विशेष ॥
अशेष—सारा कुल, सर्व, ॥
असद्भूत विवहार—? नयकानाम, जो निश्चय मे सत न हो ॥
असमान—जिसकी बराबर दूसरा नहो ॥
असंष—अनगिणत, बेशुमार ॥
असि—तलवार, शस्त्र ॥
असिमसि—चाकू आदि लिखनेकी सामग्री
असीस } आशीर्बाद ॥
अशीश }
असैनी—मन रहित जीव ॥
अस्ति—है अर्थमें ॥
अस्ति नास्ति—हैभी, नहीभी ॥
अस्थि—हाड़—
अस्थिजाल—हाड़ोंका पिंजर, ढांच ॥
अह—दिन ॥
अहि—सर्प

अहो—संबोधन वा आश्चर्ज वा हर्ष समय बोला जाता है ॥

आ

आकिंचन—कुछपास न रखना ॥
आकृत—आकार डौल, मूर्ति ॥
आगति—धर्मशास्त्र वेद, आना ॥
आगर—घर, समूह ॥
आघोर—मलीन, नापाक ॥
आचार्य } आचार्य ग्रंथ रचता, शिक्षित ॥
आचारज }
आचरै—करै ॥
आठभांतपूजा—अष्टदरबसे पूजनकरना॥
आतम—ब्रह्म, जीव ॥
आतुर-लीन, डूबाहुवा ॥
आदेश-आज्ञा, इजाज़त, हुकुम ॥
आधार—साहारा, टेक
आन—आज्ञा, सौगंध और ॥
आनत—? विमान का नाम ॥
आनन-मुख ॥
आनमु-झुकना ॥
आभरन-गहना, जेवर, भूषण ॥
आयस-हुकम, आज्ञा ॥
आयाम-लंबाव, तूल ॥
आयुध—हथियार, शस्त्र ॥
आरति—दुख ॥
आरतिध्यान—खोटाध्यान ॥
आरज } उत्तम, आर्यावर्त ॥
आर्य }
आरण्य-बन जंगल ॥
आराध-सेवा, पूजा ॥
आरूढ—सवार, चढ़ाहुवा ॥

आर्जव—सिधापन, निर्कपट ॥
आवर्त-घेरा, चक्र, भँवर ॥
आव | आयु, उमर
आयु |
आवलि—पंक्ति, लड़ी ॥
आवागमन—आना जाना, मरकर जन्म लेना ॥
आश्रव—कर्मोंका आना ॥
आसन-बैठक, बैठनेकी वस्तु, समीप ॥
आहार-भोजन करना ॥
आहारक-१ प्रकार का शरीर ॥

इ

इंद्रायन-विसलूँभा फल ॥
इंद्रधुष-धनुष, जो वर्षा में निकलती है ॥
इंद्रीजनत-इंद्री से उत्पन्न हुवा ॥
इंद्रीविजय-इंद्रीयो का जीतना ॥
इंदु-चंद्रमा ॥
इष्ट-प्यारा, प्रय ॥
इक्ष्वाकु-छत्री बंशका नाम ॥

ई

ईर्यापथ-४ हाथ पृथ्वीदेख कर चलना ॥
ईश-बड़ास्वामी, सरदार ॥
ईशान-दूसर स्वर्ग का नाम ॥

उ

उक्त-कहाहुवा ॥
उग्र-कठोर, भयंकर ॥
उच्छेपण-उखेड़ना, तोड़ना ॥
उज्झाय-उपाध्याय मुनियों का पढ़ानेवाला
उडगण—तारागण ॥
उतपाद—उपद्रव, भखेड़ा बखेड़ा ॥
उतंग—ऊंचा ॥
उत्कृष्ट—उत्तम, भला ॥
उत्तरगुण—मूलगुण ॥
उत्तरभेद—मूलभेद ॥
उदक—उछलन, कूदन, जल ॥
उदधि—समुद्र ॥
उदर—पेट ॥
उदंड—बैठेका विरोधीशब्द, अर्थात् खड़ा ॥
उदंबर—अभक्षफल, जो ५ हैं ॥
उदार—दाता, महान पुरुष ॥
उदयाचल—१ पर्वत का नाम, जिसपर सूर्य उदय होता है ॥
उद्धत—ऊपर होना, उछलना ॥
उद्धार—ऊपरलेना, दुतिय पलका नाम ॥
उद्यम—विचार, तनवीज ॥
उद्यान—जंगल, उजाड़ ॥
उद्योत—प्रकाश ॥
उधरन—ऊंचा ॥
उनहार—तुल्य, बराबर ॥
उन्नती—अधिकता, बढ़वारी ॥
उपकरन—पूजाके बरतन पूजाकी सामग्री ।
उपकार—सहायता ॥
उपकिलकी—नीच, खोटा ॥
उपदेशो—उपदेशदियो ॥
उपचार—उपाय, सेवा, बिवहार ॥
उपद्रव—उपाधी, विघ्न ॥
उपबन—बागीचा, बाड़ी ॥
उपसमुद्र—खाड़ी, छोटा समुद्र ॥
उपसर्ग—दुख, तकलीफ ॥
उपभोग—जोवस्तु बार २ भोगीजाय॥

उपयोगी—विचार करनेवाला ॥

उपशंत, उपशमै — दबै, घटै, कमहो ॥

उपाधि—उपद्रव, विघ्न ॥

उपाय—तजाजिव, इलाज ॥

उपासक—पूजनेवाला ॥

उभयादिश—दोनोंओर, दोनोंतरफ ॥

उभयपक्ष—दोनोपक्ष दोनोंपखवार ॥

उर—हृदा, मन ॥

उरज—छाती, चूची, ॥

उर्ध्वलोक—स्वर्गलोक ॥

उश्ण, उश्णता — गरमी, तपत ॥

ऊ

ऊद्व—ऊजड, वैरान ॥

ऊन—घटना ॥

ऊपमा—मुकाबला, तशबीह ॥

ऊंबर—१ फलका नाम जो अभक्ष है ॥

ऊरध, ऊर्ध — ऊंचा, अधोका विरोधीशब्द ॥

ऋ

ऋतु—मौसम, फसल, ऋतु ६ हैं बसंत १ ग्रीषम २ बर्षा ३ शर्द ४ हिम ५ शिशिर६

ऋतुराज—बसंतऋतु ॥

ए

एकत्व—एकपना ॥

एमो—ऐसेही ॥

एव—इस प्रकार, यह, निश्चय ॥

एवम—इस प्रकार, यह, इसी तरह ॥

ऐ

ऐरावत—देवरचित हाथी का नाम, देश विशेष ॥

ऐलक—११ प्रत्माधारी श्रावकों में से १ प्रकार का श्रावक ॥

औ

औ—और ॥

औंगा—वृक्ष विशेष ॥

औदारक—शरीर, देह ॥

औषधी—दवा ॥

औसर—समय, काल, मौका ॥

क

कंकोल—कबाबचीनी वृक्ष ॥

कंचन—सुवर्ण, सोना धातु ॥

कंज—कमल ॥

कंटकमई—कांटों वाला ॥

कंठ—गला, हलक, जबानी ॥

कंठिका—कंठी, माला, गहना ॥

कंत—स्वामी, पति ॥

कंद—जड़, गांठ ॥

कंदर, कंदरा — गुफा, पहाड़कीखोह,

कच्छप—कछुवा, जानवर,

कटक—कड़ा, गहनाविशेष, सेना, फौज॥

कटि—कमर ॥

कटिभूषण—तगड़ी, गहनाविशेष ॥
कटू—कड़वा, तल्ख ॥
कटुकरस—कड़वारस ॥
कथिक—कहने वाला ॥
कदा—कभी ॥
कदापि—किसी कालभी ॥
कन } नाज, गल्ला ॥
कण }
कनकाचल—सुमेरु पर्वत ॥
कन्डार—वृक्ष विशेष ॥
कपि—बंदर ॥
कपोत—कबूतर रंगलेश्या ॥
कपोल—गाल, रुखसारा ॥
कवच—जिरह, बकतर, लोहे की कड़ियों का जामा ॥
कमलनि—कुमोदनी, कमलोंका समूह ॥
कमलामज्जन—लक्ष्मीस्नान, देवीस्नान ॥
कमंडल—पानीका भाजनजो मुनि रखते हैं ॥
करण—इंद्री ॥
करना—फूल विशेष ॥
करीट—वृक्ष विशेष ॥
करहा—ऊँट ॥
करवत—लकड़ी चीरने का औजार, आरा ॥
करा—करने वाला, यथा शिवकरा ॥
कराल—भयंकर, डरावनी सूरत ॥
करि } हाथी, गज ॥
करी }
करनी—हथनी, राजका औजार, करतूत ॥
करुणा—दया ॥
कर्णिका—फूलकी डोडी ॥
कल—चैन, आराम, सुख ॥
कल्पित—झूंठी, फरजी ॥
कलपलोक—स्वर्गलोक ॥
कलपवासी— देवताविशेष, जो १० प्रकारहैं
कलेवर—लाश लोथ ॥
कला—सामर्थता, अंश, भाग, ६४ कलारागादि विद्या प्रसिद्ध हैं ॥
कलाप—दुःख, समूह, मोर पक्षी ॥
कलानिधि—चंद्रमा ॥
कलश—घड़ा, कुंभ, सोनेका उपकरन जो मंदिर के शिखर पर लगाया जाता है ॥
कल्पतरु } स्वर्ग का वृक्ष जो मन वांछित फल देता है ॥
कल्पवृक्ष }
कलत्र—स्त्री, घरकी स्त्री ॥
कलित—भरी हुई ॥
कलुसता—कालस, स्याही ॥
कल्लोल—लहर, मौज ॥
कलपलाय—कुल चलाना ॥
कषाय—क्रोध मान माया लोभ, कसैलारस लाल रंग ॥
काँड—तीर विशेष अध्याय ॥
काँति—चमक, दमक ॥
काउसर्गमुद्रा—खड़े होकर ध्यान लगाना
काकणी—रत्न विशेष ॥
कादो—कीचड़, गारा ॥
कापुरुष—खोटा पुरुष ॥
कायर—डरपोक ॥
कारागृह—कैदखाना, जेलखाना ॥
काल—मौत, समय, काला रंग ॥
कालमा—कालौंस, स्याही ॥
कारमाण—१ प्रकार का शरीर ॥
कालाणू—काल परमाणु ॥
काशिप—गोत्र का नाम ॥
काशी—काशीदेश १ नगर का नाम ॥
काहलाकार—बिलाव कैसी सूरत ॥

किंकर—दास, बांदा, सेवक ॥
किधौं—मानो, गोया, कभी, कियो ॥
किन्नरी—देव अंगना भांति जो गीत गाती हैं
किर्माला—फालसा वृक्ष, पलास वृक्ष ॥
किरीट—मुकट, ताज ॥
किलकी—अधम पुरुष, धर्मविध्वंशी पुरुष ॥
किलकिलंत—किलकी मारना, किल बिल करना ॥
कीरति—कीर्ति, यश ॥
कीधो—कियो ॥
कु—खोटे अर्थ में यथा कुभाव खोटा भाव
कुंकुम—केसर, जाफरान ॥
कुंजर—हाथी ॥
कुंत—भाला, बरछा अस्त्र ॥
कुंद—फूल विशेष ॥
कुंभ—घड़ा, मटका ॥
कुटिल—नीच पुरुष, क्रूर पुरुष ॥
कुठार—कुहाड़ा, कुल्हारा ॥
कुमार—बाल अवस्था ॥
कुरंग—हिरन, मृग ॥
कुल—वंश ॥
कुलगिर—पहाड़ विशेष ॥
कुलाचल—पर्वत विशेष ॥
कुलीन—कुलवाला, खांदानी ॥
कुबेर—कोषाध्यक्ष, खजानची ॥
कूंचा—आगका पलीता ॥
कूंची—ताली, कुंजनी ॥
कूट—पहाड़ की चोटी ॥
कूप—कुवा ॥
केवलज्ञान—देखो ज्ञानशब्द ॥
केल—कलोल, क्रीड़ा, खेलकूद ॥
केश—बाल ॥
केहर, केहरी—सिंह, शेर ॥
केहरनाद—जोतिषी देवताओं का बाजा विशेष ॥
कोक—मैंडक जानवर ॥
कोट—कोड़ गिणती, ओट, फसील ॥
कोटर—वृक्षकी खोखल ॥
कोदौं—१ प्रकारका नाज, जिससे नशा होता है ॥
कोप—क्रोध, गुस्सा ॥
कोपीन—लिंगोट ॥
कोविद—पंडित बुद्धमान ॥
कोलाहल—रूका, पुकार ॥
कोष—खजाना, भंडार, शब्दार्थ ग्रंथ ॥
कृत—बनाई हुई ॥
कृतम—बनावट ॥
कृपान—तलवार, खांडा ॥
कृपाल—दयालु ॥
कृम—परपाटी सिलसिला, कीड़ा, जंतु ॥
कृष—कमजोर, हलका, निर्बल ॥
क्रीड़ा—खेल, कूद, चलना फिरना, सैर ॥

ख

खंड—टुकड़ा, हिस्सा ॥
खग—विद्याधर, आकाश गामी ॥
खची—जड़ी हुई ॥
खजूरे—कनखजूरे जानवर ॥
खड्ग—तलवार, खांड़ा ॥
खर—गधा पशु ॥
खरहटी—वृक्ष विशेष ॥
खातिका—खाई, खंदक ॥
खारक—छुहरा, वृक्ष ॥

खिन्न—भिन्न भिन्न ॥
खिरी—चई, गिरी, उतरी ॥
खेजड़—वृक्षविशेष ॥
खेट—खेडा, आबादी ॥
खेत—क्षेत्र ॥
खेद—दुःख
खेपी—बखेरी, फेंकी ॥
खैर—वृक्ष विशेष ॥
ख्याति—फैलाव प्रकाश ॥

ग

गंड—आखों के नीचेका भाग, कपोल ॥
गंध—वास, बू, सुगंधि ॥
गंधकुटी—केवली के बैठनेका देवरचित स्थान
गंधर्व—गानेवाले देवता ॥
गंभीर—गहरा, अथाह ॥
गगन—आकाश, आसमान ॥
गज—हाथी ॥
गजदंत—पहाड़ विशेष ॥
गजै—गाजै, शोरकरै, गूंजैं ॥
गढ़—किला, दुर्ग ॥
गणईश, गणराज, गणधर, गणबद्ध — भगवान की धुनिका अर्थ करने वाला ४ ज्ञानका धारक, मुनियों के गणमें प्रधान मुनि ॥
गणिका—वेश्या, रंडी, कसबी ॥
गति—चलना फिरना, नरक १ तिर्यंच २ देव ३ मनुष्य ४
गयंद—हाथी, गज ॥
गरभ, गर्ब, गर्भ — पेट, आधान, मान ॥
गरिष्ट, गरीष्ट — भारी बोझल ॥
गांडर—एक प्रकारकी घास ॥
गामी—चलनेवाला ॥
गिर—पहाड़ ॥
गिरदाकार—गोल ॥
गिले—निगले ॥
गीध—गिद्ध पक्षी ॥
गुँझा—चिरमटी, घूंघची ॥
गुप्त—छिपा, पोशीदा ॥
गुप्ति—३ हैं, मन १ बचन २ काय३ रोकना ॥
गुफा—पहाड़ की खोह ॥
गुडहल—वृक्ष विशेष ॥
गुणव्रत—३ व्रत जिनको श्रावक पालते हैं ॥
गुलमखेटपुर—१ नगरी का नाम ॥
गेह—घर ॥
गैल—साथ, रस्ता ॥
गोट—सभा, टोली ॥
गोंदी—वृक्ष विशेष, जिसका फलगोंदनी है ॥
गोपति—बैल ॥
गोपुर—गौशाला ॥
गोमठसार—ग्रंथका नाम ॥
गोरखपान—पानविशेष ॥
गौतम—महावीर स्वामी के प्रधान गणधर का नाम
गौन—गवन, चलन, फिरन ॥
ग्रंथ—पुस्तक पोथी ॥
ग्रह—घर ॥
ग्रीव—गला गर्दन ॥
ग्रैवेयक—बिमानों की संज्ञा ॥

घ

घट—घड़ा, कुंभ, हृदा, चित्त ॥

घन—बादल, घटा, समूह ॥
घनसार—कपूर, जल, चंदन ॥
घनघोर—बादल का समूह, घटा ॥
घरटी—चक्की ॥
घरमूसन—घर लूटना ॥
घाट—दरिया पहाड़ का रस्ता ॥
घान—समूह ॥
घाम—धूप, गरमी ॥
घिघाय—रोना ॥
घुटियागमन—घुटनों के बल चलना ॥
घुघू—उल्लूपक्षी ॥
घोर—समूह, गरम, मलीन ॥
घोरवीर—सूरवीर ॥

च

चंड—तेजमान ॥
चंदोपक—चंदोया, सामियाना ॥
चंपक—चंपावृक्ष ॥
चंपत—चापना, दबाना, भागना ॥
चक्र—हथियार विशेष, गाड़ी के पहिये, चक्रवर्तीराजा ॥
चाप—धनुष शस्त्र ॥
चामीकर—सोना धातु ॥
चारण—मुनिजाति विशेष ॥
चारित—चारित्र, चलन ॥
चारु—सुंदर, भला ॥
चिंतामणी / चिंतारैन —रत्न विशेष, १४ रत्नमें से १ रत्न का नाम ॥
चिन्ह—लक्षण, निशान ॥
चिता—झूला ॥
चिद्रूप / चिदातम —ब्रह्म ॥
चिर—सदैव ॥
चीह—दुख ॥
चूड़ामणि—रत्न विशेष जो चोटी में लगाते हैं
चैतवृक्ष—१ प्रकार का वृक्ष, जिसमें प्रतिमा आकार होता है ॥
चोल—मजीठ वृक्ष, जिसका रंग बनता है ॥
चौपथ / चौवट —चौराहा ॥

छ

छँटा—छींट, बूंद, कनरा ॥
छंदशास्त्र—पिंगल शास्त्र ॥
छत्रभंग—राजनाश ॥
छन्न—छाया हुवा ॥
छवि—शोभा, रौनक ॥
छय—क्षय, नाश ॥
छाँट—छींट, बूंद, कनरा ॥
छानी—छिपा, पोशीदा ॥
छाप—मोहर ॥
छायक—क्षायक सम्यक दर्शन ॥
छिद्र—छेक, सूराख ॥
छिन्नभिन्न—टूटफूटे, टुकड़े टुकड़े ॥
छुद्रघंटका—घुंघरू भूषण ॥
छुधा—क्षुधा, भूख ॥
छुल्लक—११ प्रतिमाधारी श्रावकों से १ प्रकार का श्रावक ॥

ज

जंगम—चलने वाले जीव, अचर का विरोधी शब्द ॥
जंड—जांटवृक्ष प्रसिद्ध है ॥

जंतु—जानवर, जीव ॥
जंपत—जापै, स्मरण करै ॥
जंबू—१ दीपका नाम, जामनवृक्ष ॥
जंभीरी—नीबूं, वृक्षविशेष ॥
जघन्य—छोटा ॥
जड़—अचेतन ॥
जनक—पिता, बाप ॥
जननी—माता ॥
जयो—पैदाहुआ, जैवंताहो ॥
जरा—बुढ़ापा ॥
जलधि—समुद्र, सागर, प्रमाण ॥
जलधर—बादल, मेघ ॥
जातिसुमरण—पिछलेभवकी बातयादआना
जाम—पहर, तिससमय ॥
जावजीव—जीनेतक ॥
जावंत—जितने, जिसक़दर ॥
जिनमुद्रा—जिनधर्मका चिह्न ॥
जिनयज्ञ—जिनपूजा ॥
जिनसेन—१ आचार्यका नाम ॥
जीरण—पुराना, गलाहुआ ॥
जीवन—जिंदगी, जल ॥
जेठा—बड़ाबेटा ॥
जै / जय —जीत, फतह ॥
जोग—ठीक, मुनासिब ॥
जोजन—१ प्रमाण का नाम, जो ४ कोस का होता है ॥
जोट—जोड़ा ॥
जोतषी—१ प्रकारके देवता ॥

झ

झंझावाय—क्रूरपवन, आंधी ॥
झालर—घड़ियाल बाजा ॥

ट

टेक—सहारा, आधार, थंभ ॥
टेव—स्वभाव, आदत ॥

ठ

ठयो—ठैरायो, धरो, करा, हुवा ॥

ड

डंड—डंडा, लठ ॥
डकारत—डकारताहुवा, दहाड़ताहुवा ॥
डाकिनी—पिशाचजात स्त्री ॥
डाहै—अकोलै, खदूलै ॥

ढ

ढोक—प्रणाम, झुकना, डंडोत ॥

त

तंबोल—पान, गर्भवती वा जच्चा स्त्री के पान मेवा आदि सामग्री भेजना ॥
तगर—वृक्ष विशेष ॥
तट—नदीका किनारा ॥
तटनि—नदी ॥
ततखिन—तिसहीकाल ॥
ततकाल—उसीसमय ॥
तत्त्व—मूल, सार, प्रकृति ॥
तथा—तैसा, तनक, थोड़ा ॥

तम—अंधेरा ॥
तमाल—वृक्षविशेष ॥
तयो—पानीहुयो, तैगयो ॥
तरंग—लहर, मौज ॥
तरंगनि—नदी ॥
तरंड—नौका, किश्ती ॥
तरल—चंचलता ॥
तांडव—नृत्तविशेष ॥
ताम—तिससमय, तिसकाल ॥
तानैं—तीरखैंचैं, निगाह जोड़ैं ॥
ताल, तार — ताड़वृक्ष, खटतालबाजा, पंखा, तालाब
तालीस—अमलतासवृक्ष ॥
तात—पिता, बाप ॥
तिमर—अंधेरा ॥
तिय—स्त्री ॥
तियवेद—त्रियाचरित्र, त्रियइच्छा ॥
तिर्थंकर—पवित्र, पाक ॥
तिलक—टीका, शोभा, विवर्ण ॥
तृषा—प्यास ॥
तींदू—वृक्षविशेष ॥
तीनकाल—प्रातः १ मध्याह्न २ संध्या३ ॥
तुंग—ऊंचा ॥
तुंडा—चोंच, मुख ॥
तुचा—खाल, चमड़ा ॥
तुरंग—घोड़ा ॥
तुरिय—चौथा ४ ॥
तुस—छिलका ॥
तुसार—पाला, बर्फ ॥
तूंबी—१ बेलका फल प्रसिद्ध है ॥
तृन—वृक्ष विशेष ॥
तेला—३ दिनका व्रत ॥
तैजस—१ प्रकारका शरीर ॥

तोय—जल, पानी ॥
तोरण—फूलमाला, बंदरवाल ॥

थ

थपति—राज, मेमार ॥
थयो—हुयो ॥
थरपिये—स्थापन करिये ॥
थल—रेतली धरती ॥
थान—स्थान ॥
थाप—थापकर, बैठाकर
थावर—जंगमका विरोधी शब्द, १ इंद्रीजीव
थिति—आयु, स्थिति, ठैराव ॥
थितिपात—कर्मोंका थिति बंद खिरना ॥
थुति—स्तुति ॥
थूल—स्थूल, भारी, १ प्रकार का शरीर ॥

द

दंडरपुर—१ नगर का नाम ॥
दंपति—स्त्रीपुरुष, जोरू, खाविन्द ॥
दरवित—द्रव्य संबंधि ॥
दरसत—देखते
दर्पन—मुंह देखने का शीशा ॥
दर्शन—देखना, निश्चय करना ॥
दल—पत्ता, सेना, फौज ॥
दलन—दलना, तोड़ना ॥
दसन—दांत ॥
दह—गहराव, पानी का भँवर ॥
दहे—जले ॥
दाम—माला ॥
दामनि—बिजली ॥
दारै—विदारै, चीरै ॥

दारुण—क्रूर, कठोर ॥
दाह–तप, गरमी, आग, जलना ॥
दिगविजय—चारोंदिश जीतना ॥
दिग्गज–पहाड़ विशेष ॥
दिगपाल—देवता विशेष ॥
दिगंबरमुद्रा–नग्न चिन्ह ॥
दिठ—नजर, निगाह ॥
दिट्ठी—देखी, निगाहकर्ता ॥
दिढ—मजबूत ॥
दिननाह, दिनपति—सूर्य, भानु ॥
दिवस—दिन ॥
दिवाकर, दिवायर—सूर्य, भानु ॥
दिशा—तरफ, ओर, सिम्त ॥
दिशाकुमारी—देवी विशेष ॥
दिशचार—चौपड़, ४ दिशा ॥
दिष्ट—नजर, निगाह ॥
दिक्षा—गुरूमंत्र, उपदेश, क्रिया विशेष ॥
दीन—रंक, महुताज ॥
दीप—दिवला, चिराग, बहुत बड़ा मुल्क॥
दुकूल—रेशमी कपड़ा, महीन वस्त्र ॥
दुठ—दुष्ट, क्रूर ॥
दुज—ब्राह्मण, विप्र ॥
दुति—चमक दमक ॥
दुद्धर—कठिन, कठोर ॥
दुवार—दरवाजा, पौल ॥
दुर्जन–खोटा आदमी ॥
दुर्भिक्ष—अकाल, कहत ॥
दुर्ग—गढ़, किला ॥
दुरस—दुरस्त ठीक, योग्य ॥
दुरी—छिपी ॥
दूब—घास विशेष ॥

देवभाषा—संस्कृतबोली ॥
देशना—उपदेश ॥
दैत्य—असुर, राक्षस ॥
दौं—आग ॥
दौर—दौड़, हद ॥
दृष्टांत—मिसाल ॥
द्रौणामुख—समुद्र के बीचकी खुशकी की आबादी ॥

ध

धन—डंगर, ढोर, रुपया, पैसा ॥
धनंजय—अग्नि ॥
धनद, धनपति—कोषाध्यक्ष, खजानची ॥
धनुष—कमान, आयुध ॥
धरा—धरती ॥
धरिंद्र—भवनवासी देवताओं का इंद्र ॥
धात—सोना आदि ७ धातु हैं ॥
धाम—स्थान, घर, किरण ॥
धाय—दूध पिलानेवाली स्त्री ॥
धायधाय—दौड़दौड़ ॥
धिक—फिटकार ॥
धीर—धीर्जेमान ॥
धुजा—झंडी, पताका ॥
धुनि—शब्द, घोर, नदी ॥
धुर—हद, किनारा ॥
धुलिसाल—मकान विशेष ॥
धौल—सफेद, श्वेत ॥
ध्रुव—तारा विशेष ॥

न

नंदन—पुत्र, बेटा ॥

नंदीसुर—आठवेंदीप का नाम ॥
नग—पहाड़,मणि ॥
नति—नम्रता, झुकना ॥
नपुंसक / नपुंस्क — हिजड़ा, नामर्द ॥
नरवै / नरेश — राजा ॥
नव—नया, ९ का अंक ॥
नरिंद्र—राजा, १ छंदका नाम ॥
नसा—नस, रग ॥
नाग—हाथी, सर्प ॥
नागर—उत्तम, भला, चतुर ॥
नाटक—नाच तमाशा ॥
नाथ—स्वामी, मालिक ॥
नाद—शब्द, बाजा विशेष ॥
नाभगिर—पर्वत विशेष जो ४ हैं ॥
नाभि—आदनाथ स्वामी के पिताका नाम ॥
नायक—सरदार ॥
नास्ति—नहीं है ॥
नास्तिकमत—जिसमत में पुण्य पाप न माना जाय ॥
नापै—तोड़ै, टुकड़े करै ॥
नाह—नाथ, स्वामी, प्राकृत शब्द ॥
नाहर—सिंह, शेर ॥
निंदा—मज़म्मत, बुराई ॥
नंदविरध / नंदवरध — आनंद रहो, बढ़ो ॥
निकुंज— रमणीक स्थान ॥
निकट—समीप, नजदीक ॥
निकाज—निरर्थक, निष्फल ॥
निकेत—घर ॥
निग्रह—दंड, सजा, जुरमाना ॥
निर्ग्रंथ—शुद्धमना, साफदिल ॥
निठुर—कठोर ॥
नित्य—सदीव ॥
निदान—निश्चय, तहकीक ॥
निधान—स्थान, घर ॥
निधि—कोष, निधि ९ हैं ॥
निमेष—पलक ॥
निमत—कारण ॥
नियोग—काम, शगल ॥
निर्धार—निश्चय ॥
निरत—नाच ॥
नृप—राजा ॥
निरमान—रचाहुवा ॥
निरंतर—लगातार ॥
निरवरै—दूरहो ॥
निरमायो—बनाया, रचो ॥
निर्जरा—कर्मोंका खिरना ॥
निराठ—देखकर ॥
निरोध—रोक,थाम ॥
निर्वहै—चलै, निवहै ॥
निवसै—बैठै ॥
निवास—स्थान ॥
निवेद—प्रार्थना ॥
निहोर—कृपा, उपकार ॥
निशा—रात्रि ॥
निशनाथ—चंद्रमा ॥
निशान—बाजाविशेष, झंडा ॥
नीत—प्रबंध कानून ॥
नीतनिपुन—नीतज्ञाता, पंडित ॥
नीरज—कमल ॥
नीलनिषध—पर्वत विशेष ॥
नेक—थोड़ासा ॥
नेह—प्यार ॥
नेवर—गहनाविशेष ॥

न्हैर—नगर ॥
न्यात—पंक्ति,पांति ॥
न्याय—तुल्य, बराबर, भलीरीत ॥
न्होंनपीठ—चौकी, पटड़ा ॥

प

पंक—कीचड़, गारा ॥
पंचकरण—पांचइंद्री ॥
पंचमज्ञान—केवल ज्ञान ॥
पंचलघुअक्षर—अ—इ—उ—ऋ—लृ ॥
पंचागनि—चार अग्निचारोंओरकी पांचमी सूरजकी गरमी सिरपर उठाते हैं, या अंगीठी आगकी सिरपर धरते हैं ॥
पंचानन—शिंह, शेर ॥
पंचालदेश—पंजाबदेश ॥
पंचास्तिकाय—काल रहित षटद्रव्य की पंचास्तिकाय संज्ञा है ॥
पंति—पंक्ति, पांति ॥
पगे—मिलै ॥
पट—वस्त्र, किवाड़ ॥
पटतर—उपमा, मिसाल ॥
पटराणी—प्रधानराणी ॥
पटल—परदा, ओट ॥
पटह—ढोलबाजा ॥
पठायो—भेजा ॥
पठनपाठन—पढ़ना पढ़ाना ॥
पडगाहे—पूजे, आदरकरा ॥
पणच—कमानका चिल्ला ॥
पतंग—वृक्षविशेष प्रसिद्ध है जिसका रंग बनता है ॥
पति—स्वामी, मालिक खाविंद ॥
पत्यारा—प्रतीत, बिश्वास ॥
पथ } रस्ता, गैल ॥
पंथ }
पथिक—बटेऊ, मुसाफर ॥
पद—पैर, दरजा, अधिकार ॥
पदार्थ—बस्तु चीज ॥
पद्मराज—हिरा, चन्नी, लालरंग कमल ॥
पन्नग—सर्प ॥
पय—दूध, जल ॥
पयान—चलना, यात्रा, कूंच ॥
पयामे—फैले ॥
पयूष—अमृत ॥
परयन—परलोग, गैरआदमी ॥
परणत—हालत, अवस्था ॥
परनी—ब्याही ॥
परपंच—छल,द्रोह, छलया ॥
पर्वत—पहाड़ ॥
परब—पुन्नका दिन ॥
परम—उतम, श्रेष्ठ, बड़ा ॥
परमार्दितमार्ग—चलता रस्ता,साफरस्ता ॥
परमाद—आलस, सुस्ती ॥
परधान—बड़ा, महान ॥
परमारथ—बड़ा प्रयोजन ॥
परमित—अन्दाजा, अटकल ॥
परमेठ—परमइष्ट, अतिप्यारा ॥
पर्याय—अवस्था, अलटपलट ॥
पर्याप्त—पूरेप्राणकी प्राप्ति ॥
परवान—चतुर ॥
परशंसा—बड़ाई ॥
परसै—छूवै ॥
पराग—रज, धूल ॥
परिहरै—छोड़ै ॥
परिखा—खाई, खंदक ॥
परिगृह—सामान, असबाब ॥

परिपाक—फल, नतीजा ॥
परिवार—कुटंब, कुनबा ॥
परिसह—दुःख, तकलीफ ॥
परोक्ष—पीठपीछै, परदेमें ॥
पल—मास, पलक, कालकी १ गिनती ॥
पसत्थ—प्रशस्त, भला, सुंदर ॥
पल्लव—पत्ता, पत्र ॥
पक्ष—पखवारा १५ दिन ॥
पसाय—फैलना ॥
पहुमी—प्रथ्वी, धरती ॥
पैर्य—अलटपलट ॥
प्रति—सनमुख, हरएक, नकल ॥
प्रणाम—नमस्कार ॥
प्रमुख—मुखिया, आदिलेकर ॥
प्रकृति—स्वभाव, आदत, वाण ॥
प्रतिज्ञा—नेम, आखड़ी ॥
प्रभाव—यश, प्रताप ॥
प्रभ—प्रकाश ॥
प्रदक्षना—प्रकम्मा ॥
प्रयंग—प्यारा, सुंदर ॥
प्रभा—चमक ॥
प्रमोद—आनंद ॥
प्रथमअवतार—आदिनाथ स्वामी ॥
पाखर—वृक्ष विशेष ॥
पायकसंघ—प्यादोंकी सेना ॥
पादुका—खड़ाऊँ ॥
पषान—पत्थर ॥
पावक—आग ॥
पाल—डौल, हद ॥
पावस—वर्षा, ऋतु ॥
पात्र—बरतन ॥
पातक—पाप ॥
पारना—व्रतखोलनेका भोजन ॥

पारियात—हारशृंगार वृक्ष ॥
पाहन—पत्थर, गुलाबका फूल ॥
पाट—१ प्रकारका सन ॥
प्राकार—किला, गढ़ ॥
प्रासुक—उत्तम, शुद्ध ॥
प्राण—जीव ॥
पिंड—गोला ॥
पिंगल—छंदविद्या ॥
पिशुन—दुष्ट, कठोर ॥
प्रिज्ञा—निरमलवुद्धि, सरस्वती ॥
पीठका—चौकी ॥
पीलू वृक्षविशेष ॥
पीहर—पिताका घर, पीवका घर ॥
पीछी—मोरपंख, मोहनी ॥
पीर—दुःख, दर्द ॥
पुंग- सुपारी वृक्ष ॥
पुराण—तिर्थंकरोंकी कथाका शास्त्र ॥
पुनीत—निर्मल, उत्तम ॥
पुर—नगर, वस्ती ॥
पुव्व—पूर्वदिशा, पहलाभाग ॥
पुन्नयोग—धनका समय ॥
पुनि—फिर ॥
पुग्गल—पुद्गल, परमाणु ॥
पुरंदर—इंद्र ॥
पुरानपुरुष—महापुरुष ॥
पूजपद—पूजनेयोग पुरुष ॥
पूर्व—प्रथम, पहला ॥
पेर—पेड़, वृक्ष ॥
प्रेत—भूतजाति ॥
पै—पर, लेकिन, परंतु ॥
पोत—जहाज, बड़ीनौका ॥
पोल—खाली, सुन्न, आकाश ॥
पोष—पालन ॥

पोसह—व्रत ॥
पौर—दरवाजा ॥

फ

फणि / फणी } सर्प, नाग ॥
फरस—स्पर्श ॥
फुलिंग—चिंगारी, पतंगा ॥
फुनि—फिर, पुनि ॥

ब

बंदीजन—कैदी ॥
बंदूं—नमस्कार करूं ॥
बंधव—भाई ॥
बई—बोई ॥
बक्रता—टेढ़ापन, बांकापन ॥
बज्र—बिजली, हीरामणि ॥
बज्रघोष—बिजलीकी कड़क ॥
बदन—मुख ॥
बध—मारना ॥
बधिर—बहरा ॥
बधू—स्त्री, औरत ॥
बनपालक—माली, बागवाना ॥
बनस्पति—वृक्षादिक, घासफूस ॥
बमो—उलटदियो ॥
बय—समय, उमर ॥
बयाल—पवन ॥
बरग—समूह ॥
बरती—बरतनेवाले, रहनेवाले ॥
बरयां—बार, समय, वक्त ॥
बर्गना—पिंड, समूह, मजमूआ ॥
बर्द्धमान—महावीरस्वमी ॥
बल—सामर्थ, ताकत ॥
बलदेव—बलभद्र ॥
बलियाकार—गोल ॥
बलि—बलवान ॥
बसन—वस्त्र, कपड़ा ॥
बसा—चरबी ॥
बसु—आठ ८ ॥
बहन—चलन ॥
बाघ—सिंह, शेर, बघेरा ॥
बाचाल—बोलनेवाला ॥
बाज—घोड़ा ॥
बाज़ारनी—वेश्या, कसबी ॥
बाजित्र—बाजा ॥
बाड—रोक, फसील ॥
बाणीगोचर—बाणी में आनेयोग ॥
बातसल्य—गौ, बच्चेजैसीप्रीतिपालना ॥
बाद—निष्फल चरचा, वृथाशब्द ॥
बान—स्वभाव, आदत ॥
बापी—बावड़ी ॥
बामा—पार्श्वनाथ स्वामीकीमाताका नाम ॥
बाय—पवन, हवा ॥
बायक—बचन, बोल ॥
बायुकुमार—देवताविशेष ॥
बारण—हाथी ॥
बारिधि—समुद्र ॥
बारिज—कमल ॥
बाल—बालक, बचा ॥
बासर—दिन ॥
बासुदेव—नारायन ॥
बाहन—सवारी ॥
बाह्य—बाहर ॥

बिंब—प्रतिमा, मूर्ति ॥
बिलाल—नीचजात विशेष ॥
बिष्ट—वर्षा ॥
बीजना—पंखा ॥
बीना—बाजा विशेष ॥
बुध—पंडित ॥
बे—दो, २ ॥
बेग—जलदी, जल्दी ॥
बेगवती—नदी ॥
बेढ़े—घेरे हुए ॥
बेदन— } दुःख, व्याकुलता ॥
बेदना— }
बेदनीकर्म—८ कर्मों में से १ कर्म का नाम॥
बैन—वचन, बोल ॥
बैस्वानर—अग्नि ॥
बोध—ज्ञान ॥
बोधो—समझायो, उपदेश दियो ॥

भ

भँग—टूटना ॥
भंजो—काटो ॥
भट—जोधा, सूरबीर ॥
भण—कहने अर्थ में ॥
भद्र—भगवान ॥
भद्रमाल—बन बिशेष ॥
भर्तार—पति, स्वामी ॥
भव—संसार, जन्म ॥
भरम—भ्रम, संदेह ॥
भवि—भव्य जीव, सीझने वाला जीव ॥
भक्षण—भोजन करना ॥
भ्रमर—भवरा जानवर ॥
भाग—हिस्सा, नसीबा ॥
भाज } पात्र, बरतन ॥
भाजन }
भान—सूर्य ॥
भाय—भांति, स्वभाव, भाई ॥
भाल—माथा, पेशानी ॥
भारजा—स्त्री ॥
भारती—सरस्वती, बोली ॥
भावना—चिंतवन करना ॥
भास } चमक दमक, प्रकाश ॥
भासुर }
भ्राता—भाई ॥
भिन्न—टुकड़े टुकड़े ॥
भिक्षाभाजन—कमंडल ॥
भीत—भयवान ॥
भुजा—बाजू, डंड ॥
भुजंगम—सर्प ॥
भूताचल—पर्वत विशेष ॥
भूपाल—राजा ॥
भूमिगोचरी—पृथ्वीपर चलनेवाले ॥
भूर—बड़ा, बहुत ॥
भूषण—गहना, जेवर ॥
भेट—उपहार, नजर, मिलने अर्थ में ॥
भेद—इद ने अर्थमें, दिलकी बात ॥
भेरि—बाजा विशेष ॥
भेव—भेद ॥
भो—संसार, जन्म, संबोधन अर्थ में ॥
भोग—जो १ बार भोगाजाय ॥
भृंगार—पूजाकी कटोरी ॥
भृंगी—जानवर विशेष, कीट विशेष ॥

म

मंगल—कल्यान, आनंद ॥
मंडप—छाया हुवास्थान ॥
मंडल—घेरा, गिरदा, फहलाव ॥

मंडली—सभा, गोष्ट ॥
मंत्री—सलाहकार ॥
मँझार—बिलाव ॥
मकरंद—फूलका रस ॥
मगध—देश विशेष ॥
मझार—मध्य अर्थ में ॥
मणिरैन—रत्न विशेष ॥
मत्त—मस्त ॥
मति—बुद्धि, अकल ॥
मद- घमंड- हाथीकेकपोलकाचुवाव ॥
मदिरा- शराब ॥
मदन / मनमथ — कामदेव ॥
मनसाहार—मन से आहार करना ॥
मनोग—सुन्दर ॥
मयमंत—मस्त, शराबी ॥
मय—मदिरा मिल अर्थ में ॥
मयँक—चन्द्रमा ॥
मस्तक—माथा, पेशानी ॥
मसान—मरघट, छूला ॥
मसि—लिखने की स्याही ॥
महंत—बड़ा, प्रधान पुरुष ॥
महिमा—बड़ाई, ॥
मंदार—वृक्ष विशेष स्वर्ग में है ॥
मधुप—भवरा जानवर ॥
मनपर्य्य—१ ज्ञान का नाम देषो ज्ञानशब्द ॥
मरम—छेदा ॥
मचकंद—पुष्प विशेष ॥
मरुवा—वृक्ष विशेष ॥
महुवा—वृक्ष विशेष ॥
मदगज—मस्त हाथी ॥
मघवा—इंद्र ॥
महीधर—पहाड़, पर्वत ॥
मरहट—मरहटा देश ॥
माचन—घुमेर ॥
माणक—चुन्नी ॥
मातंग—हाथी, गज ॥
मानसीक—मनसेही आहार करना ॥
मानखेत्र—१पहाड़ का नाम ॥
माया—फरेब, धोका, मकर ॥
मार—कामदेव, ॥
मारणांत—मरनेका समय ॥
मार्गप्रभावन—धर्म मार्गकी प्रभावना ॥
मार्गहार—मुसाफिर, रस्तेके हारेहुये ॥
मारुत—देवजाति ॥
मारू / मारूथल — बागड़ का देश, निरजल देश ॥
मालती—पुष्प विशेष ॥
मालव—मालवा देश ॥
मित—तोल, अंदाजा ॥
मिथ्यात—झूंठ ॥
मिश्र—मिलाहुवा ॥
मीन—मछली, ॥
मुकर—दर्पन, आइना, शीशा ॥
मुक्ताफल—मोती, ॥
मुंड—खोपरी, मूंडकर ॥
मुद्रा—अंगूठी, छाप, चिन्ह ॥
मुद्रित—छपाहुवा ॥
मुरज—बाजा विशेष ॥
मुष्ट—मुट्ठी, मुक्का ॥
मुसलोपम—मूसलकीहै उपमा जिसकी ॥
मूक—गूंगा ॥
मूढ—जड़ ॥
मूसे—लूटै ॥
मेरू—पहाड़ ॥
मेघकुमार—देवजाति ॥
मैथुन—स्त्री भोग, रति ॥

मोचनी—दूर करनेवाली, उखेड़नेवाली ॥
मोष—मोक्ष, मुक्ति ॥
मोषा—मोतिया पुष्प ॥
मोह—ममत, चाहत, आकुलता ॥
मोहनी—८ कर्म में से १ कर्मका नाम ॥
मौलसरी—वृक्ष विशेष ॥
मृगछाला—हिरनकी खाल ॥
मृगांक—चंद्रमा ॥
मृगेश्वर—सिंह, शेर ॥
मृतक—मराहुवा ॥
मृदु—मुलायम, कोमल, नर्म ॥
मृदंग—बाजा विशेष ॥

य

यथा—जैसे अर्थ में ॥
यथार्थ—ठीक, जैसेका तैसा ॥
यमकगिर—पहाड़ विशेष जो ४ हैं ॥
यश—कीर्ति ॥
यषदेव—यक्षदेव ॥
यज्ञपुरुष—उत्तम पुरुष ॥
यज्ञ—पूजा ॥
याचक—भिखारी, मंगता ॥
युगलया-भोग भूमिया ॥
योग—योग्य, लायक ॥
योतिषी—देवता जाति ॥
योवन—जवानी ॥

र

रंक—दीन, महताज ॥
रंगधरा, रंगभूमि, रंगमही — नाचघर, तमाशेकास्थान, अखाड़ा

रंच-थोड़ा ॥
रक्त—लालरंग ॥
रज—धूल, मिट्टी ॥
रजत-चांदी ॥
रजनी—रात्री ॥
रजनीपति-चंद्रमा ॥
रण—युद्ध, लड़ाई ॥
रत्नधरा—रत्नमई धरती ॥
रत्नकुक्ष—रत्नकोष ॥
रत्नाकर—रत्नग्रह ॥
रति—कामदेव की स्त्री, रचने अर्थ में ॥
रतिपति—कामदेव ॥
रतिवंती—रतियोग स्त्री ॥
रती-भाग, नसीब ॥
रमा—लक्ष्मी ॥
रमणीय-सुंदर, रमणे योग ॥
रयणायर-समुद्र ॥
रवन, रवाना — सोहना, सुंदर ॥
रवि—सूर्य ॥
रस—धातु, स्वाद ॥
रसाल—रसीला, आम ॥
राग—ममत, प्यार ॥
राजग्रिही—१ नगरका नाम ॥
राजपत्र—परवाना, फरमान ॥
राजै-शोभादे ॥
राते-लालहुये ॥
रानो—बड़ो ॥
राम—आत्मा, जीव ॥
राय—राजा ॥
रावण—लंकाके राजाका नाम ॥
रास—समूह, ढेर ॥
रिजु—विमान का नाम ॥

रिपु-बैरी, शत्रु, दुश्मन ॥
रिस—कोप, गुस्सा ॥
रीति—चलन, व्यवहार ॥
रुद्र-महादेव, नरकगामी पुरुष ॥
रुद्रध्यान-खोटाध्यान ॥
रुधिर-लहू, खून ॥
रूपाचल—पहाड़ का नाम ॥
रेण—चूर, बुरादा, चूर्ण ॥
रोम—रूंगट, बाल ॥
रोमांचित-आनंद में रूंगटे खड़ाहोना ॥
रोस—क्रोध, गुस्सा ॥
रोहिणि-नक्षत्र, तारा, स्त्री विशेष ॥

ल

लंघ—लंघना, उलंघना ॥
लंबमान—लटकते हुये ॥
लगार—पांति, कतार, थोड़ासाभी ॥
लघु } छोटा ॥
लघू }
लता—बेल ॥
लँपटी—लबाड़, झूठा ॥
लवधि—प्राप्ति ॥
ललित-सुंदर, प्यारा ॥
लवलेश—थोड़ा, जरासा ॥
लसैं—शोभादें ॥
लहै—देखै, पावै ॥
लक्ष्मी—स्त्री, देवीकानाम जिसका कमल में बासा है, धन, दौलत, मोक्ष ॥
लक्षित—लक्षणवान ॥
लाभ—फायदा ॥
लार—साथ, हमराह, प्यार ॥
लावंती-सुंदरी, नमकीन स्त्री, रूपवतीस्त्री ॥
लीन-डूबाहुवा, मह्व ॥
लीला—पतिसंग स्त्रियोंका खेलकूद ॥
लीलावती—खिलारस्त्री, हंसमुख स्त्री ॥
लुब्ध—लोभी, लालची ॥
लेश-थोड़ा, जरा ॥
लेश्या—योग कषाय सहित प्रणामों की अवस्था ॥
लोकोत्तर—लोकसे बाहर ॥
लोकनाड़ी—नाली ॥
लोकान्तिक—स्वर्गस्थान विशेष ॥
लोचन—आंख, लोचना, उखड़ना ॥
लोय-लोक, लोग ॥
लोयन—आंख ॥
लोहित—लाल, कठोर ॥

व

वंड } वाले अर्थ में, यथा बलवंड बलवंत
वंत } बलवाला ॥
वत्सल—प्यार, प्रीत ॥
वरी—ब्याही ॥
वलि—सदका ॥
वहिरंग—बाहरके ॥
वहिरलापिका—१ प्रकारकी पहेली ॥
वाट—रस्ता ॥
वात—पवन, हवा ॥
वापिका—बावड़ी ॥
व्याल—सर्प, हाथी ॥
व्याधि—उपद्रव ॥
व्याकर्ण-वाक्यवा शब्दका स्पष्ट करने वालाशास्त्र ॥
विकसना-खिलना ॥

विकट-कठोर, खोटा ॥
विक्रया-अनेक शरीर धारण करना ॥
विगत—दूर करने वाली ॥
विख्यात-प्रत्यक्ष, फैला ॥
विगूचै—रोकै, बांधै ॥
विघन-उपद्रव, विघन ॥
विजै—फतह ॥
विंजन-छोटेचिन्हतिल आदि ॥
विथा-दुःष, पीड़ा ॥
वितरदेव-१ जातिके देव ॥
विजयारध—पर्वत विशेष ॥
विदश—दिशा ॥
विदेह—क्षेत्र विशेष ॥
विद्युत—बिजली ॥
विद्रुम— लालमूंगा ॥
विध्य—विंधाहुवा ॥
वित्य—धन ॥
विध्वंश—नासकरै ॥
विधान—चलन, व्यवहार ॥
विनय-अदब, बड़ाई ॥
बिपीत—उलटी ॥
विपाक—फल, नतीजा ॥
विपुल—ऊँचा ॥
विप्र—ब्राह्मन ॥
बिंब—प्रतिमा, मूर्ति ॥
बिबिध—नाना प्रकार ॥
बिभंगा—मिथ्याज्ञान ॥
बिभूति—संपदा ॥
विमला—पार्श्वनाथस्वामी की पालकी का नाम ॥
विमुख—विरुध, फिराहुवा ॥
विराधै—मारै, हतै, विरोध बैरभाव ॥
बिरतंत—किस्सा, कहानी, कहना ॥
विरचन—मुछेद होना, जुदाहोना ॥
बिरद—कीर्ति, यश, प्रशंसा ॥
विललाय / विलाप — दुःख याद कर रोना ॥
विव्हल—आकुलहोना, बेकरारहोना ॥
विशेष—खास, बहुत ॥
विश्व—संपूर्ण, संसार ॥
विश्वाश—यकीन, निश्चय ॥
विष—जहर ॥
विषधर—सर्प ॥
विषम—क्रूर, कठोर ॥
विषनी—विषन सेनेवाला ॥
विसरूँ—भूलूं, छोड़ूं ॥
विसमय—आश्चर्जमान होना ॥
विस्तर—फैलाव ॥
विहसाय—हंसना ॥
विहन—मारने वाला ॥
बिहार—चलना ॥
विहरमान—चलते हुए ॥
वीथी—गली, कूचा ॥
वीरज—पराक्रम ॥
वृज—गौशाला ॥
वृन्द—समूह, झुंड ॥
व्यय—नाश ॥
वृषभसेन—आदनाथ स्वामी के प्रधान गण धर का नाम ॥
वृषभ—बैल ॥
वृषभाचल—पहाड़ विशेष ॥
वेताल—यक्ष, प्रेतजाती ॥
वेगवती—नदी ॥
वैडुरय—१प्रकार की मणी नीलरंग ॥
वैतरनी—नर्क की नदी ॥
वैरूप—शरण, सहारा, क्रोध, विरोध रहित

व्योम—आकाश ॥

श

शक्ति—सामर्थता, बल ॥
शम्बर—दैत्य ॥
शशि—चन्द्रमा ॥
शक्र—इन्द्र ॥
शची—इंद्राणी ॥
शल्य—फांस, कांटा ॥
शलाका—महान पुरुष जो ६३ हैं ॥
शत्रु—बैरी ॥
शंसनो—प्रशंसित, भला, सुन्दर ॥
श्रवण—कान ॥
श्रवै—बहै ॥
शाकिनि—पिशाच विशेष, यक्षणी ॥
शिथल—सुस्त, कमज़ोर ॥
शिखर—चोटी ॥
शिव—मोक्ष, कल्याण ॥
शिशु—बालक, बच्चा ॥
शिल्पी—राज, मेमार, संगतराश ॥
शिल्पकला—मेमारी विद्या ॥
शिला—पत्थर की चटान ॥
शील—उत्तमस्वभाव, परस्त्रीभोग त्याग ॥
श्रीवत्स—१ चिन्ह का नाम जो महान पुरुषों की छातीपर होता है ॥
श्रीगृह—कोष, खज़ाना ॥
श्रीवर—लक्ष्मीमान, धनवान ॥
श्रीवृक्ष—कल्पवृक्ष ॥
शुचि—निर्मल, पाक, साफ़ ॥
शुक्ल—सफ़ेद, शुक्लध्यान ॥
श्रुति—शास्त्र, धर्मशास्त्र ॥
श्रेय—आनंद, कल्यान ॥
श्रेणी—सीढ़ी, ज़ीना ॥
शैल—पहाड़ ॥
शोणित—लहू ॥

ष

षंडै—तोड़ै ॥
षंदरूप—परमाणु रूप ॥
षंद—परमानुका समूह ॥
षग—आकाशगामी, पक्षी, विद्याधर ॥
षांडा—तलवार, शस्त्र ॥
षीर—दूध ॥
षीणो—क्षीणो ॥
षैकाल—क्षैकाल ॥

स

संकेत—इशारा, संक्षेप ॥
संष—बाजा विशेष ॥
संख्या—गिणती ॥
संग्राम—लड़ाई ॥
संगी—साथी ॥
संगीत—राग, गीत ॥
संघ-गोह, फिरका ॥
संघाती—साथी ॥
संघार—मारना ॥
संचित-इकट्ठे हुवे ॥
संजम-व्रत, इंद्रीदमन ॥
संठान—सूरत, मूर्ति ॥
संपा—बिजली ॥
संवतसर—वर्ष, साल ॥
संपजै— प्राप्तिहो, मिलै ॥
संगलेशण—मिलने अर्थ में ॥

संबर—आतेहुए कर्मों की रोक ॥
संपति—दौलत, हसमत ॥
संक्षेप—कम करके ॥
सकंटक—कांटो वाला ॥
सकटाकृत—गाड़ी के आकार ॥
सखा—मित्र, दोस्त ॥
सघन—घिनके, मिले मिले ॥
सची—इंद्राणी ॥
सठ–मूर्ख ॥
सदाफल–वृक्ष विशेष ॥
सनतकुमार–देवजाती ॥
सन्यास—दिगंबर धर्म ॥
समचेत—शुद्ध चित ॥
समप्पै–इकट्ठा करै, जमाकरै ॥
संतुल—बराबर ॥
समाज—गोट, सभा ॥
समान–बराबर, तुल्य ॥
समाधान—सबूत ॥
समाप–धरै ॥
समास—मिलाप, जोड़ ॥
समिति—जैन शास्त्र में ५ हैं ॥
समीप—पास, नजदीक ॥
समुदाय—समूह, मजमुआ ॥
समेदाचल—समेद सिखर का पहाड़ ॥
समोसरण—बैरभाव को छोड़कर जिस स्थान में जीव बैठते हैं अर्थात् तिर्थंकरों की सभा ॥
सयन—सोना ॥
सयाल—गीदड़ पशु ॥
सयोग—योगसंयुक्त केवली ॥
सरवर—तालाव, ताल ॥
सर | शर } तीर, वाण ॥
सरल—सीधा ॥
सरस—अति, ज्यादा ॥
सरिता—नदी ॥
सल्लकी—वृक्ष विशेष ॥
सरोज—कमल ॥
सलिल—जल, पानी ॥
ससक—सूसापशु, सूस ॥
सहज—स्वभाव ॥
सहस—हजार ॥
सहोदर—छोटाभाई ॥
सह—ठीक, मुनासिब ॥
स्वमेव—आपही आप ॥
स्वजन—अपने लोग ॥
स्वयंगसिद्ध—आपही आप बना ॥
साख—गवाही ॥
सागर—समुद्र, १ कालकी गिनती का नाम
सांघर्णी—घिणकी, मिलीजुली ॥
साज—सामान, बाजा ॥
साता—सुख, आनंद ॥
सायर—सागर, समुद्र ॥
सार—उत्तम, मूल ॥
सारदा—सरस्वती ॥
सारस्वत—व्याकरण के १ ग्रन्थका नाम ॥
सार्थवाही—व्योपारियोंके समूह का प्रधान पुरुष ॥
सावधान—चौकन्ना, होशियार ॥
सावद्य—पापसंयुक्त काम ॥
सासन—शास्त्र, आज्ञा ॥
सासते—सदीव ॥
सासऊसास—स्वांस, दम ॥
स्वातजल—कन्याके सूरज में जो जल बरसै
स्वान—कूकर, कुत्ता ॥
स्याद—कथंचित, कहना ॥

स्याल—गीदड़ पशु ॥
सिकताथल—रेतली धरती ॥
सिथल—आलसी ॥
सिंघाटक—शेरकी अटकाने वाली ॥
सिल्ली—भवरा जंतु ॥
सीरी—साझी, शरीक ॥
सीता } सीतो } २नदियों के नाम ॥
सीस } शीस } सिर, मूड़, कपाल ॥
सु—उत्तम अर्थ में ॥
सुकमाल—कोमल, मुलायम ॥
सुजान—भला, अच्छा आदमी ॥
सुछंद—मनमौजी, आज़ाद ॥
सुत—बेटा, पुत्र ॥
सुदर्शन—पहाड़ विशेष, चक्र विशेष ॥
सुधारस—अमृत ॥
सुपथ—उत्तम पंथ ॥
सुंडाल—हाथी ॥
सुन्य—बिंदु, खाली, पोथ ॥
सुमेर } सुमेद } शिषरजीका पहाड़ ॥
सुरतरु—कल्पवृक्ष ॥
सुरभि—सुगंधित ॥
सुरम्य—उत्तम, भला, १ देशका नाम ॥
सुभ्र—नरक ॥
सुलभ—आसान, सहज ॥
सुमन—फूल, पुष्प ॥
सुहाग—सुभाग्य ॥
सुहान—भला, उत्तम ॥
सुदंसनो—सुदर्शनमेरू ॥
स्वयंभू—पार्श्वनाथ स्वामीके गणधरकानाम
सुभिक्ष—आकालका विरोधीशब्द,समा ॥
सूल—कांटा, दर्द ॥
सुप्रतीक—ठौणा, साथिया, भला ॥
सूचक—विवर्ण,तफसील ॥
सूर—सूरबीर, योधा ॥
सूरि—आचारियोंकी १ पदवी ॥
सेना—फौज ॥
सेनी—मनवाला जीव ॥
सैनासन—पैरपसार चितसोना ॥
सोम—शीतल, चंद्रमा ॥
सोपान—सीढी, जीना ॥
सोहना—सौहजनावृक्ष ॥

ह

हंस—जीव, पक्षी विशेष ॥
हट—जिद ॥
हट्ट—हाट, दुकान ॥
हस्ती—हाथी ॥
हनहन—मारमार ॥
हरि—इंद्र ॥
हा—येशब्द शोककेस्थान में बोलाजाता है॥
हाटक—सोना धातु ॥
हिंगोट—वृक्षविशेष ॥
हिम—सरदी ॥
हिमगिर—हिमालापहाड़ ॥
हिंसानन्दी—हिंसामें आनंदमाननेवाला ॥
हींस—वृक्षविशेष ॥
हुंडक—बेडौल शरीर ॥
हुलास—आनंद ॥
हेठ—तुच्छ, नीच ॥
हेत—कारण, सबब ॥
हेम—सोनाधातु ॥

हेरैं–देखैं ॥
होम–अग्निमें घृतडाल मंत्र पढ स्थान शुद्ध करना ॥
हीराहार—उत्तममणि ॥

त्र

त्रास—दुष, तकलीफ ॥
त्रिलोकप्रज्ञप्ति—१ ग्रंथकानाम ॥
त्रिस—२ इंद्रीजीव ॥

ज्ञ

ज्ञान—जैनशास्त्रमें ५ हैं, मति १ श्रुति २ अवधि ३ मनपर्यय ४ केवल ५ ॥

—:०:—

इति भाषापार्श्वपुराणशब्दार्थकोष संपूर्णम् ॥

शुद्धाशुद्धपत्रश्रीपार्श्वपुराणभाषाछंदबद्ध

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१३	सिद्ध	सिद्धि	८२	१४	हर	उर
७	१७	लोकान्तर	लोकोत्तर	८७	२	रत्नात्रय	रत्नत्रय
११	११	शौकीन	सौकन	८७	७	तुर्ये	तुरिय
१३	१०	रतिमुमुर	रतिमुमुरे	९३	१५	कोविदा	कोविद
१९	१	नहिलोय	नलोय	९७	१६	आकप	आकार
२१	८	सोभवन्त	शोभवन्त	१०३	११	तुरंगनि	तरंगनि
३७	१	समर्पै	समपै	१०४	१९	नाम	बाम
४१	७	सन्त	सत्त	१०६	४	त्रिवभुन	त्रिभुवन
४४	२	कोइ	को	११२	३	पंचनन	पंचानन
४७	४	ताही तैतैं	ताही तैते	११४	५	आनन्द	आनँद
४८	११	विषलै	विषैल	११७	१४	आनन्द	आनँद
४९	१	तय	तपै	११९	२०	गड़भाग	बड़भाग
५६	१२	पाद	पार	१२७	१०	डालैं	ढालैं
६८	२	जोयांचत	ज्योंयाचत	१३७	१७	छरा	धरा
८१	१	बाँण	बाण	१४०	२१	अन्त	आदि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४३	१४	सामे	सांम	२०७	२	दहेया	दहो
१४६	१	कतर	करत	२०८	२	बिरच्ये	बिरचे
१४९	११	समुप	समुद	२०९	३	रसरच्ये	रसरचे
१५८	३	यसा	यस्य	२१०	१२	धनते	तेधन
१६४	११	चुशा	चुथ	२१३	९	पम	यम
१६७	८	मा	त	२१६	४	पीछी	पींची
१८[illegible]	१६	तिथि	थिति	२१६	७	मोक्त	मुक्त
१८७	६	सैनी	सेनी	२१६	१०	पीछी	पींची
१८८	१६	अमभूत	अमद्भुत	२१९	३	परकै	परके
१९४	२	असैनी	असेनी	२२२	१४	करी	करि
१[illegible]४	३	सैनी	सेनी	२२३	१४	प्रवीन	परवीन
१९४	९	देह	दहे	२२७	१०	सोल	सोलह
२००	१६	काली	काई	२३४	७	अछर	अक्षर
२०१	१४	आकाश	अवकाश	२३९	११	देव	देउ
२०७	२	कहेया	कहो			इति	

विवर बनारसीदासजी का संस्कृत सुक्तमुक्तावली सोमप्रभाचार्य्यकृत से उल्थाकराहुवाशुद्धकरकोषसहित जिल्ददार।~) बिनाजिल्द।)

(४) आलोचनापाठ भाषा छंदबंद जिसका प्रतिदिन पाठ मनुष्य को अपनी पिछली खोटीकृत यादकराकर आगे को खोटे कामों से बचाता है मोल ~)

(५) छहढाला भाषा पंडित दौलतराम जी लशकर गवालियर निवासी कृत जिसको सरलार्थ टीका वा शब्दार्थ कोष से भूषित कर छपवाया है अवश्य देखो जिल्द सहित ।=) बिनाजिल्द ।~)

(६) जिनगुणमुक्तावली भाषा भूधरदासजीकृत कोष सहित ~)

(७) पार्श्वनाथ स्तुति अर्थात् भाषा कल्याण मंदिर बनारसीदासजी कृत कोष सहित ~)॥

(८) जिनदेव स्तुति अर्थात भाषा एकीभाव भूधरदासजी कृत कोष सहित ~)॥

(९)जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्र अर्थात् भाषा भूपाळ चौवीसी भूधरदासकृतकोष सहित ~)॥

(१०) श्रीआदिनाथ स्तुति अर्थात भाषा भक्तामर हेमराज कृत कोष सहित छापाटाइप मोल =)

(११) प्रतिमाचालीसी भाषा द्यानतराय कृत जिसमेंप्रतिमापूजन सिद्धकियाहैमोल)॥

(१२) पार्श्वपुराण भाषा छंदबद्ध भूधरदासजी कृत टिप्पण वा कोष सहित मोल १)—जिल्द स० १॥)

(२) जिनमतकी पुस्तक जो बंबई आदि नगरों से विक्रयार्थ मगाई गई हैं

(१) चंद्रप्रभकाव्य संस्कृत वीरनंदी विरचित उत्कृष्ट काव्य है १)

(२) धर्मशर्माभ्युदय काव्य महाकविश्री हरिचंद्रविरचित अतिकठिनकाव्यहै मोल १।)

(३) नेमदूत काव्य संकृत विक्रमकवि विरचित मेघदूत काव्य के जोड़े में अति सुंदर काव्य है कविने प्रतिश्लोक मेघदूत कविकालीदास रचित का प्रति श्लोक एक चरण के साथ तीन चरण अपने बनाकर रचित श्लोकपूराकियाहै देखनेयोग्यहैमोल।)

(४) शृंगारवैराग्य तरंगिणी संस्कृत सोमप्रभाचार्य्य कृत संस्कृत टीका सहित मोल =)

(५) तत्वार्थसूत्र संस्कृत १० अध्याई अर्थ प्रकाशनी भाषा टीका सदासुखजी कृत सहित मोल १)

(६) तत्वार्थसूत्र मूल संस्कृत =)वा ~)

(७) रत्नकरंडश्रावकाचार संस्कृत समंत भद्रस्वामी रचित भाषा टीका सदासुखजीकृत बड़ाउत्तम महान ग्रंथ है बड़े मोटे टाइप में छपा है मोल ५)

(८) रत्नकरंडश्रावकाचार संस्कृत समंत भद्रस्वामी रचित छोटी भाषा टीका सहित मोल ।~)

(९) पंचस्तोत्र संस्कृत—भक्तामर १ कल्याण मंदिर २ एकीभाव ३ विषापहार ४ भूपालचतुर्विंशतका ५ मोल ।~)

(१०) भक्तामर संस्कृत मानतुंगाचार्य्य रचित संस्कृत टीका सहित वा भाषा भक्तामर हेमराज कृत बारागनियों में भक्तामर जिल्द सहित मोल ॥=)

(११) कल्याणमंदिर संस्कृत कुमुदचंद्राचार्य रचित संस्कृत टीका सहित वा भाषा कल्याणमंदिर कवि बनारसीदासजी कृत मोल ॥)

[१२] कृयाकोष भाषा छंदबद्ध किशन सिंह कृत जिसमे ५३ क्रियाश्रावग का कथन है मोल १) जिल्द सहित ॥

[१३] बारहमासा संग्रह भाषा जिसमें ४ बारहमासे हैं यती नैनसुखदासजी कृत बड़े ललित बारहमासे हैं मोल =)॥

[१४] मुनिराज बारहमासा भाषा जोतिषरत्न जैनी जियालालजी कृत मोल -)

[१५] प्रातसमय मंगलपाठ भाषा जोतिषरत्न जैनी जियालालजी कृत)॥

[१६] सुगुरुशतक भाषा जिनदास जी कृत मोल ।)

[१७] सम्यकज्ञानदीपिका भाषा धर्मदास जी छुल्लक कृत मोल ।॥)

[१८] भक्तामर संस्कृत मोल)॥

[१९] जैनव्रतकथा छंदबद्ध मोल ।=)

[२०] पंच मंगल भाषा रूपचंदजी कृत मोल -)।

[२१] भजन संग्रह भाषा मोल -)॥

[२२] ज्ञानानंद लावनी पहलाभाग ।) दूसरा ॥)

[२३] धर्मअमृत सारभाषा मोल ॥=)

[२४] सप्तम गुच्छक जिसमें २१ स्तोत्र संस्कृत हैं १=)

[२५] भाषा पूजासंग्रह मो० ।-)

[२६] शीलव्रत कथा बचनका मोल ।)

[२७] मोक्षमार्ग प्रकाश भाषा टोडरमल कृत ३)

[२८] द्रव्य संग्रह संस्कृत मोल ।)

[२९] नवकार मंत्र रंगीन ॥) सादा =)

[३०] गिरनार, शिषर, आबू—ढाईदीप—जंबूदीप ज्ञानचौसर—नक्से रंगीन फी ।-)

[३१] विषापहार भाषा मोल)॥

[३२] दश आरती मो०)॥

[१] जैनियोंकी बनाई भाषा पुस्तक वा संस्कृत जो जैन पाठशालाओं में पढ़ाई जाती हैं और देखने योग्य हैं॥

[१] कातंत्ररूपमाला व्याकरण जिसके सूत्र जैन आचार्य्य मचक्रदेव रचित हैं और श्रीमति भावसेन त्रिविद्यदेव ने प्रकृया रचीहै मोल १-)

[२] लिंगबोध संस्कृत पन्नालालजी रचित जिसमें लिंगका बोधहोताहै मो०=)

[३] बालमित्रपहलाभाग=) दूसरा।-)

[४] जैनप्रथमपुस्तक ।) दूसराभाग ।)

[५] बालबोधसंधिज्ञान मोल =)

[६] शिक्षापत्री उल्था पंदनामा सादी मोल =)

[७] पुष्पोपबन उल्था गुलिस्तांसादी मोल १)

[८] अंधेके हाथ बटेर भाषा मो० =)

[९] चमत्कारका भाषा मोल =)

[१०] बनिताबोधनी भाषा मो० =)

[११] बाईसपरीसह भाषा जोगीरासा सहित -)॥

[१२] दयानंद छलकपट दर्पन जियालालजी रचित मोल ।)

[१३] कुसंग सूत्र भाषा मो० -)

इतिशुभम् ॥